शिक्षा-सागर

जीवन सम्बन्धी शिक्षाओं का सकलन पत्रों में वर्णित
पिता की ओर से पुत्र को निर्देशित

प्रताबदास नथरमल मन्घनानी

आदर्श प्रकाशन
16/65 आदर्श मौहल्ला
पुरानी मन्डी अजमेर
305001 राजस्थान

© प्रतापदास नयरमल मघनानी

प्रकाशक
सिन्धी पब्लिशर्स एसोसियेशन आफ इण्डिया
अजमेर व बम्बई

वितरक
आदर्श प्रकाशन
१६/६५ आदर्श मोहल्ला पुरानी मण्डी अजमेर—३०५००१ राजस्थान

मूल्य : बारह रुपये

प्रथम संस्करण 1000
1979

मुद्रक
रामदेव प्रकाश यादव
स्वास्तिक प्रिन्टर्स, अजमेर

अन्तराष्ट्रीय बालवय के लिये अमर कृति

प्राक्कथन

पश्चिमी सभ्यता का साहित्य, चित्रपट के अनुचित प्रभाव के नीचे पथवि चलित हुये भारतीय सभ्यता व संस्कृति से अनभिज्ञ आज के नवयुवक जो भविष्य के पिता है उनको पथ विचलन की राह से बचाना आज के समय की मुख्य पुकार है जिस देश व जाति के कट्टर अनुयायियो का ध्यान दिलाया जाना आवश्यक है।

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये लेखक व प्रकाशक भी अपनी समुचित व श्रेष्ठ भूमिका निभा सकते है नव युवको को सही राह पर लाकर उनका सही पथ प्रदर्शन कर सकते हैं जिस सरल विधि से इसे समझाया गया है इससे नवयुवको को अच्छा साहित्य तो उपलब्ध होगा ही पर उनका मनोरजन भी होगा। मनोरजन पक्ष को दृढ बनाने के लिये लोक-कहावता व घटनाओ का वर्णन किया गया है इसलिये अपने बचे हुए समय व शक्ति का त्रुटि पूर्ण उपयोग करने के स्थान पर स्वय को सभी शिक्षादायक पुस्तक पढने मे उन्हें व्यस्त कर देगी, ऐसी शिक्षा के साधन से नवयुवको के दृष्टिकोण मे परिवर्तन लाया जा सकता है वे फिर स्वय अच्छे बुरे का अन्तर प्रतीत (आभास) कर सकेंगे।

शिक्षा सागर का प्रकाशन हम इसी आशा के साथ कर रहे है ताकि यह प्रकाश स्तम्भ बनकर नवयुवको का सही पथ प्रदर्शन करेगी। मेरे लेखक मित्रो ने तो इसे विद्यालयो और महाविद्यालयो के सामाजिक शिक्षा म पाठ्यक्रम के उपयुक्त मानकर, क्या ही अच्छा होता अगर ऐसा हो सकता

शिक्षा सागर वह पथ-प्रदर्शक है जो निश्चित रूप से नवयुवको का पथ प्रदर्शन तो करेगी ही काश! आज के माता-पिता शिक्षक घरो और स्कूलो म इसे पढाकर पूरा पूरा लाभ ले सकें।

शिक्षा सागर भेंट करने के लिये उपयुक्त शिक्षाओ का सागर है इसे अपने मित्रो को उनके जन्म दिन, विवाह उत्सवों आदि के अवसर पर भेंट कर अपने और अधिक निकट लाकर मित्रता व प्रगाढ़ स्नेह को दृढ बनाया जा सकता है इसी कामना के साथ

प्रतापदास नथमल म घनानी

लेखक के प्रति

श्री युत प्रताबराम नयरमल मघनानी उर्फ प्रेम ग्रावारा "प्रताव" सिन्धी भाषा के मूल लेखक हैं। हिन्दी साहित्य में भी ग्रापकी ग्रभिरुचि है इससे पूर्व भी ग्रापकी कई ग्रन्य रचनाएं सिन्धी व हिन्दी में प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनका हिन्दी क्षेत्र में भी काफी प्रचार प्रसार हुग्रा है। विशेषकर त्याग ने तो मुझे प्रभावित किया है जो निम देह सामाजिक सम्बन्धों की विजय पराजय का मौलिक प्रतीक रही हैं।

पर 'शिक्षा-सागर' को तो मैंने ग्रौर मेरे लेखक मित्रों ने कुछ ग्रधिक ही शिक्षाप्रद माना है। यह ग्रापकी रचना केवल नवयुवकों के लिये ही उपयोगी सिद्ध नहीं होगी ग्रपितु प्रौढ समाज भी उसके ग्रध्ययन से लाभान्वित होगा ऐसा स्पष्ट है ऐसा विश्वास है लेखक ने जीवन की व्यावहारिक शिक्षा इस छोटी सी पुस्तक में वर्णित की है।

सिन्धी भाषा के होते हुए भी ग्रापका हिन्दी लेखन सराहनीय है। दो भाषाग्रों का ज्ञान लेखक के लिये उपयोगी सिद्ध होता है। यह हर्ष ग्रौर सन्तोष का विषय है कि ग्रब हिन्दी का विस्तार जिन लेखकों के माध्यम से हो रहा है उनमें से ग्रधिकांश दूसरी भाषाग्रों के विद्वान रहे हैं। यह सब विदित है कि भारत का विभाजन होने से पूर्व सिन्ध प्रान्त की भाषा सीमा-बद्ध थी परन्तु विभाजन के बाद उसका विस्तार हुग्रा। उस भाषा की विशेषताएं हिन्दी को प्राप्त हुई ग्रौर हिन्दी का गौरव बढाने में सिन्धी लेखकों का प्रयास सराहनीय रहा।

श्री युत 'प्रताब' की यह प्रस्तुत कृति शिक्षा-सागर है ही "शिक्षा का सागर' जिसकी हर बूंद में शिक्षा ही शिक्षा है यह सामाजिक शिक्षा के पाठ्यक्रम के उपयुक्त विषय हो सकता है। ग्रगर ऐसा हो सके तो लेखक के परिश्रम का व उसके ग्रनुभवों का पूर्ण लाभ सबको मिल सकेगा, ऐसा विश्वास है कि पथविचलित नवयुवकों को शिक्षा-सागर "प्रकाश स्तम्भ की तरह मार्ग दर्शन कर सकेगा। स्कूल व घर के पुस्तकालय में रखने जैसी यह प्रस्तुत कृति हिन्दी क्षेत्र में ग्रपना उचित स्थान बना सकेगी इसकी ग्रपेक्षा है।

श्री राम शर्मा 'राम'
श्याम नगर लिसोरी गेट मेरठ-2 (उत्तर प्रदेश)

प्रतापदास नथरमल मन्घनानी

क्रम संख्या — पृष्ठ

'जीवन मे सुखी और सफल कैसे बनें'

पिता क पत्र पुत्र को

प्रिय पुत्र

तुमने उस दिन लिखा था कि मैं तुम्हे जीवन म सुखी व सफल होने के लिये कुछ निर्देशन (उचित मार्ग दर्शन) लिखू, तुम्हारा ऐसा सोचना व चाहना बिल्कुल उचित है वास्तव मे हर पिता का यह कर्तव्य है कि अपने अनुभव से अपनी (सन्तान) औलाद को कुछ (उचित मार्ग दर्शन) निर्देशन दे ताकि उनका जीवन सुखी व सफल हो सके।

इस विश्व म हम सब सुख व सफलता के लिये दौड रहे हैं सफलता व सुख दोनो तमाम कम लोगो को प्राप्त होते है पर ये दोनो एक दूसरे से भिन्न (अलग) किस काम के?

बिल्कुल थोडे लोग हैं जो सफल होते हुए भी सुखी है।

कुछ लोग अपनी सफलता (बिल्कुल) अत्यन्त ही महँगे भाव से खरीदते हैं यानी कि वे अपना सुख व खुशिया खोकर धन के पीछे दौडते हैं। पर प्रश्न यह है कि इतनी बडी कीमत देने के सिवाय सफलता नहीं प्राप्त की जा सकती क्या? मेरा उत्तर है कि बिल्कुल प्राप्त की जा सकेगी अगर हम कुछ वास्तविकताओ को समझने की कोशिश करेंगे। सुखी रहना हम मे स हर मनुष्य की चाहना है और यह चाहना (चाहत) पूरे विश्व की आशा है दुर्भाग्य के कारण कुछ लोग जीवन के लम्बे समय तक गलतियाँ करते रहते हैं। पर जब उनके जीवन के दिन समाप्त होने को होते हैं तब मुश्किल से अपनी गलतियो को अनुभव करते हैं तब ही उन्हें मालूम पडता है कि सुखी रहना किसे कहते हैं। पर कुछ ऐसे भी हैं जो बिल्कुल महसूस भी नहीं कर सकते। सभी लोग सुखी व सफल हो सकते हैं अगर उनके विचारो का झुकाव ठीक होगा और ऐसा प्रयास वे करते रहेंगे। सुख व सफलता होते हैं सिर्फ परिणाम, और वे परिणाम सिर्फ कारणवश उत्पन्न होते हैं। कोई भी बगैर कारणो से परिणाम प्राप्त नहीं कर सकेगा।

सफलता रखी जा सकती है उसम कि (इन्सान/मनुष्य) व्यक्ति की गाँठ मे क्या है और सुख देखा जा सकता है एसे कि उसके दिल म किस कदर निश्चितता है। व्यक्ति क पास मौजूद क्या है और वह स्वय को कमा समझता है इन दोनो बाता से मालूम किया जा सकता है कि व्यक्ति किस सीमा तक सफल व सुखी है। इस दुनियाँ म जो कुछ है वह सब दिमाग) मस्तिष्क के विचार हैं। और हम विचारो के जमान म चल रहे हैं। हर बात (सब बातें) पहले सिफ एक विचार था इसलिय सफलता व सुख सिफ एक विचार था इसलिय सफलता व सुख सिफ तब ही प्राप्त हो सकगा जब व्यक्ति के विचार ठीक व पूरे होंगे। जितना ही व्यक्ति बडा उतना ही उस पर उत्तरदायित्व व बोझ अधिक और यह वास्तविकता कभी भी भूलनें जमी नही।

सफलता खतरनाक भी है इसम अगर कुछ शक समझो तो जाकर धनवानो की बनवो म देखो और उनके चेहरा पर गौर से नजर डालकर देखो कस न उनके चेहरा पर सिलवटें पडी हैं एक अमरीकन विद्वान Mr *Andrew Carnigie का कहना है कि धनवान लाग मुश्किल स मुस्कराते* दिखाई देंगे।' धनवानो क घरो म जाकर देखो उनक घरो मे वह घरेलू जीवन नही जो सचमुच होना चाहिये क्योकि इन धनवाना न धन तो काफी (सग्रह) इकट्ठा किया है पर स्वय को सुखी रखने की कला का हुनर (गुण) अभी तक प्राप्त नही किया है।

कोई भी पैसा कमा नही सकेगा जब तक स्वय उसने कुछ दिया नही है पर बहुत लोग बहुत अधिक दे चुके होते हैं बहुत लोग तो धन प्राप्त करने के लिए स्वय को आत्म समपण तक कर देत हैं एस व्यक्ति कितनी भारी भूल कर रहे हैं।

धनवान व्यक्ति जहाँ कहीं अप्रिय हैं इसका कारण सिफ यह है कि वे धन का नशा (पाकर) रखकर साधारण व्यक्ति स पूण सहानुभूति नही रखते जितना ही उन्ह धन अधिक उतनी हा सहानुभूति कम और यही सहानुभूति व साधारण व्यक्ति स खो बठते है जो निहायत ही बडी भूल है।

धन कमाकर स्वय को दुर्विचारों (विकारों) से कैसे बचायें धन कमाने के साथ साथ मित्र व हमदर्द कम बनायें मनुष्य से सुन्दर व्यवहार कर धन कैसे कमायें ये सब समस्याय हैं। जिनका समाधान होना चाहिये और प्रयत्न करने से ऐसी समस्याओं का समाधान (हल) हो सकेगा। दुनिया मे सुख व दुःखी का कारण सिर्फ यह है कि हमने सफलता को और सुख को एक दूसरे से भिन्न {(अलग/जुदा) मानते हैं} कर दिया है इन दोनो का एक दूसरे से घनिष्ट सम्बन्ध है और तुम अच्छी तरह मालूम कर सकोगे कि ये एक ही तस्वीर के दो (दिशायें) तरफ हैं और हम मे से कुछ ऐसे हैं जो दोनो मे से एक को चाहना रखते है कुछ चाहते है कि हम सफल हो, कुछ लोग यह चाहते हैं कि सुखी जीवन बितायें। पर बहुत कम लोगों मे यह बुद्धिमता व चाहना है कि हम दोनो प्राप्त करें।

जीवन मे मुख्य बात जो सीखनी है कि रहन सहन कैसा रखें और यह सीखना साधारण बात नही और ऐसा ही सीखने का हर तरह से प्रयास करना चाहिये। कितने ही (कई) लोगो ने दूसरो से बरबाद होने के सिवाय (बिना) खुद को स्वय बरबाद किया है इन्सान की स्वय की बरबादी सबसे ज्यादा दुखदायक है। हम इन्सानों को सिर्फ वह मालूम है कि स्वय को अपने आप दुखी कैसे बनायें और यह बिल्कुल आसान है स्वार्थी होना शीघ्र चिढ जाना, खुद की बढाई करना जरूरत से अधिक खर्च करना कर्जा लेना अधिक भोजन करना साफ हवा न खाना और व्यायाम नही करना बग रह बग रह। ऐसा करने से इन्सान स्वय अपने आप दुखी हो सकता है और हो रहा है।

याद रखो जीवन फूलो की सेज नही है पर इस जान बूझकर झगडे का स्थल भी नही होने देना चाहिये, बहुत लोग अपना जीवन नष्ट कर उस व्यय गवाकर ऐसी इच्छाए कर रहे हैं जिस के लिये उन्हें मालूम है कि वे उन्हें मिलनी मुश्किल हैं उसके लिये दुख प्रकट कर रहे है जो टाला नहीं जा सकता और बातें व ऐसी कर रहे हैं जो वे समझ नही सकते। कोई भी इन्सान अगर दुखी रहता है तो यह — ो भूल समझनी

चाहिये क्योंकि ईश्वर ने हमको दुखी होने के लिये पैदा नहीं किया है य
जीवन हमें एक विचित्र अमूल्य भेंट (तोहफे) और दिया गया है जिस क
ध्यान व देखभाल हमें पूर्ण रूप से करना है और इसी विचित्र व अमूल
भेंट (तोहफे) का पूरा पूरा (फायदा) लाभ लेना है।

इसके बाद मैं तुम्हें अपने पत्रों में यह दिखाता जाऊँगा कि सुख
सफलता दोनों बातें आसानी से कैसे प्राप्त की जा सकती हैं सफल होने क
मुराद सिर्फ यह है कि हम सुखी रहें और सुखी रहने से ही हम सफ
हो सकेंगे।

तुम्हारा पित

"अगर शहद चाहते हो तो शहद के छत्ते को लात न मारो

प्रिय पुत्र, (2)

इससे पहले वाले पत्र में सुख व सफलता के विषय में वर्णन किया था
इसके बाद मैं तुम्हें अलग अलग निर्देशन (उचित मार्ग दर्शन) देता रहूँगा
ताकि तुम सुख व सफलता का जीवन व्यतीत कर सको।

सबसे पहले हिदायत जो मुझे देनी है वह यह है अगर तुम्हें शहद
चाहिये तो शहद (मधुमक्खी) के छत्ते को लात न मारो।'

इससे पहले भी कई बार मैं कहता आ रहा हूँ कि इस दुनिया में हमें
मनुष्यों से ही व्यवहार करना है और ये मनुष्य ही हैं जो कि अगर चाह
तो हमें आसमान पर चढ़ा दें या जमीन पर फेंक दें इसलिये मुझे आव
श्यकता अनुभव हुई कि सबसे पहली उचित हिदायत तुम्हें दूँ कि अगर
शहद चाहते हो तो शहद के छत्ते को लात न मारो यानि कि अगर दुनिया
में विजयी होना चाहते हो तो मनुष्यों से बैर न लो और कोशिश यह करो
कि उनकी अप्रसन्नता मोल न लो।

किसी पर भी व्यर्थ आलोचना या व्यग न करो क्योंकि इन्सानी स्व-भाव अनुसार हर एक मनुष्य अपने आप को सदैव सही (यथार्थ) ही सम-झता आता है कितनी भी भूलें करेगा फिर भी सदैव यही समझता रहगा कि वह कोई भूल नही करता।

अमरीका के सुप्रसिद्ध व्यापारी जान वाना मेकर ने एक बार स्वीकार किया कि तीस साल पहले वह यह पाठ सीखा था कि कभी भी किसी पर आलोचना या व्यग करना बुद्धिमत्ता नही है। समय समय पर ऐसी आलो-चना और व्यग करने मे उसे बहुत बडी हानि हुई थी।

यह एक वास्तविकता है कि सौ म से नियानवे मनुष्य अपने आप को दोषी नही समझत हैं चाह भले उसने कितनी ही भयकर भूलें की हो।

व्यग या व्यथ आलोचना करना बडी भारी भूल है, जिस पर की जाती है वह भी अपने बचाव पक्ष मजबूत करने की कोशिश करता है बेढगी आलोचना करना खतरनाक है जो दूसरे के मान सम्मान पर चोट कर घाव बनाती है इसलिय यह स्वाभाविक है कि उसकी अप्रसन्नता मोल लनी पडेगी।

आलोचना के परिणामो का अगर सही रूप से अध्ययन किया जाय तो इतिहास म असख्यों उदाहरण मिलेंगे जिससे प्रमाणित है कि आलोचना या व्यग करने से कितनी भारी हानि हुई है इसी आलोचना ने कइ घरो म झगडे पैदाकर और कईयो को बरबाद किया हागा।

यही आलोचना हम वापसी मे मिलती है महसूस करो कि जिस पर तुम आलोचना करना चाहते हो वह जो स्वय को वास्तव में सही मानकर आग क्या करेगा ? अवश्य तुम्हारी आलोचना करने के कारण वापसी मे तुम्हारी निन्दा और तुममे दोष व कमिया निकालने की कोशिश करेगा।

अमरीकन राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की एक प्रसिद्ध कहावत याद करो कि किसी के भी दोष म ढूढो, ऐसा न हो कि दूसरे तुम्हारे दोष ढूढे।'

'Judge not that ye be not Judged'

अगर तुम्हें यह ध्यान म आए कि कोई मनुष्य है और तुम्हारी मरजी हो कि कोशिश कर उस सुधारू तो सबसे पहले मैं यह सलाह तुम्हे द कि ऐसी कोशिश सबसे पहले तुम अपने आप पर आजमाओ बग र किसी स्वार्थ के सबसे पहले अपने आप का निर्माण करने की कोशिश करो यह कोशिश तुम्हे बहुत लाभ देगी दूसरे पर न आजमाकर, अगर दूसरे को सुधारने की चाहोगे तो प्रसिद्ध लेखक ब्राऊनिंग ने यह कहा है।

When man s fight begins within himself he is worth Something

यानि कि जब आत्म परीक्षा अन्तर म शुरू होती है तब ही इसान का कुछ मूल्य हो सकता है। दूसरे को पूर्ण बनाने की कोशिश करो चीनी (फिलासाफर) दार्शनिक की कहावत है कि —

Do not Complain about the Snow on your neighbour s roof When your own doorstep is unclean '

यानि पडासियो की छत पर पडी बर्फ का शिकायत न करो जब कि स्वय तुम्हारा घर का आगन ग दा है।

अगर चाहो कि सब की नाराजगी सिर पर मोल न लू तो मैं यह सलाह तुम्हे दू कि दूसरो पर डक मारना ब द करो यानि दूसरो पर व्यग और आलोचना करना छोड दो। आम साधारण से सम्पर्क म आने से पहले यह समझ लो कि सब लोग अपने स्वभाव के बस म है फिर उनका क्या दोष ?

कुछ भी आलोचना एक चि गारी समान है जो कभी भी बड़े आग के शोले जला सकती है।

एक प्रसिद्ध मनुष्य से पूछा गया कि उसकी इतनी बडी सफलता का रहस्य व कारण क्या है ? तो उत्तर म उसने ऐसा कहा I will

speak ill of no man and sp ak all the good I know of every body' यानि कि किसी की भी निन्दा नही करता हूँ हर जिस (किसी) की अच्छाइयो की जानकारी जो मुझे है वह ही मुहँ से निकालता रहता हूँ।'

पूरी नसीहत का तात्पय इन शब्दों म है कि अगर सिर्फ़ इस एक लाईन के शब्दो को हृदय में अकित कर लो कि कल से इस लाईन पर काय-अमल (कार्यावाहित) करने की कोशिश करोगे तो यह दुनियाँ तुम्ह कुछ और दिखने मे आयेगी कैसा भी कोई भी मूख आदमी जब भी जिस किसी पर भी चाहे किसी समय पर आलोचना कर सकता है। पर बुद्धिमता और मनशक्ति इसम है कि पूरी बात समझकर वहीं छोड दी जाये।

कार लायल की एक प्रसिद्ध कहावत पहले भी मैंने बताई है फिर भी लिखता हू A great man shows his greatness by the way he treats little men यानि कि बडे की बडाई इसी से प्रमाणित होती है कि वह छोटा से कैसा व्यवहार करता है।'

लोगो पर आलोचना या व्यग करने के विपरीत लोगो को समझाने की कोशिश करो और देखो जिसे तुम 'ग़लतियां समझकर मानते हो क्या वास्तव म ये ग़लतियां हैं ? अगर हैं तो मालूम करने की कोशिश करो कि य क्यो होती है ? यह तरीका ज्यादा फलदायक व लाभदायक होगा और एसा करने मे तुम लोगो की अधिक सहानुभूति व प्यार प्राप्त कर सकोगे, ईश्वर भी इन्सान की ग़लतियाँ उसके अन्तिम समय पर जाचता है तो फिर तुम और मैं क्या हर समय बैठकर इन्सानो म दोष व ग़लतियां ढूढ ?

तुम्हारा पिता

अधिक सुखी व सफल होने के लिये अधिक दोस्त व अधिक हमदर्द बनाओ'

प्रिय पुत्र (3)

तीसरी हिदायत मेरी तुम्हारे लिये है कि तुम अधिक से अधिक मित्र व हमदर्द प्राप्त करो। अगर तुम्हें इस दुनिया में सुखी व सफल होना है तो तुम्हे तुम्हारे लिये अवश्य बहुत ही मित्र व हमदर्द बनाने पडेगे। इस दुनिया म ऐसा कोई नहीं जो यह दावा कर सके कि वह स्वय ही सब कुछ है। हर इसान को अपने जीवन मे दूसरे का (आधार) सहारा लेना पडता है। जीवन म सफल होने के लिये सिर्फ इसान का दिमाग काफी नहीं है। गहराई से सोचाग तो प्रत्येक इस दुनिया म एक दूसरे के आधीन (Inter dep ndent) है इस दुनिया म जो भी बडी बातें हुई हैं वे सब दोस्ताने नमूने (रूप) में एक दूसरे से मिलकर की गई हैं। अगर तुम अपन भूतपूर्व जीवन के कुछ दिनो का अध्ययन करोगे तो तुम देखोगे और महसूस कर सकोगे कि किस तरह कब व कहाँ तुम्हे दूसरे की सहायता की आवश्यकता पडती रही है।

दुनिया म मित्रो के बिना जीवन काटने वालो को जीवन म बहुत थोडा लाभ (पारिश्रमिक) मिला है जो व्यक्ति किसी से भी मित्रता जोडना नहीं चाहते और हर बात म अकेलाई पसन्द करते हैं उनको तो अगर मैं यह सलाह दू कि जाकर जगल बसाओ बाकी य शहर आपके लिय सब व्यर्थ है। जसे बर्कन का कहना है कि—

If you have not a friend, you may quite the stag ' यानी अगर आपके मित्र नहीं हैं तो यह मैदान छोड जाओ।

यह याद कर लो कि इसान एक मिलन जुलन वाला प्राणी है और वह अकेला जीवन काटने के लिये पैदा नहीं हुआ है अगर वह अकेला रहना पसन्द करता है या इसान जात से दूर भागना चाहता है तो यह समझना और मानना चाहिये कि वह प्रकृति के विरुद्ध जा, रहा है और

प्राकृतिक व संसारिक व्यवहार, यह एक मानी हुई वास्तविकता है कि इस दुनिया में कोई भी ताकतवर व धनवान नहीं, जो अपने को दूसरे से तोड़ कर अलग बनाकर रह सकता है। अगर ऐसा वह करने का प्रयत्न करेगा तो यह यकीन समझ लेना चाहिए कि लोक राय (आम राय) व आम विचार उसका सर्वनाश कर छोडेगें।

व्यापार हो चाहे व्यक्तिगत जीवन, जीवन में मित्रता व प्रेममिलाप के बिना सफलता प्राप्त करना बिल्कुल मुश्किल है। ऐसा ही कहें कि यह असम्भव है तो बेजा नहीं है।

जो तुम्हारे मित्र हैं वे तुम्हारे बाहरीय दृष्टिकोण को देखकर तुम्हें नेक व ठीक परामर्श दे सकते हैं सच्चा दोस्त तुम्हें नेक व ठीक परामर्श (सलाह) दे सकता है ऐसे मित्रों की सलाह तुम्हें दूसरी तरह कितना मूल्य खर्च करने से भी मिलनी मुश्किल है। दोस्ती भी एक विचित्र (अजीब) मिलाप है जो एक को दूसरे के लिये सचाई व वफादारी पैदा करती है।

लायन्स क्लब, रोटरी क्लब, मीमार्क लाज्स और दूसरे ऐसे संगठनों के बनने की मुराद क्या है? मुराद सिर्फ यह है कि ज्यादा से ज्यादा मित्र-भावना का नाता बनाया जाय क्योंकि मित्रभावना के नाते की हर जगह जरूरत महसूस की जाती है।

व्यापार में भी अगर दूसरे व्यापारियों के (काम्पीटीशन) प्रतिद्वन्द्विता से अगर अपने को दूर रखना है तो मैं तुम्हें बहतर तरीका बता सकूँगा कि तुम अपने ग्राहकों को दोस्त बनाओ क्योंकि ग्राहक वहीं माल लेना पसन्द करेंगे जहाँ दोस्ताना नमून (रूप) में व्यवहार किया जाता है। अगर तुम्हारे व्यापार में तुम्हें अधिक दोस्त हैं तो तुम्हें किसी से भी भय खाने की जरूरत नहीं, और तुम हमेशा फलते फूलते रहोगे। अनुभव ने हमें प्रमाणित कर दिखाया है कि जिनके व्यापार में मित्र हैं उनका व्यापार हमेशा चोटी पर पहुंचा (रहा) है।

सुखी व मज़े का जीवन काटने के लिये यह बिल्कुल जरूरी है कि आम तौर अधिक दोस्त और विशेष तौर कुछ मित्र प्राप्त करे और यह भी याद रखना कि (मित्रो) दोस्तो की दोस्ती तुम्हारे बक के खाते की (प्रतिष्ठा) Credit जमा पू जी से बहुत अधिक है जिसका मूल्य अकथनीय है ।

प्रत्येक मनुष्य की सफलता इसम है कि देखें कि दूसर लोग उन्नति व सफलता के लिये क्या कोशिश कर रह है वे दूसरे लोग भी कोशिश तब करते रहेंगे अगर उनके विचार उसी व्यक्ति के लिय ठीक व अच्छे ह'गे । और उसी व्यक्ति के निय हृदय मे प्रेम और उमग होगी । उदाहरण तौर किसी सेठ के लिय उसके सवक तब तक सघष करते रहग जब तक उस सेठ के लिय उन सेवको के हृदय म श्रद्धा व (मान) इज्जत होगी ।

किसी भी व्यक्ति की आजमायश इस तरह ली जा सकती है कि उसके कैसे और कितने दोम्त है । स्वार्थी व अभिमानी के बिल्कुल थोडे दोस्त होते हैं कारण यह है कि एसे लोग सिफ अपना ही ख्याल रखत (है) रहते हैं, और वे दूसर का ख्याल व सोच रखना जानते ही नही है । यही कारण उन्हे बहुत थोड हमदद व मित्र प्राप्त होते हैं । और कभी एक भी नही ।

किसी भी व्यक्ति का जावन तब तक ठीक नही समझना चाहिये जब वह दूसरे से बनाकर चलना नही सीखा है । मरी एक मलाह है कि कभी अवकाश (फुसत) मे कागज कलम लकर अपन दोस्तो की लिस्ट बनाओ आशा है कि एसा करने स आश्चयचकित हो जाओगे कि तुम्ह कितने कम दोस्त हैं वसे तो मालूम नही होता पर अगर बठकर दोस्तो की लिस्ट का (हिसाब) लोगे तब ही कुछ कदर महसूस कर सकोगे ।

मुझे आशा है कि उपरोक्त शिक्षा के बाद जरुर दोस्ता की दोस्ती की (कमी) जरुरत को महसूस कर सकोगे । और इसके बाद दोस्तो की सख्या म बढोतरा करोगे । जब दोस्त व हमदद प्राप्त कर खुशकिस्मत हो जाओ तो फिर उ ह वश मे रखने की कोशिश करना, दखना कही फिर उन्हे खो न दो मान शान कभी भी जा सकती है अपनी सम्पति खोई जा सकती है पर सच्चा दोस्त कभी भी हाथ स नही खाना नही चाहिये ।

बडी अवस्था में आने पर तुम मेरी तरह सोच सकोगे व महसूस कर सकोगे कि जीवन में दोस्त कितने उपयोगी हैं। कुछ लोग यह समझ नही सकते हैं क्यो उन्हें थोड़े दोस्त हैं या थोडे लोग उन्हे क्या चाहते है कारण यह है कि दोस्तो की दोस्ती पूरी तरह महसूस नही कर सकते हैं और उन्हे यह मालूम नही होता है कि दोस्तो के साथ कैसा व्यवहार किया जाय और दोस्ती कैसे निभाई जाय, इस के बारे मे मैं दूसरे पत्र मे समझाऊंगा कि दोस्त कैसे बनाये जायें और उनको वश मे कैसे किया जाय और आशा है कि ये सब हिदायतें तुम्हारे लिये उपयोगी प्रमाणित होंगी कि दोस्ती कैसे निभाई जाय।

तुम्हारा पिता

"दोस्त कैसे प्राप्त कर सकेंगे"

प्रिय पुत्र (4)

इससे पहले वाले पत्र मे मैंने तुम्हें दिखाया था कि जीवन में सुख व सफलता का आनन्द प्राप्त करने के लिये दोस्तो व हमदर्दों की कितनी न आवश्यकता है इस पत्र मे तुम्हे समझा सकूंगा कि किस तरह दोस्त प्राप्त किये जाए। जो कुछ यहाँ लिख रहा हूं वह सब व्यक्तिगत अनुभव से। जो तुम्हे माप तोल कर ग्रहण करना चाहिये।

अपने लिये दोस्त व हमदर्द सिर्फ तब ही बना सकोगे जब तुम उनमें चाह लेने की कोशिश करोगे अगर ऐसा नही किया तो भले सालों गुजर जाय तब भी मुश्किल से दोस्त प्राप्त कर सकोगे।

तुमने और मैंने कई बार देखा होगा कि कुछ लोग यह दिलचस्पी {चाहना (चाहत) पैदा करते है कि हम उनकी बातों में {दिलचस्पी} लें, पर हमने ऐसा न किया होगा जब तक उन्होने हमारी बातो में दिलचस्पी नहीं ली होगी। इन्सानी स्वभाव के जानकारो का यह निर्णय है कि हर

इ सान की अपना ही निर्णित विचार दिलचिस्पिया अपना Egoısm (अभिमान) है इसलिय हर एक इ सान की स्वय म ही दिलचस्पी रहती है। एक बार यूर्याक टलीफोन कम्पनी वाला ने एक तजुर्बा कर देखा कि टेलीफोन पर वार्तालाप म सबसे अधिक काम मे आन वाला अक्षर क्या है आशा है कि तुमन यह जान लिया होगा कि वह कौनसा अक्षर उपयोग मे आया होगा अगर जान नही सके हो तो लो मैं तुम्ह वताता हू वह अक्षर था मैं मैं मैं इससे साफ प्रमाणित है कि इ सान को स्वय म अपने आप म कितनी दिलचस्पी व चाहना है। उदाहरण तौर देखो कि तुम किसी ग्रूप फोटो म बठे हो और वह फोटो तुम्हारे हाथ म आता है तव तुम इस फाटो ग्राफ म सबम पहले किसे देखने की कोशिश करोग ? उत्तर तुम से अवश्य यही मिलगा कि अपने खुद का जो मेरी समझ व जानकारीनुसार स्वाभाविक है। सवाल है कि दूसरे लाग तुमम दिलचस्पी क्या लें जब तक कि तुमने उनम दिलचस्पी नही ली है ?

हर वक्त अगर सिफ यही चाहते रहोगे कि लोगा पर धाक जमाऊ, ताकि लोगा की तुम म दिलचस्पी पैदा हा तो यह निश्चित रूप स मान लो कि तुम इसम असफल होगे। इस तरीके आजमान से सच्चे दास्त व हमदद हासिल नही कर सकोग। शायद कुछ मक्खन बाज निकल आयें जो बाहरीय तौर तुम्ह यह प्रमाणित कर दिखाने की कोशिश करें कि वे तुम्हारे दास्त व हमन्द है। पर ऐसे दोस्तो से स्वय का दूर रखना। उदाहरणा ने प्रमाणित किया है कि कोई भी लेखक व साहित्य कार ने अगर लोगा म दिलचस्पी न लेकर अपने मन चाव से जसा चाहा आया सो लिखकर आम लोगा के सामन (रखते हैं) रखा है तो आम लोग भी वापसी म उनके लेख निब ध व पुस्तकें पस द नही करते हैं और ऐसे लेखक (किसी भी) कुछ भी सफलता प्राप्त न कर एसे ही रह जाते हैं।

जिस तरह लखक उसी तरह प्रवक्ता (भाषणकर्ता) भी अपने भाषणो से अपने श्रोताओ पर प्रभाव नही डाल सकेगा अगर अपने श्रोताओ (सुनने वाला) म दिलचस्पी न लेकर या उनकी चाहत न जानकर भाषण नही करता।

तुम्हारे निरीक्षण में काम करने वाले हैं उनमें कल से दिलचस्पी लेने की कोशिश करो फिर देखो कि वापसी में वे तुम्हारे लिये व तुम्हारे काम में कितनी न दिलचस्पी लेते हैं। यही है दूसरों का हृदय जीतने का एक कारगर व आलीशान रास्ता।

दुनिया में जब महापुरुषों की जीवनियां लिखी गई तब यह जांच की गई कि उन महापुरुषों ने इतनी हैरत अंगेज प्रसिद्धि कैसे प्राप्त की उनके सेवक उन्हें बहुत प्यार करते थे, यह रहस्य सिर्फ यह था जब भी ये महापुरुष किसी से मिलते थे तो वे मिलने वालों में खूब दिलचस्पी लेते थे और उमंग से शुभ भावना से सम्बोधित कर आदर सत्कार करते थे। यह इनका रवैया न सिर्फ दूसरों के साथ रहता था बल्कि घर सेवकों (नौकरों) के साथ भी आज भी कई लोग और उनके सेवक ऐसे मालिकों का नाम सुनकर आंसू बहा रहे हैं।

उपरोक्त उदाहरण के विपरीत एक दूसरा उदाहरण याद आया है जो एक सेठ का है कुछ वर्षों पहले की बात है। मेरा एक दोस्त उसके पास काम करता था उसने मुझे एक आश्चर्यजनक बात बताई कि कितने ही सालों से इसी सेठ के पास काम करता आ रहा हूं पर इतने सालों में इस सेठ ने मेरे से कभी बात नहीं की। सम्भवतः हो कि मेरे इसी दोस्त का इन्सानी स्वभाव अनुसार उसी सेठ के लिये गंव श्रद्धा या इज्जत (मान) होगा ?

इसलिये दोस्तों और हमदर्दी को हासिल करने के लिये यह बिल्कुल आवश्यक है कि दूसरों में दिलचस्पी लें इसके साथ ही कुछ और बातें भी जरूरी हैं कि समय की पाबन्दी सच्चाई और निस्वार्थता बरकरार रहे।

कई सालों से मुझ पर एक चाहना (सनक) सी सवार हो गई है क्या करता हूं जो मेरे दोस्त हैं। उनकी जन्म तारीख हासिल करने की कोशिश करता हूं अच्छा खासी एक किताब है जिसमें यह सब दर्ज हैं जब उनके जन्मदिन आ जायें तब मैं उन्हें दो शब्द सद् भावना के जरूर लिखता हूं, इसी मेरे पैगामों ने मेरे लिये क्या किया है उसका क्या वर्णन करूँ।

मुझ म अचानक परिवतन (बदलाव) कसे आया इसका भी एक विचित्र व दिलचस्प वणन है एक बार किसी दोस्त के साथ एक स्थान पर भोजन करने गया मेरे समीप (साथ) ही मेरा एक दूसरा दोस्त भी आकर बठा उतराव चढ़ाव यानि इधर उधर की की बातें चल पडी मेरे उसी दोस्त ने (मेजबान) ने (मुझ) हम एक कहावत सुनाई और कहा कि उसने यह बाईबल म पढ़ा था, यह कहावत मेरी भी पढ़ी हुई था जो वास्तव म शेक्सपीयर की किसी किताब म लिखी थी। मैं उसी मजबान दोस्त को (जानकर) गलत समझकर उत्साहपूवक सुशधारा म भर गया (आ गया) और एक दम उस कह दिया कि वह सरासर (बिल्कुल) गलत है और यही कहावत शेक्सपीयर की है पर वह मजबान दोस्त ऐसे मुडे जसे दीवार। और मुझे यह कहने लगा कि मैं गलत हूँ और वह सही है और उसे सोलह आना विश्वास है और वह सही है कि यह कहावत बाइबल म से है। मैं वाद विवाद (बहस) करने के लिये तैयार हुआ पर मेरा दोस्त जो मेरी दूसरी ओर बठा था उसने मुझ इशारा कर शान्त कराया और मुझ बठा उस मेजबान दोस्त को कहने वह सही है और मैं गलत हूँ। मैं अलबत्ता हैरान रह गया क्योंकि उस मेरे दोस्त को भी शेक्सपीयर की किताबों व बाईबल की विशष अध्ययनशीलता हासिल थी पर उसी समय मैंने चुप्पी साधली। पर बाहर निकलने पर मै बठा उसी दोस्त से उसके किये गये रवये का अथ पूछने। वह दोस्त कहने लगा कि तुम्हारी बात बिल्कुल ठीक है वह कहावत शेक्सपीयर की फलानी किताब म से है पर तुम्हे यह न भूलना चाहिये कि मैं और तुम दोनो उसी स्थान (मजबान दोस्त के घर) पर महमान बनकर गये थे ख्वामखाह क्यो हम इसी तरह यह प्रमाणित करने का प्रयास करें कि वह गलत है। ऐसा करने से क्या तुम समझते हो वह तुम्हे पसन्द करने की कोशिश करेगा? क्यो न उस छोड दिया जाये ताकि भले वह अपना मुह छिपाये उसने तुमसे तुम्हारी राय नही पूछी थी और न ही उसे तुम्हारी राय की आवश्यकता थी उसने बात बताई थी फिर ख्वामखाह क्या उससे बहस छेडा जाय हमेशा बहस से दूर भागो।'

मैं उसका सपूण वार्तालाप सुनकर हैरान रह गया और सचमुच अपने

दिल में अपनी गलती महसूस करने लगा और वह दिन और यह दिन असल जहाँ बहस होता देखूँ वहाँ से भाग कर दूसरी तरफ चला जाऊं और जिनको भी बहस करते देखूँ उनसे मुझे खराबापन अनुभव होता है।

दुनियाँ में (मुझे) मैंने कई वाद-विवाद बहस सुने हैं पर इतने बहस सुनने के बाद मैं इस समय इसी राय के नतीजे पर पहुँचा हूं कि बहस करने से अधिक खडतल निकलना नहीं है जितना लाभ फायदा) होना हो उससे वही अधिक हानि (नुकसान) होने की सम्भावना है।

देखा गया है कि बहस करते करते दस में नौ व्यक्ति बहस करने के बाद एक दूसरे की राय को स्वीकार करने के विपरीत यानि असहमत होकर खुद अपने (रायो)- मतों) व विचारों में और अधिक दृढ़ (मजबूत) हुए हैं।

तुम बहस कर कभी भी जीत नहीं सकते क्योंकि अगर तुम हारते हो तो भी हारते हो, और अगर जीतते हो तो भी हारते हो तुम पूछोगे सो भला यह कैसे? उदाहरण (रूप) तौर देखो तुमने अच्छी तरह बहस कर दूसरे से जीता तो है लेकिन (पर) बाद में? तुम दिल में खुश तो बहुत होंगे कि तुमने बड़ी जानबाजी मर्दानगी व बहादुरी का काम किया है पर सवाल यह है कि उस दूसरे का क्या हाल हुआ होगा जिस को तुमने बहस में जीत कर उसका अपमान (बेइज्जती) किया, वह तुम्हारी जीत पर अवश्य ही नाराज होगा और मौका ढूंढकर व पाकर तुमसे बदला लेने की कोशिश करेगा।

एक बीमा कम्पनी का एक (अमोघ सिद्धांत) असफल न होने वाली सुन्दर राय (विचार) है और वे सिद्धांतर रूप से हर उन विक्रय प्रतिनिधि को सिखाते हैं वह है बहस न करो क्यों न यह सिद्धांत हम भी रोजाना जीवन में ग्रहण करें।

याद रखो कि सच्ची योग्यता (काबिलियत) बहस करने में नहीं है, और बहस करने से हम अपने आप को अधिक दुखी करते हैं इंसानी स्वभाव

बहस करने से बदल नही सकता, बहस करना (करन से हम) सिफ अपना दिमाग (भेजा) गरम करना है ।

एक अमरीकन विद्वान बजमन फकलन Benjamin Franklin' की एक कहावत इस रीत है । If you argue and raukle and contradict you may achieve a Victory sometimes but it will be an empty Victory because you will never get your opponent's good will यानि कि अगर तुम बहस करते खीजते और सफाई देते रहोग तो कभी शायद जीत भी हासिल कर लो (जाओ) पर तुम्हारी यह जीत खाली है खोखली जीत है भरी हुई नही है । क्योकि ऐसा करन से तुम अपने विरोधियो की शुभभावनाआ को प्राप्त (हासिल) नही कर सकोग

अब बताओ तुम्हे किस तरह की जीत चाहिय यह बाहर देखा देखी वाला या इन्सान की शुभ भावना भले तुम बहस करने के समय तुम भल कितन ही सही क्यो न हो पर जहा इ सान के विचार (परिवतन) बदलन का प्रश्न है वहाँ तुम्हारी यह कोशिश निष्फल (फल न देने वाली) है । तुम इसम भी भूले हुय हो ।

एक दूसरे मुदवर की एक नीचे लिखित कहावत है 'It is impossible to defeat an ignorant man by argument यानि यह एक असम्भव बात है कि हम किसी अनजान (न जानकार व्यक्ति को) बहस मे जीत सकें ।

उपरोक्त मुदवर ने 'अनजान अक्षर (ना मालूम) कस फिट किया है पर मैं ता इस विचार मत (राय) का हू और तुम्हे भी कहता हू कि सिद्धा-तिक रूप से किसी भा समझदार व बुद्धिजावी को भी बहस मे जीतना सरा-सर भूल है ।

कई लोगा न तमाम साधारण बाता पर बहस छेड कर अपन और कई दूसरा का जीवन जहर किया होगा ऐस उदाहरण हर रोज देख और सुनाई दत हैं ।

बहस हमेशा खतरनाक होती है और बहस करने से कितनी ही और कई तरह की गलतफहमियां पैदा होने की सम्भावना है। बहस में जीता जा सकता है पर जिस दोस्त से बहस करते हैं उसे हम अपने हाथ से खो देते हैं अब प्रश्न यह है कि दोस्त खोना ठीक है या बहस हारना ठीक है ? अगर बहस जीतकर दोस्त खोयें तो उसे एक खराब सौदा समझना चाहिये।

ऊपर लिखित मेरी पूरी हिदायतों की मुराद यह है कि बहस से दूर भागो पर इससे यह तात्पर्य नहीं निकालना कि कभी अपनी सच्चे विचार सच्ची राय *(या सच्चा मत)* जाहिर न करो अपनी राय कहीं भी निर्भय होकर विशेष तौर दी जा सकती है पर जिस बात से मैं तुम्हें दूर रखना चाहता हूं वह है "व्यय बहस ।

तुम्हारा पिता

'हमेशा मुस्कराता हुआ हसँमुख चेहरा दृष्टिगोचर हो"

प्रिय पुत्र (6)

इस पत्र में मैं तुम्हें छठी हिदायत लिख रहा हूँ वह है कि 'हमेशा मुस्कराता हुआ चेहरा दिखाई दे।'

तुम्हें याद होगा जब तुम छोटे थे तब मैं तुम्हें कहता रहता था कि हमेशा दुख सुख में भी मुस्कराता हुआ चेहरा बनाये रखो जब जब मैं तुम्हारा मुँह सूजा हुआ देखता था या मिलवटें चेहरे पर पाता था तब मेरा तुम्हें सुझाव था कि मुस्कराते हुये दिखाई दो। ऐसा कहने की मेरी मुराद सिर्फ यह थी कि बड़े होकर हमेशा मुस्कराते रहो।

मैं अपने जीवन के अनुभव से तुम्हें बता सकूंगा कि जिस-जिस की शक्ल में मुस्कराहट और खुशमिजाजीपन नहीं है वह सिर्फ है और जीवन का आधा आनन्द ले रहा है।

दुनिया के महापुरुषो व मुस्करा की तरफ नजर (डालो) दौडाओग तो उनके चेहरा पर हमेशा मुस्कराहटपन व ताजगीपन देखोगे। यह पाठ वे सब अपने जीवन के अनुभव से सीखे हैं। जो भी काम करें मुस्कराकर करें। अगर कुछ कठिनाई व तकलीफ उनके सामने आ भी गई तो भी उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कराहट रही। यह है सच्चे मुदवरा का राज।

हमारे नताओ महात्मा गांधी पडित जवाहर लाल नेहरु और कई एसे नताओं व बडे आदमियों (महापुरुषो) के कन्धा पर हमेशा राष्ट्र के बड बोझ बने रहत थ फिर भी हमेशा उनके चेहरा पर मुस्कराहट दिखाई देती थी सो भला कसे और क्या ?

मुस्कराते हुए चेहर सबको अच्छे लगत है हर जगह मुस्कराते हुए इन्सान का स्वागत होता है तुम अपने आप स पूछो क्या तुम्ह बिना मुस्कराहट वाला, मुह पर सिलवटा (सूजन) वाना व्यक्ति पस द आयगा ?

फाटोग्राफर भी जब फोटो निकालता है तब सभी का ध्यान आकर्षित कर उनका कहता है कि चेहरे पर मुस्कराहट लाओ क्योकि मुस्कराहट के बिना फोटो सुन्दर नही लगता सिनेमा की तारिकाओ एक्ट्रसो की तरफ देखो उनके चेहरे अगर हसमुख नही हैं तो उनकी फिल्म भी हम अच्छी नही लगती।

इस बात म कोई दो राय नही हो सकती कि हसमुखता इन्सान की सुन्दरता योग्यता नूर, व व्यक्तित्व बनाती है जो व्यक्तित्व आम लोगो को जरूर आकर्षित करता है और इन्सान को सफल बनाने मे अवश्य सहयोग देगा।

हसमुखता या मुस्कराहट एक भाषा है किसी भी इन्सान की तरफ देखकर यह कहना है कि, 'मैं तुम्ह चाहता हू मैं तुम्हे देखकर बडा खुश हुआ हू वग रह अमल करना (कायवाहित करना) शब्दो स ज्यादा प्रभावशाली है हम अपने चहरे पर मुस्कराहट लाकर एक अमली कदम उठाते है यानि कि दूसर को देखकर अपने चेहरे पर प्रसन्नता प्रकट करत है।

ऐसा नही कि ठगी व ताने वाली मुस्कराहट समझो ! मैं इस सच्चा मुस्कराहट का थोडा सा वणन करता हू जो सचमुच तुम्हार अन्दर से निकलनी चाहिये नही तो तुम्हारी ये मुस्कराहट (ठगी व तान वाली) लाभ के उलट हानि करेगी। और न ही मैं बहुत जोर से (हा हा हा कर हँसन) के फायदे म हू।

एक मशहूर सेठ का उदाहरण याद आता है जो उनके पास नौकरी के लिय आता था उनके वस्त्रा से अधिक उनके चहरा पर ध्यान देता था उसे सिफ वे लोग ही पसन्द आते थे जिनके चेहरे हसमुख व मुस्कराहट वाले होते थे।

व्यापार म हमेशा हसँमुख चहरा तमाम जरुरी है। सच पूछा तो व्यापार म बी ए व एम ए की डिगरियाँ भी इतनी उपयोगी नही, इतनी सहयोगी नही हो सकती जितना मुस्कराता और हसमुख चहरा।

विदेश म जितने भी बडे कारखान है उनम कुछ म अलग अलग विभाग खुने हुए हैं जहाँ काम करने वालो को व्यापारिक ट्रेनिंग (शिक्षा) दी जाती है जिसे Staff Training कहा जाता है शायद कईयो को यह मालूम न भी हो कि वहाँ दूसरी बाता के साथ साथ बिक्री करन वाला (विक्रय शिक्षा पान वाले) की शकलो पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। और उन्ह हर समय यह हिदायत दी जाती है कि ग्राहको के सामने हमशा हसमुख चेहरा हो (बनाकर रखा) और हमेशा ग्राहका को मुस्कराते हुए चेहरे से माल बेचो !

क्या तुम यह नही चाहाग कि जहाँ जहाँ भी विक्रय विभाग चाहे वह सरकारी हो या गैर सरकारी, या सहकारी या निजि विक्रय विभाग हो वहाँ इस अमाघ तरीके को काम म लाया जाय।

चीनी भाषा म एक प्रसिद्ध कहावत है जिसके पास मुस्कराहता हुआ हँसमुख चेहरा नहीं है उसे दुकान नहीं खोलना चाहिय कितनी न अथपूर्ण है यह कहावत! अमरीका व इगलैण्ड मे व्यापार-और जीवन म सफल होने के लिय कक्षाए (क्लासिस) शुरू की जाती हैं। वहाँ काम लाखों

को सिखाया जाता है कि जीवन सुखी व सफल कैसे बनाए। ऐसी कक्षाओं (कक्षाओ) म दूसरे पाठों के साथ मुस्कराहट' पर भी पाठ दिया जाता है। मुस्कराता व हसमुख चेहरा रखने के कारण इन्सानी जीवन पर कैसा प्रभाव पडता है उसका वर्णन एक व्यक्ति इस तरह बताता है शास्त्री कि अठारह साल हो चुके हैं इसी दौरान म भूले भटके मुश्किल से कभी अपनी पत्नी की तरफ मुस्करा कर देखा होगा। जब से मुस्कराहट पर पाठ मिला तब जीवन म अचानक बडा ही परिवर्तन आ गया है। मैंने विचार किया कि एक सप्ताह भर के लिये मुस्कराता हुआ चेहरा बनाकर देखूँ। सो सुबह बिस्तर से उठते हुए प्रण किया कि आज सभी के साथ हसमुख होकर बिताऊंगा।

नाश्ता सामने आ गया एकदम प्रेम से अपनी पत्नी की तरफ एक मुस्कराहट फैंककर देखा वह बडी खुश हुई और अलबता कुछ हैरान भी हुई कि आज यह कैसा अचानक परिवर्तन आया है यह तरीका कितने ही साल हो गये हैं कायम रखता ही आ रहा हूं।

इस मेरे तरीके ने मेरे पूरे जीवन को एक नया रूप दे दिया है। घर से मैं रोज निकलू जो सगी साथी रास्ते म मिल उन सभी से बडे ही प्रेम व आदर से मुस्कराकर नमस्ते करता हुआ आफिस म आता आफिस में जो मिलने के लिये आये उनसे भी वार्तालाप बिना मुस्कराहट नही किया। इस आजमायश से मैंने देखा है कि मेरी यह मुस्कराहट व मुख प्रसन्नता मुझे वापसी म मिल रही है। ऐसा तरीका हाथ म आने के बाद न सिर्फ मेरे व्यापार मे पर मेरा जीवन सुखी होने लगा है। उपरोक्त है एक जिन्दा जीता जागता उदाहरण जिससे तुम्हे पाठ सीखना चाहिये।

जब भी किसी चिन्ता या दुख म हो तो उसको दूर करने के लिये सिर्फ एक इलाज है कि अपने चेहरे पर मुस्कराहट पैदा करो देखो ऐसा करने पर तुम्हारा दिल का भार कहां गायब हो जाता है।

मुस्कराहट हमेशा वापसी म मिलती है सिर्फ कुछ ही ऐसे कम लोग होंगे जो तुम्हारी मुस्कराहट का जवाब मुस्कराहट से नहीं देंगे। जीवन म

सफल होने के लिये अगर कोई चाबी मुझसे पूछते हो कि क्या है तो मेरा जवाब है तुम्हारे लिये यही कि मुस्कराता चेहरा

मुस्कराहट एक ईश्वरीय सौगात (वरदान, है जो सिर्फ इन्सान जात को बख्शी गई है पर सवाल यह है कि कितने लोग हैं जो इस ईश्वरीय वरदान रूप सौगात (तोहफा या भेंट) की कदर करते हैं।

मैं तुम्हें यह सलाह देता हू कि तुम आज से यह प्रण करो कि कभी भी अपने जीवन म अपने चहरे स मुस्कराहट नही हटाओगे जो भी तुमसे मिलत रहें उनस बडे आदर प्रसन्नता स हसँमुख चेहरा बनाकर प्रेम व सद्भावना की मुस्कराहट स मिलो फिर देखो वह पूरी मुस्कराहट तुम्ह वापसी म मिलती है या नही ?

तुम्हारा पिता

'लोगों के नाम याद करो व्यापारी जीवन में उपयोगी बातें'

प्रिय पुत्र, (7)

सातवी हिदायत जो मेरी तुम्हारी लिय है कि तुम लोगो के नाम याद करो' तुम रोजाना जिनसे सम्पर्कित हो, सम्पर्क रखते हो उनके नाम याद रखना तुम्हारे लिए तुम्हारी सफलता के लिए जरूरी है। ऐसा करने से तुम उनके अधिक बिल्कुल ही क़रीब जाओगे। इसका अर्थ है कि उनमे चाह लेना अधिक दिलचस्पी लेना, जिसका बिल्कुल शुद्ध अर्थ है कि दूसरे की अधिक दोस्ती और सहानुभूति (हमदर्दी) हासिल (प्राप्त) करना। कुछ समय पहले अखबार मे निम्नलिखित पहेली दर्ज थी यह क्या है जो है भी तुम्हारा, है भी तुमको सबसे अधिक प्यारा (अजीज) पर तुमसे अधिक दूसरे लोग उपयोग (काम) में लाते हैं।'

इसका उत्तर दूसरे सप्ताह दज किया गया था, आपका नाम इसम क्या शक है कि हर इन्सान को अपना नाम सबसे अधिक प्यारा है। मन विद्या के जानने वालो ने यह स्पष्ट रूप से निणय लिया है कि साधारण तौर हर एक इन्सान को अपना नाम बिल्कुल मीठा लगता है।

इस हिदायत के लिये उसके साथ कुछ (हकीकतो) वास्तविकताओ को समझना भी तमाम जरूरी है। निष्पक्ष होकर हम औसतन नजर डालें इस दुनियां मे स्वाभाविक तरह (हर) सभी अपने नाम के पीछे हैं। यह एक विश्व प्रसिद्ध वास्तविकता है जिसको कोई भी छिपा नही सकता। रोजाना जीवन की घटनाओ मे हम देख सकेंगे कि अपने नाम का अपने जीवन म कितना न महत्व व आदर है न सिफ यह ही पर हम यह भी चाहना भी रखते हैं कि हमारे इस लोक छोडने क बाद भी हमारा नाम कायम रहे। किसे अगर सन्तान नही होती है तो उसे चिन्ता लगी रहती है कि उसक पीछे नाम कायम रखने वाला कोई पदा नही हुआ है। और वश अनुसार गोद म भी सन्तान लेने की करता है इसी सभी बाता की मुराद सिफ यह है कि हमारा नाम रोशन हो।

उपरोक्त कुछ वास्तविकताए हैं जो इन्सानी स्वभाव Human Nature' के आधार पर सुनी गई है जिससे न तुम और मैं दूर रह सकते है।

उपरोक्त वास्तविकताओ के समथन म मैं तुम्हारा घ्यान आम तौर पर सस्थाओ की तरफ आकर्षित करूगा जो देखोगे कि कैसे, किसी न किसी नाम के पीछे चल रही हैं।

जहाँ तहा लोगो के नाम के पीछे आम रास्ते गलिया मोहल, स्थान, भवन, वग रह वग रह बाले जाते हैं। इससे तुम समझ सकते हो कि इन्सान नाम को कितना महत्व देता है।

यह हालतें न सिफ हमारे यहाँ भारत मे है पर जसे इन्सानी स्वभाव पूरी दुनिया म समान हैं वसे ही नाम को महत्व भी पूरे दुनिया म दिया जाता है।

इसान को अपने नाम का गर्व रहता है। कोई भी अगर हम नाम से खुश सम्बोधित करता है तो हम कितने खुश होते हैं अपने दिल म सोचते हैं कि हम ऐसे व्यक्ति से वार्तालाप व व्यवहार कर रहे हैं जो हम को जानता है और हम वहा अपने आपको अपरिचित नहो समझत ।

जब तुम्हे और मुझे कही भी अपना नाम (सुनकर) सुनने मे इतनी प्रसन्नता मिलती है तो सवाल यह है कि जिस किसी दूसरे को अगर नाम से (पुकार कर) खुश सम्बोधन करेंगे तो कितना न उसके हृदय पर अच्छा प्रभाव पडेगा। और वह जरूर यह समझेगा कि उसका काम किसी अपरिचित इसान से नही पड़ा है। एसा करने स हम उसक कुछ अधिक करीब (नजदीक) आ सकेंगे। नाम याद करना व्यापारी दुनिया म एक जरुरी और बिल्कुल ही उपयोगी बात समझनी चाहिये। दुकानो पर ग्राहको के नाम याद कर उनके आने पर उनके नाम से पुकार कर खुश सम्बोधन से उन पर गहरा प्रभाव पडेगा हर (सेलसमन) विक्रेता को ग्राहको के नाम याद करना एक कतव्य (फज) समझना चाहिये।

उपरोक्त तरीके शायद तुम्हे नये लगें पर विदेशो म इसे आम जाम आजमाया जाता है और हर तरह इसमे सफलता मिलती रही है।

मुझअपना व्यक्तिगत अनुभव है एक बार मैं किसी जहाज पर सफर कर रहा था उसी कम्पनी के जहाज मे पहली बार चढा था केबिन मे पहला कदम अन्दर लने स पहल मैंने देखा कि बाहर दरवाजे पर मेरा नाम कार्ड पर लिखकर टाँग दिया गया था। घन्टी बजाने पर जो मेरी सेवा म आये उन सभी न मेरे नाम से पुकार खुश सम्बोधन किया था कहन का तात्पय है कि खाने की मेज पर भी मेरा नाम लेकर खुश सम्बोधन किया गया और मुझे यह महसूस कराया जा रहा था और मैं भी महसूस कर रहा था कि (चोनरफ) हर तरफ मेरे परिचित हैं जान पहचान वाले हैं। सच तो इसी मुसाफ़िरी में एसा सुखी व खुशी समझ रहा था जो बात सुनाने की नही ।

चिन्ता न करो

प्रिय पुत्र, (9)

नवी हिदायत मेरी यह है कि चिन्ता न करो' एक कहावत प्रसिद्ध है कि चिन्ता चिता समान है चिन्ता से आदमी कर्जदार भी हो सकता है और कर्ज मर्ज के समान है। कहने का तात्पर्य यह है कि चिन्ता जैसी कोई मर्ज या बीमारी नहीं है उससे जितना दूर रह सकें उतना अच्छा।

चिन्ता करना इन्सान के स्वभाव पर मदार रखता है कई (कितने) ऐसे (लोग) आदमी हैं जिनके आगे चाहे कैसे भी मुसीबतों के पहाड़ टूट पड़ें तब भी उनको चिन्ता नहीं करते। इसके विपरीत कितने (कई) ऐसे लोग हैं जिन पर अगर थोड़ी कुछ कठिनाई सामने आ गई तो दिनरात चिन्ता में बैठ जाएँगे।

जानकार लोगों का कहना है कि पतला आदमी मोटे आदमी से अधिक विचार कर चिन्ता करता है। वास्तव में चिन्ता के लिये कुछ भी दवा या राम बाण दवा नहीं है फिर भी तुम्हारी जानकारी के लिये कुछ वास्तविकताएं लिखता हूँ कि देखो चिन्ता करना कितना व्यर्थ है।

चिन्ता करना भी एक आदत है जिस तरह और आदतों पर नियन्त्रण (कन्ट्रोल) किया जा सकता है अगर चाहते हो कि जीवन में सफल बनूँ तो इस पर भी नियन्त्रण रखने की कोशिश करनी चाहिये।

चिन्ता इन्सान के दिल दिमाग इरादा शक्ति (Will power) व मनो बल को नष्ट कर देती है उस व्यापार पर ईश्वर की कृपा नहीं होगी जिसका मुख्य सचालक एक चिन्ताग्रस्त व्यक्ति है।

मेरी समझानुसार चिन्ताओं को तीन भागों में बाटना चाहिये।

(1) तमाम (नाजिक) गभीर बातों के विषय की चिन्ताएं
(2) साधारण बातों के लिये चिन्ताएं
(3) भविष्य के लिये चिन्ताएं

नम्बर एक वाली चिन्ताएं उचित हो सकती है जिन चिन्ताओ से हम मुक्त हो नही सकत । बाकी नम्बर दो और तीन वाली (चिन्ताएँ) साधारण व भविष्य से सम्बधित चिन्ताओ के लिये सोचना उचित नही है।

अच्छी तरह से सोचा जाये तो गभीर बातो क लिये सिफ चिन्ता करना भी व्यय ह क्योकि ऐसा करन से कठिनाईयाँ दूर हो नही सक्ती फिर सवाल है चिन्ताएँ क्या करें ?

मैंने निरीक्षण किया है कि व इन्सान अधिक चिन्ताए भोगते हैं जिनकी कठिनाईयाँ कम व छोटी हैं छोटी और साधारण बातो पर एक हल्का आदमी ही अधिक शोर व चिन्ता करता है।

मुझे जब अधिक कठिनाइया सामने आई है तब खुद कम ही चिन्ता भोगी है और जब कोई एक समस्या सामने आती है तो अधिक चिन्ता करनी पडती है। वास्तविकता मे जब किसी को दजन भर बातो को मुह देना पडता है तो प्राकृतिक रूप स भी स्वाभाविक तौर पर उसे छोटी बातो को भूलकर सिफ बडी बातो का ही (मुह दना) सामना करना पडता है।

जब भी तुम पर कोई कठिनाई आ गिरे तो तुम उस समय सिफ यह विचार (करो) म रखो कितन ही एसे लोग उस दुनियाँ म जिन्दा हैं जिन पर तुमसे अधिक बोझ है जिनको व मद होकर सामना (मुहदे) कर रहे हैं।

ऐसा (सोचन पर) दिल में विचार करने से तुम्ह अपनी कठिनाईया बिल्कुल साधारण (लगेंगी) नजर आयेंगी फिर चिन्ता किस लिये ?

चिन्ता करने का जो नाजुक नतीजा यही निकलता है कि इन्सान का मन उलट पुलट हो जाता है जिसके परिणाम स्वरूप उसके दिमाग म शोर शराबा रहता है और उस कुछ भी अच्छा नही लगता।

इन्सान जो चिन्ताए कर रहा है सो उसे दिमागी तौर पर बीमार समझना चाहिये और वह किसी भी बुद्धिमत्ता की राय दने के काबिल हो नहीं

सकता । और न ही वह किसी कारोबार को चलाने म सफलता प्राप्त कर सकता है ।

यह अपने साथ एक समझौता कर लो कि कभी भी किसी चि ता या उलझन म होगे ता अपनी राय (अपना मत) कभी भी प्रकट नही कराेगे क्योकि उस समय की हालत म तुम्हारा मत कभी भी ठीक नही हो सकता ।

व्यक्ति जब चिन्ता म है तब वह साधारण हालत मे नही है और वह मायूसी के कारण उस समय कमजोर हो जाता है और इसी ना उम्मदी (निराशा वाली) चि ताओ के कारण कितने ही लोगो ने अपना सब कुछ नष्ट कर दिया होगा ।

यह चि ताए ही है जिस कारण कमजोरी की हालत म कितने ही इन्सान अपने जीवन की कदर न करके खुद आत्महत्या कर लेते है । पर उनमे से शायद कुछ अपना जीवन बचा सकते थ अगर उनको इन चि ताओ पर नियत्रण करने की थोडी जानकारी होती या इन चि ताओ को हर आजाद विचारो (ख्यालो) से लेते । काफी समय से मेरी यह नीति रही है कि जब कभी भी कोई चि ता व उलझन सामने देखू तो चला जाऊँ किसी नाटक डाम या किसी मनोरजन स्थान पर जहाँ थोड समय तक अपने विचारो को बदल देता हू इसके बाद देखता हू कि विचार ही ताजे हो जाते है । सुबह को चिताओ का रूप ही दूसरा ।

चिन्ताओ से मायूसी पैदा होती है और मायूसी फिर इन्सान को आगे कदम बढाने मे रुकावट पैदा करती है मायूसी के कारण हमेशा दिल पर डर (भय) रहता है जो न होने वाली बात है उसके लिये भी दिल पर हर दम विचार रहता है ।

व्यापार की सफलता भी इ सान के स्वभाव पर मदार रखती है आधारित है कुछ व्यापारी हैं जो छोटी सी बात पर ही अपने आपको कठिनाई म समझते है । फिर रात दिन चिन्ता करते रहेंगे जो व्यापार की

उन्नति (बढ़ने) में आड़े (रुकावट) आती हैं। इसमें कोई शक नहीं कि यह चिंताएं अक्सर खराब (तंदुरुस्ती) स्वास्थ्य के कारण भी होती हैं जैसा कि बदहाज़मा, नींद का न आना वग़ैरह इसलिये यह आवश्यक है इस वास्ते स्वास्थ्य अपना ठीक रखना चाहिये।

जिस समय किसी इंसान को अधिक चिंताएं घेरे रहती हैं उस समय वह अपने आप पर दुख प्रकट (अरमान) करता है कि वह बदबख्त पैदा हुआ है दुर्भाग्यशाली पैदा हुआ है। पर ईश्वर ने हम इसलिये नहीं पैदा किया है कि हम इस दुनिया में आकर अपने आप अरमान करें (दुख प्रकट करें।) इंसान की खुशी या दुख सब उसके मनोवृत्ति पर आधारित हैं मदार रखती है।

कुछ भी करो पर अपने आप पर अरमान न खाओ। इस जीवन में लहर और झटके (Swing Jolting) से कभी भी हारना नहीं चाहिये हार जाओ तो हरकत नहीं (ऐसी चिंता व सोचने की बात नहीं), हमेशा अच्छा हारने वाला होना चाहिये।

सवाल यह है कि जो मनुष्य अपने भूतकाल का समय सोचकर सिर्फ चिंताएँ करता रहेगा वह आदमी इस ज़माने के दौर की कठिनाईयों पर कैसे नियंत्रण कर सकेगा?

हर बुद्धिमान व्यक्ति को अपने भूतकाल के समय को भूल जाना चाहिये अपनी स्मरण शक्ति का अकारण ही गुलाम होना ठीक नहीं है।

अपनी स्मरण शक्ति को जितना बढ़ा सको उतना अच्छा, इसमें मैं अप्रसन्न नहीं हूं।

पर जो बातें भूलनी चाहियें वे अकारण भी तुम्हारे लिये भूलाना जरूरी है।

अगर अपने भूतकाल में अपने जीवन की कुछ कामों या बातों में तुम सफल नहीं हुऐ थे तो इसे तुम भूल जाओ दुनिया में कई सफल व्यक्तियों ने शुरूआत (प्रारम्भ) असफलता से की है। आखिर बाद में जाकर मंजिल पर पहुँचे हैं। याद रखो कि कोई भी माँ के पेट से असफल पैदा नहीं हुआ है कोई भी अपनी योग्यता से फिर सफल हो सकता है।

अपने दुख भूल जाओ। ऐसे यह शायद तुम्हें कुछ कठिन नजर आय पर तुम्हें दृढ़ (मजबूत) होना (बनना) चाहिये। अपने प्रतिद्वन्दी को (दुश्मन को) भूल जाओ। अपने दुश्मनों का विचार हर समय अपने मन में रखना भी ठीक (न अच्छी लगने वाली बात है) नहीं है। दुनिया में जो भी प्रसिद्धि (मशहूरी) प्राप्त इन्सान है उनके भी दुश्मन हो सकते हैं इसलिये उनको कुछ भी हैसियत न देकर हस्ती न मानकर और महत्व न देकर अपने दिल की पट्टी पर से हमेशा के लिये भूल जाओ।

जिस बात को याद करने से तुम्हें दिल की शक्ति या मनोबल मिले उसको ही याद करने की कोशिश करो पर जिस बात को याद करने से तुम्हारे दिल में मायूसी पैदा होती है उसे बिल्कुल याद न करो। बातों को याद करना और भूलना भी एक कला है जो तुम्हें सीखनी चाहिये।

जो व्यक्ति सिर्फ न अच्छी लगने वाली बातों को याद करेगा वह अपना दिमाग खराब कर लेगा कोई भी डाक्टर तुम्हें इस बात पर रोशनी डाल सकता है।

अन्त में मैं एक सलाह देना जरूरी समझता हूँ वह है जिन बातों पर तुम चिन्ता कर रहे हो उन सब को नम्बर एक कागज पर लिखो।

पर फिर वे बातें जो सचमुच विशेष चिन्ताजनक नहीं हैं उनको काटते जाओ (अंतिम तौर पर) अन्त में देखोगे कि बाकी सिर्फ कुछ बातें रह *जाएंगी उसके लिये भी चिन्ता करने की क्या आवश्यकता है जबकि सिर्फ* चिन्ता करने से हम अपनी कठिनाईयों को दूर नहीं कर सकते।

याद रखो जो चिन्ताग्रस्त है वह गलतियाँ करता है और जो गलतियाँ होती हैं वह दुख पैदा करती हैं दुखी दिल फिर अधिक दुख पैदा करता है इसलिये दुख के वास्ते लिये) हम जितना भी कम दुख करेंगे वह हमें उतना ही कम होगा। जितना हम दुख को बाँटते रहेंगे उतना ही हम अधिक दुख होता रहेगा। इतनी वास्तविकताओं का स्पष्टीकरण देने के बाद अब भी बताओ कि चिन्ता करोगे क्या? तुम्हारा पिता

किसी को गलत न कहो (बोलो)

प्रिय पुत्र, (10)

दसवी हिदायत मेरी तुम्हारे लिये है कि किसी को भी गलत नही कहो!'

किसी को भूल से भी गलत न कहो कि 'तुम गलत हो' हम मे से हर एक किसी न किसी बात मे हमेशा गलत रहता है। कोई भी व्यक्ति इस दुनिया मे (सौ टका) शत प्रतिशत सही हो नही सकता। इसलिये किसी को भी इस तरह कहना कि तुम गलत हो इसका हम अधिकार नही। जबान से न कहकर सिर्फ देखने या शान्त रूप से इशारे से दूसरे को यह दिखाना चाहिये कि तुम गलत हो फिर भी समझते हो कि वह तुमसे तुम्हारी बात मे सहमत होगा? कभी नही।

क्योंकि उसे गलत बताकर तुम उसकी बुद्धिमत्ता विचार समझ व राय (मत) को सीधे रूप मे चोट लगा देते हो। ऐसा करने से तुम किसी दूसरे को अपने से सहमत कर नही सकोगे? वह जरूर तुम्हारी इस लगाई हुई चोट के प्रति उत्तर (जवाब मे) चोट से वापस करने की कोशिश करेगा। यानि वापसी मे खुद को सही प्रमाणित करने की कोशिश करेगा फिर चाहे तुम अपने बचाव मे उसे गाधी टगोर और कई ऐसे महापुरुषो की कहावतें क्या न पेश करो! पर वह अपने हठ से नीचे नही उतरेगा क्योंकि तुम उसे गलत कहकर बोलकर) उसकी बइज्जती कर चुके हो और वह ऐसे शांति मे हार मानकर अपनी अधिक बइज्जती करवाना मुश्किल से स्वीकार करेगा।

कभी भी अपनी बात इस तरह शुरू न करो कि मैं तुम्हे यह प्रमाणित कर दिया हूं ऐसा ढग अपनी बात शुरू करने का बहुत खराब है—ऐसी तरह बात शुरू करने से यह दिखाता है कि तुम दूसरे से बहुत अधिक होशियार और (अक्ल मे द) बुद्धिमान हो। ऐसे तरीके से अपनी बात की शुरुआत करना है दूसरे को सावधान व सूचित करना कि तुम उनका मत (विचार) बदलने आये हो। जिसका नतीजा यह निकलेगा कि तुम्हे कई विरोधियो

से सामना करना पड़ेगा जिनसे तुम्हें एक तरह की युद्ध का तयारी करनी पड़ेगी।

अनुभव ने बताया है कि साधारण तौर (तराके व नमून से) किसी के भी विचार बदलने तमाम कठिन हैं। फिर क्यो अकारण हा एसा तरीका अपनाकर बात को और भी कठिन बनायें।

अगर कभी भी अपनी बात सच्ची साबित (प्रमाणित) करनी है तो दूसरो को ऐसे तरीके से बताने की क्या आवश्यकता (जरूरत) है दूसरे को *यह मालूम नही पड़ना* चाहिये कि *तुम कुछ बात प्रमाणित करना चाहते* हो। वह तुम्हारी बात तुम्हे ऐसी चतुराई व चालाकी से प्रमाणित करनी चाहिये कि जसे दूसरे लोग ऐसा न समझें कि तुम उनकी बात को नीचा कर अपनी बात का ऊँचा करना चाहते हो। प्रसिद्ध नानी लाड चेस्टर फील्ड अपने पुत्र को शिक्षा दत हुए इस तरह कहता है —

'Be wiser than other *people if you can but donot tell* them so यानि कि अगर हो सके तो दूसरो से अधिक बुद्धिमान बनो पर दूसरो को ऐसे न बताओ।

वास्तव म जो सचमुच अधिक जानकार हैं उन्हाने स्वय को हमेशा (अनजानो) अजानकार की पक्ति म ही रखा है। ऐसे उदाहरण मैं तुम्हे कई अनेक बता सकूगा। प्रसिद्ध (Socrates) सुकरात ने अपने चेला (शिष्यों) को बार बार ऐसा इस तरह कहा है कि 'One thing only I know and that is that I know nothing यानि कि सिफ एक बात मैं जानता हू *वह यह है कि मैं कुछ भी नहीं जानता हू।*

वास्तव मे उपरोक्त कहावत उनके *Inexhaustible* (खत्म न हाने वाला) अथवा ज्ञान की निशानी है मैं भी हमेशा अधिक पढते लिखत अपने आपको भूलवान ही समझता आ रहा हू। क्योंकि मैं नानी सुकरात से अधिक होशियार (चतुर) नही हूँ और इसीलिये यह हिदायत मैं तुम्हें करना चाहता हू

उपरोक्त वास्तविकता पढने के बाद तुम्हारे दिल में यह सवाल पैदा होगा कि दूसरा अगर सचमुच गलत है तो उसको भी गलत नहीं कहना चाहिये क्या ? मेरा जवाब है हां पर उसे भी सीधा गलत नहीं कहना।

बेहतर ऐसे होगा कि अगर (उन्हें) उसे निम्नलिखित (रूप) तरीके से ठीक करने की कोशिश करें क्या ?

आप की बात हालांकि सही हो सकती है और मेरी गलत, क्योंकि मैं कभी कभी गलत भी रहा हूं आओ तो हम सवाल को मिलकर सोचे 'यकीनन ये तुम्हारा निम्नलिखित व उपरोक्त वार्तालाप दूसरे पर जादू जैसा प्रभाव डालेगा।

मैं गलत होता रहा हूं आओ मिलकर जांच करें,' कौन इस जमीन के ऊपर (तख्त पर) पैदा हुआ होगा जो तुम्हारे ऐसा कहने पर कि मैं गलत होता रहा हूं आपत्ति उठा सकेगा ?

एक वैज्ञानिक से भेंट (मुलाकात) की गई उससे पूछा गया कि उनके जो भी प्रयोग (Experiments) हैं वे क्या प्रमाणित करते हैं ? जवाब दिया गया उनके शब्दों में लिखता हूं A Scientist never tries to prove anything he attempts only to find the facts' कहने का अर्थ यह है कि कोई भी वैज्ञानिक कुछ भी प्रमाणित करने की कोशिश नहीं करता है पर सिर्फ वास्तविकताएँ मालूम करने की कोशिश करता है वैज्ञानिकों जैसा आदर्श रखने में तुम्हें छोडकर 'तुम्हें कोई रोक सकता है क्या ? याद रखो कि तुम कभी भी कठिनाई में नहीं आ सकते अगर तुम मान लो कि तुम भूलवान हो सकते हो। ऐसा करने से सब जिद खतम हो जायगे।

तुम्हारे इस तरह विचार प्रकट करने से दूसरे लोग भी तुम्हारी तरह आजाराना विचार दिखाने की कोशिश करेंगे कि वे भी भूलवान हो सकते हैं।

सिर्फ अपने दिल में यह महसूस करो कि अगर दूसरा सचमुच भूलवान है और तुम उसे सीधे तौर तरीके से उसे भूलवान समझाते हो ? तो फिर

उसका नतीजा क्या निकलेगा ? नतीजा यह निकलेगा कि तुम हमेशा उसकी आख मे किरकरी की तरह रहोगे और वह कही न कही तुमसे बदला लेने की कोशिश करेगा ।

इस दुनिया म बिल्कुल थोडे लोग हैं जो Logician तर्क के अनुसार समझने वाले हैं नही तो अक्सर लोगा के दिलो पर सिर्फ एक तरफ के विचार हैं उनके दिलो पर हमेशा ईर्ष्या (जलन) शक डर प्रतिद्वन्दिता अपनापन, अभिमान रहता है अधिकतर शहरवासी कभी भी ऐसे नही चाहेंगे कि उनके इन विचार धार्मिक राजनीति सामाजिक या किसी और विषय पर जो पहले से ही मजबूत हैं उसे बदला जाय इसलिये हमेशा ध्यान रखना चाहिये कि उनके विचारो के विपरीत आपने अगर अपनी कुछ राय प्रकट करने म कितना न खतरा है । एकदम से उनको (उन्हे) यह कहना कि तुम जिन विचारो मे ग्रस्त हो वह गलत है या तुम गलत हो,' यह कितना न दूसरे के जज़बात को अप्रसन्न करेगा ।

इन्सानी स्वभावानुसार अगर हम जब भूलवान हैं तब चुपचाप म अपने आप स खुद सच्च बोल सकते हैं । या अगर हम कोई चतुराई से समझाता है तो हम उसके आगे गलती स्वीकार करने मे गर्व महसूस कर सकते हैं पर कोई मुँह पर फककर बोल देता है कि 'तुम गलत हो' तो हमारी अप्रसन्नता सीमा स बाहर निकल जाये ।

कुछ समय स लेकर मैंने यह अपने आप से प्रण कर लिया है कि कभी भी कही अपने वार्तालाप म ऐसा नहीं कहूगा कि 'यकीन है मैं सही हू मेरा कहना अगूठी पर लगे (पत्थर) नग के समान है वगरह वगैरह ।

वार्तालाप मे भी तरीका ऐसा रखना चाहिये ताकि हर जगह स्वागत और थोडा अस्वीकारपन (असहमति) मिल सके ।

अपने विरोधियो को भी कभी गलत (समझने) कहने (करने) की कोशिश नहीं करनी चाहिये । ईसाईयो के पैगम्बर Christ ईसा मसीह ने अपने शिष्यों

ने यह शिक्षा दी है—Agree with thine adversary quickly यानि अपने दुश्मन से एकदम सहमत हो जाओ।

व्यापारी दुनिया मे कभी भी ग्राहक को ग़लत कहने की कोशिश नही करनी चाहिये। अमरीका के प्रसिद्ध व्यापारी जान वाना मेकर की प्रसिद्ध कहावत है कि Customers are always right' ग्राहक हमेशा सही है (जो कहते हैं। (उसे ठीक मान लेना चाहिये) व ठीक कहते हैं।

यह कहावत दुनिया भर मे प्रसिद्ध है जिसे सभी बुद्धिमानी व्यापारी अभ्यास मे ला रहे हैं।

इस हिदायत का तात्पर्य यही है कि किसी को भी ग़लत कहकर छेडने की कोशिश न करो फिर चाहे वह तुम्हारे परिवार का सदस्य, दोस्त या ग्राहक हो। दूसरे की गलती अगर सुधारना चाहते हो तो बुद्धिमत्ता (अक्लमन्दी) से काम लो जो ऊपर लिख चुका हूँ इस पर पूरी तरह अमल कर अनुसरण करो।

तुम्हारा पिता

कठिनाइयो का कैसे मुस्कराकर सामना करें

प्रिय पुत्र,

(11)

ग्यारहवी हिदायत मेरी तुम्हे यह है कि कठिनाइयो का मुस्कराकर कैसे सामना करें कोई भी कुछ कठिनाई सामने आये तो मुस्कराकर सामना करना चाहिये कठिनाइयो को अपने सामने देखकर घबरा जाना एक बडी भारी भूल है। कठिनाइयो को समझने के लिये निम्नलिखित दो वास्तविकताएँ ध्यान मे रखनी जरूरी हैं।

(1) हर एक इन्सान के जीवन के भविष्य मे कठिनाइयो का आना एक साधारण सी बात है हर एक उन्नति करने वाले इन्सान को किसी न किसी कठिनाई का हमेशा सामना करना पडता है।

उसका नतीजा क्या निकलेगा ? नतीजा यह निकलेगा कि तुम हमेशा उसकी आख मे किरकरी की तरह रहोगे और वह कही न कही तुमसे बदला लेने की कोशिश करेगा ।

इस दुनिया म बिल्कुल थोडे लोग हैं जो Logician तक के अनुसार समझने वाले हैं नही तो अक्सर लोगा के दिलो पर सिर्फ एक तरफ के विचार हैं उनके दिलो पर हमेशा ईर्ष्या (जलन) शक डर प्रतिद्विन्दता, अपनापन अभिमान रहता है अधिकतर शहरवासी कभी भी ऐसे नही चाहेगे कि उनके इन विचार धार्मिक, राजनीति सामाजिक या किसी और विषय पर जो पहले से ही मजबूत हैं उसे बदला जाय, इसलिये हमेशा ध्यान रखना चाहिये कि उनके विचारो के विपरीत आपने अगर अपनी कुछ राय प्रकट करने म कितना न खतरा है । एकदम स उनको (उन्हे) यह कहना कि तुम जिन विचारो मे ग्रस्त हो वह गलत है या तुम गलत हो यह कितना न दूसरे के जजबात को अप्रसन्न करेगा ।

इन्सानी स्वभावानुसार अगर हम जब भूलवान हैं तब चुपचाप मे अपने आप से खुद सच्च बोल सकते हैं । या अगर हम कोई चतुराई स समझाता है तो हम उसके आगे गलती स्वीकार करने मे गव महसूस कर सकते हैं पर कोई मुँह पर फेंककर बोल देता है कि तुम गलत हो' तो हमारी अप्रसन्नता सीमा से बाहर निकल जाये ।

कुछ समय से लेकर मैंने यह अपने आप से प्रण कर लिया है कि कभी भी कही अपने वार्तालाप म ऐसा नही कहूगा कि 'यकीन है, मैं सही हू मेरा कहना अगूठी पर लगे (पत्थर) नग के समान है वगरह वगैरह ।

वार्तालाप म भी तरीका ऐसा रखना चाहिये ताकि हर जगह स्वागत और थोडा अस्वीकारपन (असहमति) मिल सके ।

अपने विरोधियो को भी कभी गलत (समझने) कहने (करने) की कोशिश नहीं करनी चाहिये । ईसाईयो के पगम्बर Christ ईसा मसीह ने अपने शिष्यो

को यह शिक्षा दी है—Agree with thine adversary quickly यानि अपन दुश्मन से एकदम सहमत हो जाओ।

व्यापारी दुनिया म कभी भी ग्राहक को गलत कहने की कोशिश नही करनी चाहिये। अमरीका क प्रसिद्ध व्यापारी जान वाना मेकर की प्रसिद्ध कहावत है कि 'Customers are always right' ग्राहक हमेशा सही है (जो कहत हैं। (उसे ठीक मान लेना चाहिय) व ठीक कहते है।

यह कहावत दुनिया भर म प्रसिद्ध है जिस सभी बुद्धिमानी व्यापारी अभ्यास म ला रहे हैं।

इस हिदायत का तात्पय यही है कि किसी को भी गलत कहकर छेडने की कोशिश न करो फिर चाह वह तुम्हारे परिवार का सदस्य, दोस्त या ग्राहक हो। दूसरे की गलती अगर सुधारना चाहत हो तो बुद्धिमत्ता (अक्ल म दी) से काम लो जो ऊपर लिख चुका हू इस पर पूरी तरह अमल कर अनुसरण करो।

तुम्हारा पिता

कठिनाइयो का कैसे मुस्कराकर सामना करें

प्रिय पुत्र,

(11)

ग्यारहवी हिदायत मरी तुम्ह यह है कि कठिनाइयो का मुस्कराकर कसे सामना करें कोई भी कुछ कठिनाई सामन आये तो मुस्कराकर सामना करना चाहिये कठिनाइया का अपने सामने देखकर घबरा जाना एक बडी भारी भूल है। कठिनाइयो को समझन के लिय निम्नलिखित दो वास्तविकताएँ ध्यान म रखनी जरूरी हैं।

(1) हर एक इ सान के जीवन के भविष्य म कठिनाइया का आना एक साधारण सी बात है हर एक उन्नति करने वाले इसान को किसी न किसी कठिनाई का हमेशा सामना करना पड़ता है।

(2) कठिनाई से अधिक खराब बात है अस्थिरता, जब कठिनाई से सामना न करने की कोशिश की जाती है तब पीछे हटना पड़ता है। दिल म इसका यह पक्का फसला करना चाहिय कि पीछे हटना है या मद होकर सामना करना है।

तुम्हारे सामने आइ हुई कठिनाईयो म सफलता या असफलता पूरी तौर तुम्हारी स्थिति पर आधारित है कि तुम इन कठिनाईयो का किस तरह सामना करना चाहते हो। इस दुनिया म जवाबदारियां (उत्तरदायित्व) और बोझ सभी इन्सानो के लिये लाभदायक हैं (फायदे वाले हैं) और इन्सान यह सब सिर्फ अपने जीवन के अन्त म ही महसूस कर सकेगा।

वास्तव म ये उत्तरदायित्व (जवाबदारियाँ) और बोझा ही ह जो इन्सान को मौका देते हैं कि अपने जीवन म दृढ़ होकर मुकाबला कर खुद को सुशोभित करो और अगर किसी के सिर पर उत्तरदायित्व या बोझ नही होगा तो उसे कठिनाइयो से मुकाबला कर खुद को सुशोभित कर गव से मुह ऊचा उठाने का मौका मिल सकेगा क्या ?

व्यापार भी एक हमेशा का युद्ध और हमेशा की प्रतिद्विन्दता है जिसम हमेशा की (प्रतिद्विन्दता) और कई रुकावटे सामने आती हैं। व्यापार मे सफलता प्राप्त करने के लिये कभी भी सरल माग मिल नही सकेगा। अगर कोई भी सरल माग मिल जाता है तो वह एक असफलता की ओर ले जाता है इसलिये यह याद रखना जरूरी है कि सफलता का रास्ता हमेशा कठिन रहता हैं और अगर सफलता चाहेग तो इसी कठिन रास्ते से ही चलना पड़ेगा। हर सफलता परिश्रम (मेहनत) से प्राप्त की जाती है हर सफल आदमी कुछ न कुछ युद्ध (प्रतिद्विन्दता कर) कर इस दुनिया म सफल होता है और अगर इसी बात को अधिक (तपास) जाँचना हो तो दुनिया मे जो भी सफल हुए हैं उन से बात कर देखो और उनके अनुभव उनसे जाकर पूछो।

दुनिया की चाल बिल्कुल निराली है प्रकट रूप म तुम्हे ऐसा देखने म आयेगा कि जो इस दुनिया मे मुहँ ऊपर रखना चाहते हैं उनको मिल

पर गिराया जाता है। इसलिये हर एक सफलता प्राप्त करने की चाहना रखने-वाले नौजवान को दुनिया मे मुँह ऊँचा रखने के लिय सख्त मुकाबले के लिय खुद को मजबूत और तयार रखना जरूरी है।

सफलता प्राप्त करना कुछ आसान काम या साधारण बात नही। साधारण या आसान बात अगर कुछ इस दुनिया म है तो वह है असफलता।

असफलता के लिये किसी को भी कोशिश नहा लेनी है इन्सान कोई भी भूल कर जल्द असफल हो जाता है पर अगर कुछ कोशिश लेनी है तो वह है सफलता प्राप्त करने के लिये, इसीलिये कितने ही बुजुर्गो से समय समय पर हिदायतें मिलती रहती हैं और स्कूलो का प्रबंध भी किया गया है।

दुनिया म सफल व्यक्ति गिनती म तमाम थोड़े ह और वे पहली कठि-नाइया का सामनाकर इन्ही कठिन रास्ता से गुजर फिर ही पार पहुँच कर अपनी मंजिल तक आये है या अभी तक भी कठिनाइयो को मजबूत इरादे से सामना करते रहे हैं उनकी सख्या (अन्दाज) थोडी, इसलिये है कि सभी लोग इन्हीं कठिन रास्ता पर चलना नहीं चाहते।

लोग भी वृक्षो (पेडो) समान है एक हजार पेडा म सिर्फ एक पेड होगा जिसने अपनी ऊचाई पूरी सीमा तक पाई होगी। नहीं तो दूसरे पेड किसी कारण वश उखड जाते है वह उसी ऊचाई पर तब पहुँचा होगा जब सभी किस्म के तूफानो का सामना (मुकाबला) किया होगा। अगर उसी पेड को किसी शीशे या काच के खोल म बन्द कर बोया गया होता तो समझते हो कि वह बढ़कर इतनी ऊचाई पर पहुँच सकता था ?

इन्सान का जीवन भी पेड के समान है अगर तूफानो का (कठिनाइयों) का इन्सान सामना नही करेगा तो पूरी ऊँचाई पर कैसे पहुँच सकेगा ?

कठिनाईयों वास्तव म इन्सान जात की मित्र हैं इन कठिनाइयो म हम अपने जीवन म कितना ही समझ सकते हैं।

इ सान का दिमाग शरीर की नसो क समान है। जसे शरीर क नसो से काम लना जरूरी है इसलिये दिमाग से भी काम लना जरूरी समझना चाहिये। दिमाग से जब काम लेंगे तब दिमाग की वेन्टर हो सकगा कठिनाइया ही इ सान को दिमाग दौडाने के लिये मजबूर करती हैं।

जसे सोने की परख कसौटी पर की जाती है वसे दिमाग की परख तब सिफ कठिनाईया म की जाती है अगर कोई भी अपनी कठिनाईयो का (सामना कर) पार कर गया तो उस शुद्ध सोने जसा समझना चाहिये।

धनवाना के बच्चे आम तरह कमजोर समझने म आते हैं क्योकि वे प्रसिद्ध कहावत के अनुसार मुह म चाँदी का चम्मच लेकर पदा होते है वास्तव मे उन पर रहम खाना चाहिये। जो उ हें इस दुनिया म मजबूत होने (बनने) के लिये कोई मौका नही मिल सका है।

बुद्धिमान पिता हमेशा पुत्र को अपने कारोबार को सौंपने (का किल व लगाम देने) से पहल आजमायश म डालता है उसके बाद ही उसे काम सौंपता हैं पर ऐसे पिता कितने ? याद रखो कि कठिनाइया को लाघ कर (पारकर) ही व्यक्ति जुडता है यह वास्तविकता शुरू से ही चली आ रही है और इसके बाद भी चलती जायगी। पेड को शायद इतना मजबूत तना नही मिल सकता था अगर उस तूफान व आँधियो का सामना न करना पडा होता। खरगोश भी कूद कर खुद को निकालकर ले जाने की कला सीख नही सकता था अगर उस कुत्तो लोमडो का विचार न आया होता।

इन्सान कपडा व घर बनाना भी सीख नही सकता था अगर उसे ठण्ड पडने वाले देशो म रहना न पडता। इसी तरह व्यापारी भी धन कमाने की कला नही सीख सकते थे अगर उन्ह इस दुनिया म प्रतिद्वि दता (काम्पीटीशन) और दूसरी कठिनाईयो का सामना न करना पडा होता।

इससे पहले दुनिया मे इतनी कठिनाइयाँ और उलझने पदा नही हुई थी जसे ही वे अधिक पदा होते जा रहे ह वसे ही चटरता जसी बीमारियाँ (होशियारिया) बढकर आम जीवन को और भी कठिन बनाती जा रही हैं।

फिर जस व्यापार बढता है उसी तरह कठिनाईयां भी बढती रहती हैं अगर कठिनाइयों का सामना करन के लिय शीघ्र पग करेंगे तब ही व्यापार बढ़ा सकगे।

अपन भविष्य म हमेशा भरोसा रखना चाहिय। और दिल म एसे ही समझन की कोशिश करना चाहिय कि हमारी भविष्य की उन्नति अभी इसक बाद म आने को है न कि जो समय बीत चुका है।

समझदार व्यापारी को कठिनाइयो का हमेशा स्वागत करना चाहिये उन्ही कठिनाईयों का अभ्यास करना और करन के बाद ही वह अपना रोजगार बेहतर कर सकेगा।

सच पूछो तो इन्सान का दर्जा जाचा जा सकता है उनके सामने आई हुई समस्याओं से नीचे दर्जे वाले लोगो के सामन थोडी और छोटी समस्याएँ आती हैं और उच्च दर्जे वाले के लिय अधिक और बडी समस्याएँ।

इन्सान का उत्तरदायित्व (जिम्मेदारियाँ जवाबदारियाँ) ही उसके लिए दोस्त हैं शुभ चिंतक हैं सदभावी हैं यह एक वास्तविकता है पर कितने हैं एसे लोग जो यह बात महसूस करते हैं ? अभी किसी पर कुछ थोडी कठिनाई या जिम्मेदारी आ पडी तो उसका मुँह ही उतर जायगा और खुद को दुर्भाग्य शाली समझता रहेगा मैं समझता हूँ कि समय आया है कि अब एस विचारो म जल्द परिवर्तन आएगा।

मरी तुम्हे सख्त हिदायत (ताकीद) है कि किसी भी कठिनाई को एक जिम्मेदारी समझ मुस्कराकर सामना करो। और एसा न समझने की कोशिश करो कि भारी बोझा आकर गिरा है याद रखो यह दुनियाँ बहादुरो के लिय हैं न कि कमजोर व बुझदिलो के लिये।

मरे स अगर सभी जवानो के लिये सन्देशा लिया जाय तो मैं उन्हे निम्नलिखित शब्दों म उन्हे बताना कि — जीवन की जिम्मेदारियो का मुस्कराकर सामना करो और यही जिम्मेदारियाँ व जवाबदारियाँ ही हैं जो तुम्हें भविष्य म सुखी रख सकगी।

तुम्हारा पिता

अधिक सीखने की कोशिश करो।

प्रिय पुत्र (12)

बारहवां हिदायत मेरी जो तुम्हारे लिये है कि अधिक सीखन की कोशिश करो एक बार की बात है कि एक युवक ने आकर मेरे से पूछा कि शब्दकोष Dictionary म सबस उपयोगी शब्द कौनसा है ? एक क्षण म ही मेरा उस जवाब मिला था कि वह शब्द है सीखना।

उपरोक्त उत्तर देने के बाद मैंने अपने आप स पूछा कि इसमे भी कोई बहतर जवाब (उत्तर) हो सकता था क्या ? पर बहुत विचार करने के बाद भी मुझे इसमे बेहतर शब्द न सूझा। कितना न छोटा शब्द और कितना न बडा अर्थ (मायना) इसम है।

ऐसा सोचना सचमुच भूल होगी कि सब कुछ हर एक को सिर्फ स्कूल म ही सीखना है। वास्तव म हर इन्सान को सीखना ही है स्कूल के बाहर। हर इन्सान को अपने रोजाना जीवन म शिष्य बनकर रहना है।

दुनिया हमेशा नये विचारो स भरी रहती है रोज नये विचार नये मत नये प्रयोग होते रहते है इन नये विचारों पर समझकर न ध्यान देना बुद्धिमता नही होगी।

कोई भी व्यक्ति इतने बडे दिमाग वाला हो नही सकता जो सब नये विचार अपने ही दिमाग से निकाल सके इसलिये उसे हर समय नये विचारो का अभ्यास करना ही पडेगा।

यह मुमकिन है कि कुछ नये विचार पुराने विचारों स बेहतर न भी हो सकें पर कई परिस्थितियो म कुछ बेहतर हो सकते हैं। यह नये विचार किन परिस्थतियो मे तुम्हारे पूरे कारोबार को बदल सकते हैं।

कोई भी समझदार व्यक्ति किसी भी नये विचारो को अकारण स्वीकार न भी करेगा तब भी यह चाहना रखेगा कि देखें तो सही कि नये विचार हैं कैसे ? अपने आगे दीवार (बनाने) देने की कोशिश कभी भी नही करेगा।

अभी की वतमान जबरदस्त प्रतिद्विन्दता वाले समय म हर व्यापारी शिक्षा प्राप्त Professional होना जरुरी ह इससे पहले चल हुए रिवाज के अनुसार अशिक्षाप्राप्त Ameteur व्यक्ति व्यापार म अधिक सफलता प्राप्त कर नहीं सकत ।

व्यापारी आदमी या कोई दूसरा भी जो सीखता है उतना अधिक बुद्धिमान होता है । थोडे ही सीखने क बाद दिल म घमण्ड बिल्कुल नही आगना चाहिये और एसे समझना नहीं चाहिये कि बस अब सीख कर सम्पूर्ण हो गया हू और अब इसके बाद अधिक सीख कर क्या करूँगा सीखने की सी म कभी भी सीमित नहीं है एक कहावत है 'जब तक जीवन है तब तक सीखते रहो इसम अतिशयोक्ति नहीं है ?

सीख कर घमण्ड बस सिर्फ वह ही करगा जिस की बिल्कुल थोडी शिक्षा होगा क्योकि थोडा शिक्षा अन्तर म घमण्ड पैदा करती है जितना आदमी अधिक शिक्षित होगा उतना और भी अधिक सीखने की कोशिश करता रहेगा ।

जाँच कर देखा तो जो सचमुच स्यिाणा व्यक्ति हैं उनको हमेशा कुछ न कुछ अभ्यास व सीखते देखा यह है स्यिाणा व्यक्ति की पहचान ।

हम व्यापार म रहकर शिक्षा लने की कभी भी कोशिश कर नही पा रह है जिसका नतीजा है कि जिस नतीजे पर व्यापार पहुचना चाहिय वहाँ तक पहुच नहीं सके हैं

हम म स कितन ही व्यापार म घुसन से पहल कुछ अभ्यास नहो करन की कोशिश करते फिर अन्धेरे म शुरू हो जाते हैं गुमराह होकर नुकसान पाकर मुसीबत म पड़ जाते हैं ।

हम दूसरो के प्रयोग व अनुभवो से भी कितना सीख सकत हैं वास्तव म बुद्धिमान व्यक्ति ने अपनी किसी आजमायश करन स पहल समय बचाने और अनुभव प्राप्त करने क लिय दूसरो का अभ्यास किया है उनका **जाँच कर देखना**

है हमारी उमर इतनी बढी नही है जा सब वास्ततिवताए अपने सर आजमा कर और इक्ट्ठी कर सके इसलिय उसे वितनी हा वास्तविकताए दूसर स्थानो से भी इक्ट्ठी करनी पडेगो।

यह एक वास्तविकता है कि चालीस साल की उमर वाला व्यक्ति पूरी तरह अभ्यास करना चाहे तो दूमरा के हजार वर्षो के अनुभव को अपने दिमाग म रख सकता है।

कई ऐसे व्यापारी हैं जिनका यापार तो बढ जाता है पर खुद नही बन सकते क्योकि जस जस उनका व्यापार बढता जाता है तसे तसे अधिक सीखने की कोशिश नही करत जिसका परिणाम यह निकलता है कि वे फिर अपना व्यापार नष्ट कर कम कर उस दर्जे पर पहुचा दत है जितनी उनम याग्यता है। ऐसे लागा के सामन एक समस्या पदा हो जाती है कि मैं अपन यापार का सामना ठीक कर बडा कर कसे करू।

इन्सान जब से लेकर सीखना बन्द करता है तब से उसे समाप्त हुआ समझना चाहिय। फिर वह सिफ खाली बुत रह जाता है।

अगर तुम्ह अपना कारोबार सीधे रास्ते पर लाना है तो उससे पहले तुम्ह खुद को साध रास्ते पर लाना पडगा यानि कि अपने आधीनस्थो को सिखान से पहल स्वय शिक्षा लेनी पडेगी। उसके बाद ही तुम अपने कारोबार को बेहतर दर्जे पर पहुचा सकाग।

इन्सान अगर शिक्षा Training लिया हुआ है तो वह शिक्षा उसके लिये अमूल्य, अकथ खजाना है जिसपर कोई करकार (टक्स) कर नही डाल सकती कोई भी इस खजाने को चुराकर या नष्ट नही कर सकता। व्यक्ति क्या है इसकी पहचान उसको ली हुई शिक्षा से हो जायेगी कि वह क्या जानता है और उसम क्या योग्यता है।

हम जब इस दुनिया मे पदा होत हैं तब अपने साथ खाली दिमाग ल आत हैं। इसक बाद ही अपने दिमाग को शिक्षा लकर भरने रहत हैं पर

बहुत कम 'लोग हैं इन्सान हैं जो अपने दिमाग को पूरी तरह भरकर यह लोक (दुनिया) छोड़ते है।

हम पूरी तरह शिक्षा न लेकर इस दुनिया में अपनी दिमागी ताकत, इरादा शक्ति, (Will Power) और दिल की ताकत मनोबल व्यर्थ गवा देते हैं। जो शक्तियां हमे व्यर्थ बिल्कुल नही गवानी चाहियें।

जिस इन्सान के दिमाग में सिर्फ एक नया विचार है वह शिक्षा लेने से दस नये विचार अपने दिमाग मे पैदा कर सकता है और जिसको सिर्फ एक दोस्त है वह दस दोस्त प्राप्त कर सकता है।

वास्तव में हम अपने दिमाग से जितना काम लेना चाहिये उतना नही लेते। सभी शक्तियाँ (ताकतें) व्यर्थ गवाई जा रही है।

एक व्यक्ति जिसे जितनी तनख्वाह मिल रही है उसमे ही खुश है पर क्या मालूम जो काम वह कर रहा है उसे अधिक अभ्यास करने से बेहतर कर अपना दर्जा बढा सके।

दूसरा व्यक्ति सिर्फ अपनी दाल रोटी कमाता है पर क्या खबर (मालूम) कि अधिक अभ्यास करने से खुद को सुखी करने के साथ दूसरो को भी सुखी कर सके।

पर सवाल यह है कि आजकल ऐसे कितने लोग हैं जो मन के अन्दर झांककर देखते हैं कि खुद जो काम कर रहे हैं उसे अधिक अभ्यास कर योग्यता व उन्नति पर पहुँचाये ? ऐसा न महसूस करने से कितनी अपनी शक्तियाँ हम व्यर्थ गवा रहे हैं ?

इन सब बातों में हर एक को अपनी ही कोशिश लेनी है दूसरे पर विश्वास कर उस विश्वास के आधार पर बैठकर रहने से कुछ नही होने का है।

किसी भी इन्सान को अधिक व (Seystematically Training) तरीके युक्त शिक्षा लेने में भला नुक्सान ही क्या है ? मुझे तो एक भी ऐसा आदमी नहीं सूझता जिसने अधिक शिक्षा लेकर पछताया हो। पछताने को भला उसे कारण ही क्या है ?

इन्सान अधिक शिक्षा (लेकर) प्राप्त करने से अपना जीवन वास्तव में दुगना अच्छा कर सकता है शिक्षा लेने के बाद वह अपनी शारीरिक व दिमागी ताकत को बढ़ाकर दुगना अच्छा कर सकता है शिक्षा लिए इन्सान का दिमाग बिना शिक्षा लिए इन्सान के दिमाग से दुगना हो सकता है।

जानकार लोगों की राय है कि हर एक इन्सान के दिमाग में पाँच अरब (Cells) यानि सूक्ष्म भाग हैं पर साधारण तौर पर उनसे तमाम थोड़ा काम लिया जाता है।

देखा गया है कि जितना हर एक इन्सान को सीखना चाहिये उसके विपरीत जो वह सीखता है इसकी तुलना अगर हम उस मोटर कार से कर सकें जिसमें कितना सारा स्थान होने पर,भी सिर्फ एक साबुन की टिकिया जितना बोझ (समान) लादा गया है कितना न अनिष्ट।

जब किसी समय इन्सान के सामने कठिन समस्याएँ आती हैं उस वक्त तो उसके लिये सीखना तमाम जरूरी है इन्सान खाली दिमाग से कैसे कठिन समस्याओं का समाधान कर हल कर सकेगा ? कठिनाइयों के समय व्यक्ति को खुद का अनुभव और दूसरों के अनुभव जाँचकर अच्छी तरह अभ्यास कर कठिनाइयों का सामना करना चाहिये।

सीखने के कई तरीके हैं एक तरीका यह है कि अपने खुद के काम में हाथ डालकर अनुभव प्राप्त करें, यह तरीका सीखने का तमाम महंगा व कठिन है आसान रास्ता यह है जिन लोगों ने अपने पहले अनुभव प्राप्त किया हैं उनके नतीजों का अभ्यास किया जाय बहतर तरीका यह है कि उन की लिखी हुई पुस्तकों के (रास्ते) माध्यम से ऐसा अभ्यास करें पुस्तकों द्वारा अभ्यास करने जैसा दूसरा सरल और सस्ता रास्ता या माध्यम नहीं।

तुम्हारा पिता

किसी भी बात में अधिक उलझना नहीं चाहिये

प्रिय पुत्र, (13)

तेरहवी हिदायद मेरी यह होगी कि, किसी भी बात म अधिक उलझकर चिंता म डूबकर रुक नही जाना चाहिय। कई बार देखा गया है कि कितनी बातो म किसी को राय देन के लिये तमाम अधिक सोच विचार किया जाता है। हालाकि जल्द बाजी वाली राय देना भूल है पर हर बात म सिफ अधिक सोच विचार कर डूबने की आदत करन वाली नीति कायवाहित करना कितनी हालतो म नुकसान कर हैं।

आज सैकडो फर्मे मौजूद हैं। जिनके चलाने वाले सिफ इतजार कर रहे हैं कि कब दुनिया की हालत सुधर कब भाव गिर कर कम हो जायें, कब (अवस्थाए) हालतें सुधरकर अनुकूल हो जायें फिर कुछ कदम लिये या उठाए जायें। रात दिन बहुत कुछ कारण बताकर जाते हैं हर बात म सोच मे डूब जाने के लिय एसे ही उनके हाथो म स कीमती समय निकल जायेगा।

एसे कई नजर आयेंगे जो अपन को बुद्धिमान समझ बैठे हैं वक्त की प्रतीक्षा म वास्तव म उनके दिलो पर हमशा हैरानी और परेशानी मौजूद रहती है और वे हमशा सिफ (आशाए) उम्मीदें रखकर अपने आपको घसीटते हुए देखे जा सकेंगे।

एसे सोच मे डूबने वाले उलझे हुए इसान को हालाकि कई जरूरतें घेरे रहती हैं पर वे अपने दिल को यह कहकर तसल्ली दे रहे है कि यार यह समय अनुकूल नही दिशायें ठीक नही हैं इस समय अगर कुछ काम शुरू किया तो अधिक नुकसान हो जायेगा।

ऐसे लोग अपने भविष्य के लिय एक किस्म की अडचनें रुकावटें हैं वे ज्योतिषि बनना भी नहीं चाहते जो यह बता सकें कि भविष्य मे क्या होने वाला है पर सिफ हाथ बाधकर शात कर बठे हैं।

एसे डरपोक लाग कई मौजूद हैं जिसे डर की एक किसम की बीमारी लगी रहती है जो दूसरी कई बीमारियो स अधिक खतरनाक है।

हमम से कितन ही इसी बीमारी का मनोवृति धारण कर अपनी ताकत, अपना यकीनीपन, राय (मत) देन की शक्ति (भूल जाते हैं) खो बठते हैं।

'ठहरो और ठहरो वाली नीति काम म लाकर कभी भी अधिक लाभ मिलन का नही है सिफ समय का ही नुकसान होता रहेगा। यार मौके को आने दो इस नीति का पालन आत्महत्या है इसी नीति का पालन करने के कारण अब तक कितने ही शहर और व्यापार नष्ट नाबूद हो रह हैं।

जो लोग आने वाल बडे मौके के लिय ठहर कर इन्तजार करत हैं व यह अजीब स्वभाव का पालन कर उसी मौके के' आने पर खुद को तयार कर नही सकेंग। और यह मौका खोकर फिर दूसर मौके क लिये रास्ता न बनाकर भी इन्तजार करते रहग मतलब यह है कि एसा अजीब मनोवृति का पालन कर वे अस्थिर व दुबल हो गय हैं। उनका स्वभाव हमशा (डरन वाला) भयभीत रहता है और हर बात म जायेंग ढील न्ते।

एक शब्द है जो हालाकि किसी भी कारखाने के (किसी भी चिट्ठे) Balance Sheet म लिखा हुआ नही है तब भी एक शब्द हमम से कईयो को हजारो रुपया के नुकसान क नीचे ले आया है यह एक शब्द और भी कई तरह के रूप व नमूनो म मौतमार ही प्रमाणित रहा है। वह अजीब शब्द है DELAY देर।

किसी भी बात म जान बूझकर देर करना इसका मुख्य कारण है अन्दर का डर बात की अजानकारी, सुस्ती व दिल की कमजोरी हर एक बात म देर करन के कारण रोजाना हर एक का कितना नुकसान होता रहता है यह उन्ह पता नही लगता ह।

हर एक व्यक्ति व हर एक दुकानदार के सामने कई और कितनियाँ ही Undedcided बग र निणय की हुई बातें मौजूद रहती हैं जिमको आधे म

हाँ छोड़ने म सचमुच कोई भी कारण नही एसी बातो का फ सला (निर्णय) जल्द लेना बिल्कुल जरूरी है ऐसे लोग हमेशा यह कहते हुए सुने जायेंगे 'पर' हालांकि' ठहरो तो देखें 'होगा' शायद 'हो सकता है वर्ग रह वग़ रह।

वे इस विचार के होते हैं कि हमेशा ऐसा काम करें जिस म शत प्रतिशत सलामती हो ताकि किसी काम म नुकसान न पड जाये। ऐसे विचार रखने म वे गलती करते है। (योग्य) काबिल व्यक्ति तुम्हें बता सकेंगे कि एसी *सलामती* ढूंढने स ऐसा काम करना ही व्यय है बेकार है। क्योंकि अगर फायदा (लेना है) ढूंढना है तो कुछ खतरा भी लेना है।

कितने ही सेठ व हिस्सेदारो के मध्य म कारखाने को बढ़ाने और सुधारने का बातें चलती है पर इसी सोच म डूबने वाली DELAY ढील नीति के स्वभाव का पालन होने के कारण वे सब योजनाएँ (कार्यवाहियां) अमल मे आने के बिना ही रह जाती है यह हिलने म ठहरने वाली नीति सिर्फ एकाध फर्मो म नही है पर कितने ही फर्मो मे मौजूद है। जिसका नतीजा यह एक ही है वह यह है कि जितनी कारखानो मे तरक्की होनी चाहिये उतनी नही हो सकी जो सचमुच होनी चाहिये। एसो की (दशा) हालत हमेशा ऐसे ही नजर आयेगी जसे कि वे थके हुये है वास्तव म दुकानो म काम करने वाले थक हुए नही हैं पर उनको चलाने वाले थक हुए हैं। यह थकावट शारीरिक थकावट नही पर दिली थकावट है।

दिल की थकावट शारीरिक थकावट से अधिक खराब है शारीरिक थकावट कई तरह स दूर की जा सकती है पर इस दिल की थकावट का इलाज खुद के सिवाय दूसरा कौन कर सकता।

ऐसा नही है कि कितने ही व्यापारियो को कठिनाइयां इसीलिये पैदा होती हैं कि प्रबन्धक दिमागी तौर से दुखी होते हैं जो बठे दिन गिनते और समय बिताते है।

कुछ व्यक्ति दूसरो हर तरह योग्य हैं पर वे अपने व्यापार को बढ़ा नही सकते जिसका मुख्य कारण यह है कि व अपना दिली इरादा छोड़ नही सकते

और अपना समय मिफ थाता और नफे नुक्सान की अधिक गिनती लगान म व्यय गवाते हैं।

ऐसे इ सान रायत कमीशन के मिसाल हैं जो सिफ गवाहियां लने, अधिक ध्यान दकर सुनने मे समय व्यय गवाकर पर अमल करते ही नही है ऐसे लोगो के सामने सिफ सवाल हो जात हैं पर जवाब ढूढने पर भी नही मिलते, कर वाद विवाद करेंगे पर नतीजा निकालता ही नही।

एमे लोगा पर रहम (दया) खाने का कोइ कारण नहीं होगा अगर एक दिन यह सुना जाय कि वे बेचारे अपन जीवन क खल म शिकस्त खाकर शान्त हो कर बठे हैं।

जो व्यक्ति रात व दिन एसे सोच विचार म आधारहीन लिप्त रहत हैं उनका क्या हाल होगा अगर उस किमा फुटबॉल टाम का रेफरी बनाकर खड़ा करें जहाँ उसे नब्बे 90 मिन्टो म तीन सौ निणय करने पड़े ?

कई ऐसे लोग भी हैं जो किसी बात म न तो हाँ कहेंगे न हा नहीं कहेंगे। उसम वे अपनी बुद्धिमता और सलामती समझते है वास्तव म वे एसा कर अपने आप को अपन व्यापार को ठग रहे हैं पर वे कितना समय एसा ठगत व ठगाते रहेंगे ?

कई बार तुमने कई लोगो की जुबान स खुद को पीछा छुडान के यह शब्द सुने होग — आज नहीं फिर दूसरी बार कभी विचार करेंग मुझे विचारने का मौका व समय दो दश रह कम रह यह सब टालने की बातें हैं एस कामो मे देर DELAY करने के अनेक नमूने और वाक्य याद कर रखे हैं और इसमे व अपने को (बुद्धिमानी) से टालकर चालाक समझते है इस किस्म की झिझक अलकमन्दी वाली नही समझनी चाहिये यह झिझक एक बनावटी अक्लमन्दी (बुद्धिमता) है जो दिल की ताकत को हमेशा के लिये गुम कर देती है एस किस्म की झिझक अयोग्यता की निशानी है

मैं इसी विचार का हू कि बेहतर होगा अगर किसी बात के लिये अपनी

राय या विचार प्रकट कर भले गलती कर डालते इससे तो विल्कुल विचार ही प्रकट न करना चाहिये। विचार न प्रकट करने के कारण विचार देने की ताकत व शक्ति गुम हो जाती है। आज की बातो का निणय (फैसला) दूसरे दिन पर रखने की क्या जरूरत है आज का फसला आज ही होना जरूरी है दूसरे दिन फिर दूसरे फैसला के लिये खुद को तैयार रखना चाहिये एसी तरह जल्द फमला (करने पर) हाने पर शायद भूल कर डाला पर यकीन समझो कि इन्हीं हुई भूलो का नुकसान लाभ के अनुपात म बिल्कुल न के बराबर होगा।

काम का चलाते हुए चलना चाहिये यह बहतर होगा शान्ति से वैठकर चुपचाप चिन्ता म डूबकर मग्न होने से। हर एक बात म जल्दी फसला डालने की खुद मे आदत डालनी चाहिये।

मुझ व्यक्तिगत रूप से जानकारी है कि कई लोगो को कितने ही नये विचार दिलो म मौजूद हैं पर भय व सोच म मग्न हाकर डूबने वाले स्वभाव हाने के कारण व अपने विचार योजनाएँ (कायवाहित) अमल व अभ्यास म ला नहीं सकते। मान लीजिये कि भाजन मौजूद होते हुए भी न भोजन करना।

इसलिये मेरी तुम्हें यही सलाह है कि किसी भी योजना को अमल म लाने के लिये कभी भी समय न गवाओ अपने दिल मे जल्द फैसला कर लो कि तुम्हे क्या करना है तुम्हारे व्यापार मे जो तुम्हारे प्रतिद्विन्दी हैं उनको छोड दो कि भले ही वे सोच मे डूबकर मग्न रहकर बैठे रह तुम, हमेशा आगे के लिये कदम बढ़ाते रहो।

तुम्हारा पिता

अधिक साहसी बनकर मजबूत बनो

प्रिय पुत्र, (14)

चौदहवीं हिदायत मेरी यह है कि, अधिक साहसी बन कर मजबूत बनो। व्यापार मे डरना है व्यापार म आडे आना। भयभीत व्यक्ति पर सभी कठिनाईया आकर हावी हो जाती हैं और फिर बाद म उनके दुश्मन (प्रतिद्वन्दी) भी शक्ति मे आ जाते हैं।

यह भय (डर) बचपन से लेकर हमारे दिलों म शुरू होता है इसके लिये कुछ सीमा तक माँ बाप भी जिम्मेदार हैं इस डर को अंग्रेजी म Fear Complex कहते हैं कहा जाता है।

डर (भय) कितनी अवस्था परिस्थितियों व तरीका से दूर किया जा सकता है इसके लिय एक इलाज यह भी है कि जानबूझकर डर के सामने जायें ताकि फिर आहिस्ता आहिस्ता डर दिल से बिल्कुल निकल जाये।

डर को दूर करने के लिये खुश मिजाज भी होना जरुरी है सग भी ऐसे लोगों का करना चाहिये जो भी खुशी मिजाज हो कोशिश करके खुद म अधिक यकीनीपन, भरोसा पदा करना चाहिये।

व्यापारी दुनियाँ हमेशा डरपोको स भरी पडी है वे हमेशा सलामती वाले स्थान ढूढ रहे हैं पर क्या तुम्हे मालुम है जहाँ अधिक सलामती है वहाँ पर अधिक लाभ नहीं है।

इन्सान जात एक डरपोक जात हैं वह हजारों बातों के विषय मे हर समय डरता रहता है व्यापारी लोग छोटी छोटी साधारण और न डरने वाली जैसी बाता पर भी डरते रहते जसे कि व्यापार म डरना भी कोइ गुण है।

एक तरफ कितने ही लोग डर कर और पीछे (हटकर) जा रहे हैं तो दूसरी तरफ उंगलियों पर गिनने जितने लोग साहस और उत्साहवर्धन की ... दुनियाँ अपने हाथ म रख बैठे हैं कसी न बडी भारी भूल हो रही

है हर एक फम मे खरगोश की तरह डरने वाले कई मौजूद हैं जो हर बात में डरकर किसी भी जिम्मेदारी लेने स हट रहे हैं हमेशा वे एसा ही बैठकर सोच रहे हैं कि जिम्मेदारियाँ उठान से व से अपना पीछा छुडाए यह है डर-पोक मनोवृति जिसमे अनको लिप्त हैं ।

डरपोक आदमी अगर एक बार ही अपना डरपोक स्वभाव प्रकट करता है वो यकीन मानो तो उसे अधिक डरान क लिये कई लोग इकट्ठे हाग और मौका देखकर जायेंग उसे अधिक डराने ।

मैं डरता हू एसा कहना और ऐसी मनोवृति रखना गलत रास्ता है ऐसा डरपाक स्वभाव रखन के कारण हजारो लाग गरीब होकर गुजारा कर रहे हैं ।

जीवन हमेशा सकटो स भरा रहता है, इसस पहले भी ऐसा होता चला आ रहा है और इसक बाद भी एसा चलता रहेगा ।

कोई भी नई आजमाइश खतरे खाली है फिर एसा है क्या कि जोखिम लेकर नया प्रयोग (तजुरबा) नही करें ?

हमेशा यह ख्याल रखा जाता है कि अधिक लाभ चाहिये और अधिक सलामता भी चाहिये । मेरा उत्तर है कि ऐसा कैसे हो सकगा अगर अधिक लाभ चाहिय तो अधिक जोखिम भी लेना पडेगा ।

तुम कितन खतरो, बाता का अभ्यास व अध्ययन करके अपनी योग्यता से काम कर सकत हो पर साफ खतरे से मुक्त कभी भी नही हो सकोग ।

बेहतर तरीका यह है कि इस जीवन म अच्छा खिलाडी बननें और खिलाडी का उदाहरण सामने आगे रखकर बाता व समस्याओ का हाथ म लो सच्चा खिलाडी कभी भी खेल हारकर हल्का आदमी नहीं बनेगा । तुम भी एक अच्छे खिलाड़ी बनो सभी काम अच्छे भाव में लो ।

वास्तव मे तो खतरा लेने म एक अजीब मजा भी है हर एक होशियार आदमी इस बात को जानता है।

अपने विचार अकारण ही अधिक सलामती की तरफ न दौडाओ यह अधिक सलामती तुम दुनिया के किसी भी तख्ते पर प्राप्त (हासिल) कर नही सकते अपनी योग्यता बढाओ जो (आदमी) लोग इससे पहले सफल हो चुके हैं व इस बात की सच्चाई बयान कर सकग।

मजबूत दिल कितना ही कुछ कर सकता है जीवन के संघर्ष म दिमाग का साहस शारीरिक साहस स कही अधिक है।

अगर अपने जीवन को अधिक सुखी और सफल बनाना चाहत हो तो तुम्ह डर (भय) और चिंताओ से खुद को मुक्त करना पडेगा।

डर व चिंताए हर किसी के दिमाग के लिये जिन भूत के मिसाल हैं जो लोगो को सताते रहते हैं जब तक आदमी म दिली ताकत और साहस नही है तब तक ये भूत लोगो को सताकर दुबल (कमजोर) बनाते रहग उसके आँखो से नींद स्वास्थ्य और दिल की शाती चुरा लत हैं।

ये भूत जाते हैं अधिक घिराव करते जब तक उ ह रोकने व सामना करने की कोशिश नही की जाती है। रोक न करने से वे आखिर पूर दिमाग पर अपना नियन्त्रण (कन्ट्रोल) कर लते हैं दिमाग को तोड तोड कर टुकडा कर देत हैं

अब तुम्हें बताऊगा कि डर और दुख क्या पदा होता है।

डर पदा होता है दिल की कमजोरी के कारण जब इन्सान भविष्य की चिता म लिप्त है दुख पैदा होता है दिल की कमजोरी (दुबलता) के कारण जब इन्सान अपने भूतकाल को याद कर चिता करता है।

यह याद कर लो कि इन्सान का जीवन बहुत छोटा है कभी भी तुम्हे अपना समय इन बीती बातो म व्यथ नही गवाना चाहिय कि इमस पहले

क्या कुछ हो चुका है और इसके बाद क्या होने वाला है तुम्हारा वतमान तुम्हारे लिये अधिक उपयोगी है पर अभ्यास करो कुछ न कुछ जल्द करो हमेशा काय अभ्यासी बनो।

डर और दुख चुस्त दिल स उड जाते हैं जस रोशनी के आगे अ धरा जसे रोशनी को जाय तो अ धेरा गुम हो जाता है वसे ही चुस्त रहन से दुख और गम हावी न हो सकेंगे। इसलिये अपना दिल हमेशा चुस्त रखो इस दुनिया म कोई भी ऐसा दुश्मन तुम्हे अपने दुख से अधिक नुकसान पहुचा नही सकता यानि इ सान अपना दुश्मन स्वय खुद ही है।

कसे भी आए डर व कठिनाई को बडे (विशाल) दिल से साहस रख कर सामना करो और मजबूत बनो। दुबलो को कभी भी सफलता का आश्वासन किसी भी धम शास्त्र से या किसी दूसरे स्थान पर नही मिला है।

सच्चा धम हमे दुबल होना कभी भी नही सिखायेगा सच्चा धम हमेशा यही शिक्षा देगा कि मजबूत और वभवशाली बनो और जो दुबल हैं उनकी रक्षा करो दुबलो को कभी भी इस दुनिया या दूसरी किसी दुनिया म शाबासी नही मिल सकती।

इस दुनिया म कितनी ही सख्त और परेशान करने वाली अडचने (रुकावटें) मौजूद रहती हैं, इसलिय सफलता की चाहना रखन वालो को इन सख्त अडचनो का सामना करने के लिय खुद को सख्त (मोटी) चमडी वाला बनाना चाहिये।

हर एक इन्सान को अपने जीवन के मध्य (बीच) म कितनी हो (चोटें) ठोकरें खानी हैं उन कुल ठोकरो का सामना करने के लिये खुद को तयार रखना चाहिये। बिलकुल थोडे ही ऐसे लोग है जो (भाग्य से) प्रबल भाग्य से ठोकरें खान से बच जाते हैं नहीं तो ठोकरे हैं ही हैं।

हर एक सफल व्यापारी को व्यापार म प्रतिद्वि दता करन वाले दूसरे व्यापारियों (Competetors) से अधिक कई ठोकरें लगती रहती हैं।

दूसरी नाउम्मेदी की ठोकरें—कितनी बातों के लिये इन्सान चाहना रखता है पर उसके दिल की मुरादें पूरी नहीं होती है। उसे नाउम्मेदी की ठोकरें लगती है।

कोर्ट के मामलों की ठोकरें—तमाम थोड़े ही प्रभावशाली व्यापारी इसी ठोकरों से मुक्त हो सके हैं।

धन के गवाने की ठोकरें—कई चालाक लोग चालाकियां व बुद्धिमत्ता करने के बाद भी कितना धन गँवा देते है।

खराब स्वास्थ्य की ठोकरें—कोई भी अपने स्वास्थ्य के लिये निश्चितता दे नहीं सकेगा।

मौत की ठोकर—जब किसी घर के बडे का देहान्त हो जाता है तब परिवार का दायरा टूट जाता है और सालों से वह जगह खाली रह जाती है।

जब ऐसी ठोकरें जीवन में लगती है तब ही इन्सान के गुणों के दृढता-पन की परीक्षा होती है। ऐसी ठोकरें कभी कभी बडी गहरी है इस लिये बिचारे कई इन्सान टूट जाते हैं हर एक इन्सान को कुछ न कुछ ठोकरें लगनी जरूरी है फिर क्यों न खुद को अधिक निडर बनाकर मजबूत बनाने की कोशिश करनी चाहिये।

तुम्हारा पिता

अध्यवसायी व दीर्घ प्रयत्नशील बनो

प्रिय पुत्र (14)

पन्द्रहवीं हिदायत मेरी यह है कि अधिक अध्यवसायी बनो। इन्सान में अध्यवसायपन उसके लिये मुख्य व अमोघ गुण है।

कितने ही ऐसे लोग है जो एक बार असफल होने से एक दम निराश हो जाते हैं और उनका दिल मायूस हो जाता है।

उस समय वे यह भूल जाते हैं जब वह बालक अवस्था में पैदल चलना सीखते थे तब कितनी बार धक्के और ठोकरें खाई थी ? उन्हे याद करना चाहिये कि इन धक्कों और ठोकरें खाने के बाद ही वे चलना सीखे थे।

कभी भी (दिल शिकस्त) मायूस होकर काम छोड़ना चाहो तभी इसी पैदल चलने वाली मिसाल को याद करना और निश्चय ही यह वास्तविकता तुम मे फिर कुछ अधिक साहस लायगी।

असफलताएँ वास्तव में इन्सान के लिये शिक्षा हैं असफलताओं से ही हम कितना सीखना चाहिये। यह असफलताए हमें मायूस (दिल शिकस्त) करने नहीं आती हैं पर हमें अधिक अध्यवसायी होने की याद देने के लिये आती है।

कितने ही महापुरुषों की जीवनियाँ पहली असफलताओं से शुरू हुई हैं। पर उनमें अध्यवसायपन का अमोघ गुण मौजूद होने के कारण वे धीरे धीरे जाकर अपनी मंजिल पर पहुचे हैं।

ऐसे महापुरुषों के अध्यवसायपन के उदाहरण तो अनेक हैं पर मैं तुम्हें अमरीका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के जीवन का कुछ वर्णन सुनाता हूँ —

अब्राहम लिंकन के जीवन की शुरुआत में (प्रारम्भ में) एक असफलता का जीवन था शुरू में जब वे राजनीति के मैदान में घुसे तब पहले चुनाव

म उन्हे शिकस्त मिली । व्यापार मे घुसे तो भी बिल्कुल असफलता मिली । फिर कोशिश की सिविल सर्विस का काम प्राप्त करू पर कोशिश सफल नही गयी उनके काग्रेस म घुसने के लिय हर तरह के विघ्न हटाकर कोशिश की पर घुस नही सके । उपराष्ट्रपति बनना चाहा तो उन्हे शिकस्त (हार) खानी पडी । इतनी शिकस्त खाने के बाद भी अब्राहम लिकन का दिल शिकस्ती नही हुआ मायूस नही हुए वह अध्यवसायी (कभी भी हार न मानकर) सघर्ष करता रह । अन्त मे अमरीका के राष्ट्रपति चुने गये शानदार नाम कमा गये । आज भी उनका नाम अमरीका के छोटे बडे के मुह म हैं । अमरीका के सिक्को व नोटो पर उनका फोटो छपा हुआ देख सकोग । यह फोटो देखकर कईयो को अध्यवसायी बनने के लिय साहस हो रहा है ।

अब्राहम लिकन के जीवन से अध्यवसायपन के हैरत अगेज गुण प्राप्त कर सकते है । इसी तरह और भी कितन ही प्रसिद्ध पुरुषो के जीवन के अध्यवसायपन की सच्ची घटनाए जो उनकी जीवनियो मे प्रसिद्ध हैं जसे —

जान माला मेकर राकफीलर, लोकमान्यतिलक सुभाषचन्द्रबोस बरनाडशा वग रह । जिनको अपन इस अध्यवसायपन क अमोघ गुण के कारण फल मिला है ।

कुछ लाग पहने असफल होत हैं क्योकि वे सही स्थान पर जमे हुए नही हैं जिसके वे योग्य हैं पर अगर वे अध्यवसायी हैं तो वह एक बार अपनी कोशिश स अपन लिय योग्य (स्थान) दर्जा ढूढ निकाल सकते हैं ।

कितने ही बडे बडे कारखानेदार वास्तव मे अपने अध्यवसायपन और मेहनत से कारखाने जमा बठे हैं ।

ऐसे भी लोग हैं जो कोशिश करते जब कुछ बडी उमर वाले हो जाते हैं तो सुस्त पड जात हैं और दिल मे समझत हैं इसके बाद कोशिश करके क्या कर लग पर वे ऐसे समझने मे गलती करत हैं ।

कई उदाहरणो ने प्रमाणित किया है कि कई लोग अध्यवसायी बनने

या होने की कोशिश करते चालीस वर्ष के बाद ही सफल होकर अपना नाम रोशन किया है इसलिये अध्यवसायपन जैसा गुण अन्त तक अपने से दूर नहीं करना चाहिये अर्थात् अन्त तक अपने म कायम रखना चाहिये।

आदमी जब एक बार किसी बात मे ठोकर खाकर गिर जाता है तो इसम क्या हर्ज है उसे दूसरी बार भी पहली बार म भी अधिक मजबूती स ऊपर चढ़ने की कोशिश करनी चाहिये। आदमी की पहचान इसमे है कि वह कितनी ठोकरें खाने के बाद मद होकर खडा हो जाय।

बचपन म हम एक स्कूल म पढाया गया था कि कसे एक राजा जो लडाई के मदान से शिकस्त खाकर लौटा था और आकर एक स्थान पर आश्रय लिया था वहाँ उसने देखा कि एक मकडी छत पर चढने की कोशिश करने के बाद भी सफल नही हुआ। सातवी बार कोशिश करन के बाद आखिरी बार छत पर जा पहुची राजा न इसी मकडी से अध्यवसायपन की शिक्षा प्राप्त की और वह लौटकर लडाई क मदान मे गया और फिर लडना शुरू कर दिया जिसका नतीजा यह निकला कि उसी राजा न लडाई मे विजय प्राप्त की।

किसी भी बात से दिल शिकस्त होकर एक दम छोडने की कोशिश न करो। फिर भी अध्यवसायी बनकर इसका आजमान की कोशिश करो और यह भी याद रखो कि इसी काम को बहतर करने क क्या दूसरे तरीके हो सकते हैं फिर अगर एक तरीका असफल हुआ है तो दूसरा तरीका ढूढने की कोशिश करो। पर कसे भी काम हाथ से छोडने की बात विचार म न लाओ।

यह इसान की सुस्ती है जो काम को हाथ स छोडना चाहता है इसान को कभी भी अपनी दुबलताओ के आगे लाचार व मजबूत होकर सिर झुकाना नहीं चाहिये।

जब मैंने अपना व्यापार शुरू किया था तब इसी विचार का था कि व्यापार म सिर्फ प्रभावशाली- बनना ही काफी है। पर अनुभव प्राप्त करने

के बाद मैं इस विचार का हू कि सफलता के लिये प्रभावशाली होना ही काफी नही है इसके साथ साथ अध्यवसायपन की भी जरूरत है।

कई नौजवान हैं जिनकी शारीरिक ताक्त अधिक है पर इसके साथ साथ अगर उ ह किसी बात की जरूरत है ता वह है अध्यवसायपन की।

नौजवान जल्दबाज हैं उन्ह सब बात या कहना चाहिये कि हर बात मे तुरत दान महाकल्याण चाहिये।

यानि जल्द नतीजा चाहिये। पर जल्दी करना व्यथ है उन्ह अधिक सबर व धीरज व शान्ति धारण कर अध्यवसायी बनकर काम के पीछे लगना चाहिये हज नही है अगर पहली कोशिश म उन्हे सफलता नही मिले। पर अध्यवसायी होकर अगर काम मे लग जाओगे तो आखिर एक दिन आएगा जब अपनी कोशिश का फल देखकर हैरान होना पडेगा।

नौजवाना म यह देखा गया है कि वे जबरदस्त जल्दबाजी To rule along To rush lines व तेजी से काम लेते रहते हैं पर बुजु ग धीरज से और धीरे धीरे चलते हैं और अगर किसी काम मे हाथ डालत हैं तो *उसम बिल्कुल मग्न हो जात हैं अब बताओ बेहतर गुण कौन सा है ?* इस विचार का हू कि दोना गुण एक दूसरे स अधिक हैं इसलिय नौजवाना को बुजुर्गों से और बुजर्गों को नोजवानो से शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये।

इन्सान जब छोटा है तब धीरज और सबर की कदर नही करता पर जब बडा होता है और जवानी के समय की प्रभाव शीलता व तेज रख नही सकता पर बचपन से ही अगर धीरज व शान्ति व सबर सीखने की कोशिश की जाय तो कितना न बाद मे उपयोगी रहता।

अध्यवसायपन के गुण न होन के कारण कितने ही योग्य व तेजवान नौजवान ठोकरें खाकर दिलशिकत होकर मायूस होकर निहायत ही दुखी अवस्था म पहुच चुके हैं जिनकी हालत देखकर रहम आता है इसलिये हर एक नौजवान के लिये अध्यवसायपन का गुण खुद म ग्रहण करना चाहिय।

यह कभी भी नही भूला कि जीवन का वरदान (आशीर्वाद) उनको ही मिलता है जो अध्यवसायी होकर काम करते रहते हैं।

पर दुर्भाग्य से अगर अध्यवसायी होने के बाद भी यह वरदान (आशीर्वाद) प्राप्त नही कर सकते है तो भी अन्दर मे उन्हे यह खुशी जरूर होनी चाहिये कि उन्होंने अपने जीवन मे अपने प्रयत्नो का पूरा पूरा लाभ लिया है।

तुम्हारा पिता

अन्तर्मन से मनन शील व चिन्तन शील बनो।

(16)

प्रिय पुत्र

सोलहवी शिक्षा मेरी यह है कि अन्तमन से मनन व चिन्तन शील बनो।

हर एक मनुष्य के दिल को व्यवस्था की जरूरत होती है, मनुष्य का दिल माँ बाप के पेट से जुडा हुआ नही निकलता है दिलो को बाहर ही जोडना है इन्सान के दिलो को सिर्फ स्कूलो मे ही शिक्षा नही मिलती है पर कई स्कूल के बाहर निकलने के बाद भी अपने दिलो को शिक्षा देने की कोशिश नही करते हैं। नतीजा यह निकलता है कि ऐसे लोग ऐसी कोई बात होती है तो गहरे खड्डे मे जाकर गिरते हैं जिसकी ऊँचाई का पता नहीं हैं।

दिल को सुव्यवस्थित ट्रेनिंग व शिक्षा देने के लिये कुछ निम्नलिखित वास्तविकतायें तुम्हें ध्यान मे रखनी चाहिये।

यह दुनिया इतनी तो बडी है और उसमे इतनी तो बातें एक दूसरे से निराली हैं कि सब बातो में चाह ले नही सकेंगे इसलिये जरूरी है कि अपने लिये कुछ विशेष बातें बाँध ले जिस मे ही चाह लेते रहना चाहिये जिन की तुम्हें जरूरत हो और इसी बातो को ढूंढने के लिये तुम्हें आँखों और कानो को भी सुव्यवस्थित शिक्षा व ट्रेनिंग देनी पडेगी।

अपना पूरा ध्यान दो कि जो तुम सुनते हो वह पूरा सुनत

दखते हा वह पूरा देखते हा। कोशिश करके देखो कि जो एक बार सुना है। वह फिर कह सकते हो या जो दखा है वह पूरी तरह प्रकट कर सकते हो। ऐसा करने से जल्द तुम जाँच कर सकाग कि तुम्हारी इन्द्रिया किस कदर ठीक हैं।

इन्द्रिया जा कुछ अन्दर लाती हैं उस पर हमार दिल का विकास व सुधार का दार मदार है इसलिय हमेशा अपन दिल पर अच्छ और साफ स्वच्छ सस्कार आने चाहिये। अस्पष्ट व अस्वच्छ और ऐसे सस्कार हमारा जीवन कभी भी जोड नही सकेंगे। टेडी इटो से सीधे घर या मकान बन सकेंगे क्या? सीधे व अच्छे मकान के लिये अच्छे सामान की जरूरत है।

आज दुनिया पूरी अविवेक की बातो से भरी पडी है जिसका कारण सिफ यह है जो हम म से कईयो न अपने दिलो को पूरी सुव्यवस्थित शिक्षा व ट्रेनिंग देने की कोशिश नही की।

एसे गैर जिम्मेदार लागा का किताबो व समाचार पत्रा से शिक्षा लने की जरूरत नही है इनसे कुछ भी सीख नही सकते अगर शिक्षा लेनी है तो अच्छे जिम्मेदार नेताओं समाचार पत्रो, और किताबों म ढूढनी पडेगी।

अपनी आखो व काना को व्यथ बातो की तरफ न धसीटना चाहिये देखना और सुनना हमारे बस मे है जो कुछ हम सुनना व देखना चाहग वही हम सुन दख सकेंगे।

कभी भी सिफ कहने पर बातें स्वीकार नही करनी चाहिय पर अपने सर जाच कर वास्तविकताए हाथ म लेनी चाहिये अक्सर लोग गलतियाँ करते हैं इसलिय उनकी बातें अगर तुम सुनकर स्वीकार करते रहोगे तो तुम भी गलतियाँ करत रहोगे।

लोग अक्सर जो खुद समझ सकते है वे ऐसे ही नमूने व रुप मे सुनने की कोशिश करते हैं जसे कि वह सब सच है पर वे सब विचार एक ही आदमी क हो सकत हैं। फिर चाह व विचार तुम्ह अच्छ भाव म बताय गय हा।

कई लोगो की मुच जानकारी है कि वह कई बातो मे (भूलवान) गलती करते हैं क्योंकि उनकी जाच का तरीका ठीक नहीं होता है ऐसे भी लोग हैं जो तुम्हे बिना किसी झिझक के कि सफेद काला है और काला सफेद है बताने की कोशिश करेंगे। पर तुम्हे जवाबदार होना पडेगा इसलिये वास्तविकतायें तुम्हें अपने सर कोशिश कर जाच करनी चाहिये।

एक छोटा बच्चा हमेशा सवाल की निशानी है जो हमेशा सवाल पूछता रहता है कि यह क्या ? यह क्या ? यह उसका प्राकृतिक तरीके से बढना और सीखने का तरीका है तुम्हे भी कभी कभी बच्चे की जसे तरह होना पडेगा।

एक अग्रेज पत्रकार रिड याड कलपिंग की कहावत इस तरह है I keep six honest serving men they taught me all I know Their names are what and where and when and How and why and who यानि कि मैं छ सच्चे नौकर अपने पास रखता हू जो भी मुझे जानकारी व ज्ञान उनसे मिलता है वह मैंने इनसे सीखा है इनके नाम हैं क्या कहाँ, कब, कैसे क्यो और कौन।

कभी भी जब योजना बनाओ कोई तरीका ढूढ निकालो या कही वार्तालाप करने जाओ तो निश्चित रूप से जानने की कोशिश करो कि तुम्हारी वास्तविकतायें सचमुच वास्तविकतायें हैं।

जिस तरह तुम्हारे पेट को लगातार भोजन चाहिये उसी तरह तुम्हारे दिमाग को भी लगातार भोजन की जरूरत है जब उसे भोजन नही दिया जाता तो वह भी लाचार हो जाता है। कुछ लोग हैं जिनके दिल एक स्थान पर बैठे नजर आते हैं क्योंकि काफी समय से कोई नया विचार उनके दिल म नही आया है।

सब वही पुरानी बातें हर जगह करने से क्या फायदा है कोई भी जब ऐसा करता है तो यह प्रमाणित करता है वह पुराना पुराने वाला है, इसलिये मैं तुम्हें यह सलाह दूंगा कि हमेशा नये विचार ग्रहण करने की कोशिश करो।

नये नय विचार प्राप्त करने के लिय कभी कभी नई किताब या नय नमूने की किताब पढने की कोशिश करो किसी नय तरीके का अभ्यास करो कस भी कुछ भी करो पर मतलब यह है कि सुस्त होकर एक स्थान पर खडे मत हो।

आँखो और कानो को हमेशा देखत और सुनते रहना चाहिय जब इन्होने सुनना बन्द किया तब अपनी समाप्ति समझो जसे अगर अपने शरीर को खाना या भोजन नही पहुँचाओग तो समाप्त हो जाता है।

हर एक मिनट तुम्हें अपनी प्रगति व अपने सुधारो की तरफ बढत रहना चाहिये। अपना बढना समाप्त किया तो समझ लो कि अपनी समाप्ति शुरू कर ली है। दिन को ताजा रखने के लिये उत्तम तरीका यह है कि अपने लिये नये और सुन्दर विचार ढूढत रहिये हम म से सबको एक दिन मरना है इसका मतलब यह नही है कि उससे पहले ही अपने दिल की आत्महत्या कर दी जाय।

सभी नयी बातों को कभी भी अस्वीकार नही करना चाहिये यह निशानी दिमाग की कठोरता है यह दुनियाँ हमेशा घूमने फिरने और बदलने वाली है और अगर हमको इस दुनिया मे रहना है तो हमको भी घूमने फिरने व बदलने वाला होना पडेगा। यह समझना भूल होगी कि जो हमारे बाप दादो के लिये ठीक था वह हमारे लिये भी ठीक ह पुरान फोटोग्राफ निकालकर देखेंगे तो एकदम मालूम हो सकेगा कि हमारे बुजुर्गों के कपडो और हमारे वतमान कपडा मे कितना परिवतन आ गया है।

नये विचारो के लिये हमेशा दिल खुला रखो। नई नीतियां नय मत या विचार, नये तरीके सभी पर उचित ध्यान दो। सभी को आजमाने की कोशिश करो जो अच्छा हो उसे मजबूती स पकड लो।

हर किसी बात को आशा भरी नजर स देखो जिस रग के शीशे का चश्मा पहनोगे सभी वस्तुएँ इसी रग म नजर आयगी अगर तुम मायूसी से देखोगे तो सभी वस्तुए अन्धकार जसी दिखने मे आयेगी सभी बातो को आशा भरी दृष्टि से देखन की तुम म आदत डालो।

किसी खड्डे म फसने की कोशिश मित करो आदमी आदती है और यह असम्भव है कि आदमी किसी न किसी आदत मे न पडे, आदतें दिमाग के रास्ते है जो जाकर अन्त मे खड्डे मे डालते हैं कुछ आदतें तो मनुष्य की उन्नति मे बहुत अधिक सामने आती हैं विघ्न डालती हैं रुकावटें व अडचने डालती हैं अपना हिसाव यानि आय व्यय का ब्यौरा अर्थात इन आदतो का हिसाब देखो कि किस तरफ जा रह हो । और दखो इस आन्त होन से तुम सुधार या उन्नति की तरफ जा रहे हो या पतन की ओर (विगडने की ओर) जा रहे हो ।

अपनी दिमागी ताकत शक्तिशाली रखो कई लोग हैं जो किसी भी बात के लिये विचार नहीं दौडाते कुछ कम विचार दौडाते हैं । मजबूत विचारो वाला आदमी हमेशा अपने विचारो से काम लेत देख सकोगे जो आदमी थोडे विचारो के वजन पर हैं उनको हमेशा उलट सीध पाठ की तरफ इधर उधर घसीटत और भटकते देख सकोग । थोडी कठिनाई आने पर वे उलझन म पड जाते हैं ।

अपने विचार एक स्थान पर ले आओ । अगर तुम्हारा दिल पक्षी के समान है जो सिफ तडफता रहता है जो एक डाल से उडकर दूसरी डाल पर कूद रहा है तो तुम अधिक कुछ कैसे प्राप्त कर सकोगे ? अपने विचार एक स्थान पर ले आना बहुत जरूरी है और जो अपने विचार एक स्थान पर नहीं लाता है वह खुद के लिये उलझन है और अपने लिये गैर जिम्मेदारी है ग़ र जवाबदारी है अगर तुम बठकर कोई काम कर रहे हो तो सलाह देने जसी बात हैं कि दूसरे कामो को कुछ समय के लिये स्थगित करो और यह तरीका तुम धीरे धीरे प्रयोग करने से ग्रहण कर सकोगे ।

तुम्हारा पिता

अध्ययन से नाता जोडो स्वाध्यायी बनो।

(17)

प्रिय पुत्र

सतरहवी शिक्षा मेरी तुम्हें यह है कि 'अध्ययन से नाता जोड स्वाध्यायी बनो।'

यह एक मानी हुई वास्तविकता है कि किसी भी बात का सीखने का आसान रास्ता यह है कि उसी विषय पर पुस्तक लेकर अभ्यास किया जाय।

अपना जीवन सफल बनाने व सुखी रखने के लिये तुम्हे पुस्तको की सहायता जरूर लेनी पडेगी पुस्तको द्वारा शिक्षा प्राप्त करना सबसे सस्ता, आसान व उपयोगी रास्ता है।

आजकल हर विषय पर पुस्तकें उपलब्ध की जा सकती है जाती हैं जो बिल्कुल थोडे दाम खर्च करने से खरीद की जा सकती है कभी कभी एक छोटी किताब से कई हजार रुपयो का फायदा हो सकता है।

एक औषधि बनाने वाले की बात है कि कई हजार रुपये खर्च कर किसी नुस्खे को प्राप्त करने के लिये कोशिश की थी पर थोडे दिनो बाद वही नुस्खा उसे किसी किताब मे उल्लिखित नजर आया—अगर यही औषधि बनाने वाला पहले ही किताब का अभ्यास करता तो शायद यह रुपया बचा सकता था।

हमेशा ढूढते रहो कि कोई ऐसी किताब है जिस के अभ्यास करने से तुम्हे जीवन मे सहायता मिल सकती है मैंने यह जाँच कर देखा है कि कितने ही प्रसिद्ध आविष्कारो का प्रारम्भिक सहायता पुस्तको द्वारा ही मिलती रही है ऐसे उदाहरण तो कई है पर मैं कुछ उदाहरण तुम्हे लिखता हू।

Grahem Bell जिसने टेलीफोन का आविष्कार किया था उसे इस आविष्कार का विचार एक पुस्तक पढने से पैदा हुआ था।

John Mercer जिसने (कृत्रिम) रेशम का आविष्कार किया है वह

जब वह मे शादी करने जा रहा था तब रास्ते म किसी किताब वाले के यहाँ खडे होकर किताब की खरीद की जिसको पढने से नकली रेशम के आविष्कार का विचार उसके दिमाग मे आया।

Faraday जिसने विद्युत का आविष्कार किया और हम इतना सुखी किया है उसक भी इस योजना का ध्यान किसी पुस्तक पढने के बाद आया।

Henry Foatd' हेनरी फोर्ड मोटर कार के व्यापारी को मोटर बनाने का उत्साह एक निबन्ध पढने के बाद पैदा हुआ, नही तो इसके पहले उसका विचार था कि घडियो का निर्माता बनू ।

उपरोक्त उदाहरणो से तुम देखोगे कि कस न कितने ही सफल आदमियो के जीवन का कारण यह किताबें ही रही हैं, जो भी यहाँ सफलता के दर्जे म गिने जाते हैं उनमे सब पुस्तकें पढने वाले है सिर्फ कुछ सफल आदमी होगे जिन्होने पुस्तको का कभी-भी अध्ययन नहीं किया होगा महात्मा गाँधी भी अपनी आत्मकथा म लिखते है कि उनके जीवन मे परिवर्तन लाने वाली कुछ किताबें है पण्डित नेहरु ने तो बहुत ही पुस्तको का अध्ययन किया था और वह हर जगह पुस्तको के बण्डल अपने साथ लेकर जाते थे कई पुस्तकें उन्होने स्वय भी लिखी है जिनसे फिर दूसरो ने लाभ लिया है।

एस्कीमो राष्ट्र (कौम) की सिर्फ दो ही किताबें हैं एक है बाईबल और दूसरी है उनके रीति रिवाजो पर किताब। इसी कौम को यह मालूम ही नही है कि दुनिया म दूसरा साहित्य क्या होता है या दुनिया म क्या क्या होने जा रहा है उनको बस सिर्फ यह मालूम है कि बर्फ म झोपडियाँ कैसे बनाई जायें और उसमे कैसे रहा जाय। इसलिये यह जाति प्रगति नही कर सकी है।

मैं कितने आदमी देख रहा हू जो हालांकि एस्कीमो नही हैं पर वे किसी भी हालत म उनसे बढे चढे दिखाई नही देते।

किताब इन्सान का दिमाग खोलकर उनमे नये विचार लाती है किताबो का अध्ययन न करने से मेरी समझ म इन्सान जैसे अन्धेरे मैं हाथ मार रहा है।

अच्छी किताबें जरूर दिमाग म नय विचार पैदा करेगी और दिमाग को चुस्त रखती आयेंगी कई परिस्थितियां म तो पुस्तकों से बरबादी के खड्डे म गिरने से बचा जा सका है किताबें दिखाती हैं कि उसस पहले क्या क्या किया गया है।

दिल की तगी दूर करने के लिये पुस्तकें पढ़ना बिल्कुल जरूरी हैं।

अथ यह है कि पुस्तकें पढ़ने से इ सान सचमुच पूरा इन्सान हो जाता है जसे बकन कहता है

Reading maketh a full man

पुरान जमाने म सिफ बादशाह व साहूकर लाग ही पुस्तक खरीद सकत थे जिसका कारण यह था कि हाथ लिखित होने क कारण पुस्तकें महगी होती थी पर अब वतमान समय मे मुद्रण सुव्यवस्था होने के कारण किताबें सस्ती हैं और आसानी से खरीद की जा सकती हैं।

कुछ समय पहले किताबें सिफ साहित्य के जानकार ही लिख सकत थ पर अब कई व्यापारी डाक्टर राजनीतिज्ञ नेता और कई दूसरे लोग भी लिखने का शौक ग्रहण कर रह हैं प्रसिद्ध व्यापारी जसे हनरी फोड सेलफ्रिज, राक फीलर आदि ने किताबें लिखकर अपन अनुभव अपनी पुस्तकों म उल्लिखित किये ह।

इस जमान म पुस्तकें जैसे प्रोफेसरों और वकीलों क लिये जरूरी है इसी तरह व्यापारियों के लिये भी तमाम जरूरी है।

व्यापारी दुनिया और साहित्य तो इस समय एक दूसरे स जुड़े हुए हैं और कभी भी अलग नही हो सकते भले ही किसी का भी काम कितना ही अच्छा क्यो न हो पर तब भी कई एसी किताबें हैं जिनके अभ्यास करने से उसी काम को अधिक श्रेष्ठ किया जा सकता है।

पुस्तकें पढने का मुख्य यह कारण होना चाहिय कि उनम स कुछ न कुछ शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये। पुस्तकों से तो ऐस फायदा लेना चाहिये जस मधु मक्खी फूलो पर बैठकर फूलो स पूरा फायदा लती हैं।

कभी कभी मनोरंजन के लिए व समय काटने के लिये भी पुस्तकें पढनी चाहियें पर दिमागी आदमी को दिल बहलाने से अधिक दिल को सुधारने के लिये पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिये।

जो लोग सिर्फ समय काटने के लिये पुस्तकें पढ रहे हैं वे लोग जीवन का बडा अवसर खो रहे हैं यह अवसर है दिल और दिमाग को बढाने का।

समझदार आदमी हमेशा सफर की पुस्तकें उत्तम कथायें नये विचारों की पुस्तकों का अध्ययन करते रहते हैं। तुम्हें हमेशा खुद सुधारने और उन्नति के लिये पढते रहना चाहिये। पुस्तकें पढने से मानो तुम कवियों विचारकों और कई साहित्य के जानकारों के सम्बन्ध व सम्पर्क में आ जाते हो।

अच्छी पुस्तकों के चयन की श्रेष्ठ विधि यह है कि देखें कि उनके लेखक कौन हैं और तुम्हें सिखाने के सचमुच योग्य है? इसलिये लेखक को ढूंढना है अच्छे दोस्त को ढूंढना आजकल साहित्य तो इतना प्रकाशित हो गया है जो पुस्तकें चुनने में सावधानी लेनी पडती है

विदेशों में कई फर्मों के अपने खुद के Libraries पुस्तकालय हैं क्योंकि वे पुस्तकों का मूल्य समझते हैं और व्यापार को श्रेष्ठ विधि से चलाने के लिये पुस्तकों द्वारा ही तरीके ढूंढते है।

कई समझदार लोगों के घरों में अपने पुस्तकालय हैं जहां वे अच्छा व सुन्दर पुस्तकों का संग्रह करते रहते हैं कितना न अच्छा शौक!

कई लोग ऐसा कहते सुनते हैं कि उन्हें पढने के लिये बिल्कुल फुरसत नहीं है पर देखा गया है इसमें वे सरासर भूल करते है कोई भी कुछ न कुछ समय बचाकर पुस्तकों का अभ्यास व अध्ययन कर सकता है।

ऐसे आत्मा भी मैंने देखे हैं जो समझते हैं कि पुस्तकों के पढने की जरूरत नहीं है उनके लिये अखबार ही काफी हैं मेरी समझानुसार समाचार पत्र भी बिल्कुल जरूरी हैं पर सिर्फ समाचार पत्र पढ़ना ही काफी नहीं है नये

विचारा को प्राप्त करने क लिये पुस्तके पढना ही ठीक है समाचार पत्र जल्दी म लिखे जात है य सिफ ऊपरी तौर से परिचित कराते है इसलिय पुस्तकें पढने का शौक ग्रहण करना बुद्धिमता ही समझना चाहिय ।

मैं तो तुम्ह यह सलाह देता हू कि तुम भी एक अच्छा पुस्तकालय बनाने की कोशिश करो । जहा अच्छी अच्छी पुस्तको को सग्रह करने की व्यवस्था करो और मुझे विश्वास है कि तुम्हारी ये मानसिक व्यवस्था कायम रखने वाले शान्त दोस्त (पुस्तकें) तुम्ह कइ समया पर मदद करत रहेगें ।

किताब कसे पढनी चाहिय, और उससे पूण लाभ कस प्राप्त किया जाय यह भी ध्यान देने योग्य बात है । किताब एस ही लगातार पढ जाने से कोई भी लाभ नही होने का है मेरी समझ म किताब का हर एक अध्याय अच्छी तरह पढना चाहिय कई देख है कि किताब हाथ म लेने क बाद एक अध्याय अभी समाप्त हुआ हा नही हागा दूसरा अध्याय लगातार पढने की कोशिश करेंग ये सब खराब तरीक पढने के है, और मुझे तुम्हें यह बताना जरूरी है कि य सब पढने के खराब तरीक है। और ऐसी तरह पढने से कुछ भी हल नही निकलने वाला है अगर पुस्तक का पूरा लाभ लेना है तो हर एक अध्याय को सम्पूण रूप से पढना है न सिफ यह अगर हो सके तो उस दुबारा भी पढना चाहिये । पढत पढत कहीं कहीं (ठहरना) रुकना भी जरूरी है और जाच कर देखना चाहिय कि क्या पढ रहे हैं और कुछ इस पढी हुई बातो पर ध्यान दना जरूरी है बाकी शत जीतन (यानि जल्द पढने की रफ्तार का मुकाबला) की तरह पढने से क्या वापसी मिलगी ? क्या लाभ हागा ?

पढने क समय लाल पसिल या पन हाथ मे हाना जरूरी है कहीं भी ऐसी ध्यान देने योग्य बातें (ध्यान आकषण योग्य बात) नजर आयें तो इसी पक्ति के नीचे लकीर खाच देना चाहिय या अलग एक ओर मे लकीर खीच देनी चाहिये जहा अधिक जरुरी ऐसा वाक्य देखने म आये उतने X (क्रास ड डे) दे देने चाहिये । ऐसी तरह लकीरें खीचन से और पढने से यह तुम्हारा पढना बिलकुल दिलचस्प हा जायेगा और न सिफ इतना ही पर तुम्हारे लिय बहुत आसानी भी हो जायगी ।

पढने के समय एक ओर अलग से पास म शब्दकोश का होना भी तमाम जरुरी है। ताकि कठिन शब्दो के अर्थ जानना और उसी समय देखना भी बिल्कुल जरुरी है नही तो बाद म यह कठिन शब्द भूल जाते हैं और तत्काल जाँचने स पूरी बात पूरी तरह से समझी जा सकती है। अर्थ समझे बग र पढकर बोझा उतारने से थोडा ही लाभ होगा।

आशा है कि इसी विधि से पुस्तकें पढने पर ध्यान दोग और उन म से सच्चा विद्या प्राप्त करते रहोगे। मैं तुम्हारा पिता होने के नाते तुमसे यह कहना चाहता हू ।

व्यर्थ भटकाव से नाता तोड़ो ।
अध्ययन मे नाता जोडा रे ॥

तुम्हारा पिता

समय का मूल्य पहचानो ।

18

प्रिय पुत्र

अठारहवी शिक्षा मेरी तुम्हें यह है कि तुम समय का मूल्य पहचानो।' समय का मूल्य हम लोगो म स थोडे लोगो के लिय है समय बिल्कुल मूल्यवान वस्तु है पर आश्चय है कि इसके बाद भी हम इसका इतना मूल्य नहीं पहचानते।

समय हमेशा स्थिर है तुम्हे मुझ और दूसरे सभी को केवल थोडा हिस्सा ही मिला है। इसलिये हम इसी हिस्से मे मिले समय की पूरी पूरी कीमत पहचाननी चाहिये और इसे व्यर्थ गवाना बडी भूल होगी।

समय वह वस्तु है जिससे जीवन बना है दुनियाँ म समय जैसा कीमती दुर्लभ वस्तु दूसरी हो नहीं सकती ।

सच पूछो तो सम्पूर्ण रूप म जीवन बनाने के लिये हम दो सौ वर्ष आयु चाहिय पर सवाल है कि हम साधारण रूप म कितनी आयु चाहिय ? हम ऐसी तरह अपना दनिक जीवन चलाय जा रहे हैं जसे कि हमे एक हजार वर्ष जीवित रहना है।

इमे समझने मे भूल नही हो सकेगी कि समय धन से कही अधिक आवश्यक है। समय मूल्यवान व विभिन्न शक्तियो म उच्च है।

समय हम ईश्वर के यहा से समर्पित किया गया है पर दुख है ऐसी वस्तु हम बिना मूल्य पहचानने व्यर्थ म गवा रहे है। और व्यर्थ गवाने के समय हम इस पर थाडा भी विचार नही करते हैं पर जब अपने हो हाथो से खो कर जब अचानक आख खोलते हैं तो पछताते है अरे! समय तो हाथो से निकल गया।

कई बडी आयु वाले लोग जब अपने जीवन की यात्रा पूरी करके पहचते हैं तो व मुश्किल स अनुभव करते हैं कि उन्होंने असावधानी लापरवाही के कारण युवावस्था म समय किस तरह व्यर्थ खोते रहे। पर ये अगर इसका मूल्य अपनी जवानी म पहचानते तो उनके इस तरह से पछतान का कारण बिलकुल ही नही बनता।

याद करलो हम दिन व्यर्थ बिताने के लिये नही मिले है पर अपना जीवन सम्भालने व बनाने के लिये मिले हैं इसके लिये एक एक दिन की आवश्यकता है किसी को भी हमने यह कहते नही सुना है कि उनको अधिक दिन मिल गये हैं।

क्या कभी स्वय से सवाल (प्रश्न) किया है कि तुम्हारा शेष समय कितना है ? इस प्रश्न का उत्तर तुम्हे अधिक असमजस म डाल देगा हम सब को चौबीस घटे दिन म मिलते है जिसम आठ घटे तो रात्रिकाल विश्राम म जाते हैं बाकी बचे शेष समय मे कुछ घटे नित्य कर्मों के सम्पादन म व्यतीत होते है। शेष घटे मुश्किल से ही मिल पाते हैं। इसलिये क्यो न शेष समय म स्वय को सुधारें और उन्नति के लिये समय का सदुपयोग करें।

यह एक वास्तविकता है कि समय हमे मूर्ख बनाता रहता है जो अस्थिर वस्तु है उसका नाम ही समय है। वास्तव म विज्ञान के विचार से देखें ता समय कुछ भी नही हैं जो हमारा भविष्य है वह कुछ पल वतमान व तत्पश्चात अतीत मे परिवर्तित हो जाता है। इस परिवतन शीलता को ही समय समय कहा जाता है।

आने वाला समय और बीता हुआ समय भी कुछ नही सिवाय आशाओ व याद करने के अतिरिक्त आने वाले समय के लिये हम आशायें रखते हैं और बीता समय बार बार याद आता है। अगर कुछ मूल्यवान समय है तो वह है वतमान समय जिसम सार है। जिसका मूल रूप ही है, समय और कुछ भी नहीं। अतिरिक्त इसके जो हम उपयोग मे लाते हैं।

एक पच्चीस वष के नवयुवक के कहन का भी कोई कारण हैं कि उसके पास अस्सी वष के बुढ्ढे स भी अधिक समय है क्योंकि यह नवयुवक समय व्यथ न खोकर समय का सदुपयोग करता है।

कई लोग भविष्य के लिये और बीते हुय समय के लिये ठगे जाते हैं अक्सर नवयुवक युवावस्था का आधा हिस्सा तो भविष्य के सपने सजोन मे बिताते हैं और जब बुढ्ढे होत हैं तब अतीत की याद म समय बरबाद करते है बस इसी तरह जीवन के दोनो भाग नष्ट कर देते हैं।

यह सब सपने हम दूर नही कर सकते हैं अगर उन्ह छोडकर हम अनुभव करेंगे तो हर दिन हम व्यय नही खोना है पर अपने लिय मूल्यवान बनाना है।

इसलिये तुम काय अभ्यास कर उसका अनुसरण करो और एसा समझो कि वतमान चालू समय ही तुम्हारे लिये सब कुछ है ऐसा समझने से ही तुम समय का पूरा पूरा लाभ ले सकोगे।

कितनी ही धार्मिक शिक्षाओं के मिलने के कारण भी हम दूसरी दुनियाँ के स्वप्न सजाकर वतमान समय का अधिक मूल्य नही पहचान पा रहे हैं।

लाड चेस्टर फील्ड न अपने पुत्र को समय का मूल्यांकन करने के लिय

यह शिक्षा दी है। Very few people are good economists of their fortune and still fewer of th ir time and yet, of the two the latter is the most precious Ch ster field अर्थात् इस दुनियां म बिलकुल थोडे लोग हैं जो अपन धन की बचत करत हैं और फिर इसस भी थाड़े लोग है जो समय की बचत करत हैं पर वास्तव म थोडे धन से अधिक मूल्यवान समय है।

हम प्रयास कर जितना हो सके उतना अपन कामो म ढील नही देनी चाहिये और वतमान गतिशील समय का पूरा लाभ लेना चाहिय।

जहाँ तक मुझ ज्ञात है कि कोई भी स्कूल नही है जहाँ समय की परख करने की शिक्षा दी जाती है और समय के मूल्यांकन क विषय पर कोई विशेष पुस्तक भी नही है कितना अच्छा होता अगर ऐसी दुलभ वस्तु का सदुपयोग करन क लिये एसा किया गया होता।

एक लेखक का लिखना है कि मनुष्य को समय का मूल्यांकन कराने की एक अच्छी विधी यह है कि उसे कहा जाय कि अपना सास लेना रोक लो और तमाम थोडे लोग दो मिनिट तक या उससे अधिक अपना साँस रोक सकेंगे। सास रुका हुआ होगा तब तक उनके लिय समय भी धीरे धीरे गुजरेगा वे जीवन मे पहली बार ही महसूस कर सकेंगे कि दो मिनिट म क्या हो सकता है।

समय का मूल्याकन करने के लिये कुछ वास्तविकताओ को भी जाँचना जरुरी हैं एक मिनिट म आदमी सतरह बार सास ले सकता है एक मिनिट मे बहत्तर बार छाती की धड़कन होती है जिस धरती पर हम खड़े हैं वह सतरह मील एक मिनिट के हिसाब से घूमती है, विश्व मे कही भी तार बारह मिनिटों मे भेजा जा सकता है उपरोक्त वास्तविकताओ को जानने के बाद तुम प्रतीत कर सकोगे कि एक एक मिनिट मे क्या क्या हो सकता है।

पूरे साल म 8760 घन्टे हमे मिलते हैं देखना चाहिये कि वे हम किस तरह काम म ले रहे हैं कागज पेन्सिल लेकर शान्ति से जाँच करने पर देख सकेंग कि कस न हमारे मूल्यवान घन्टे व्यथ गवाये जा रहे हैं।

हर एक दुकान में कितना समय व्यय जा रहा है। उसका अगर अनुमान लगाया जायें तो हैरान रह जायें दुकानों के संचालक व काम करने वाले अगर समय का मूल्य पहचान लें तो अपनी दुकान को उच्च शिखर पर पहुँचाकर उस दुकान्दार को समृद्धशाला बना सके।

दुनिया की सभी खुशिया सब समय मिलने पर आधारित है अगर हमारे पास समय न हो तो हम भी मित्र, पुस्तक यात्रा, घरेलूजीवन आदि का कैसे आनन्द ले सकेंगे?

जो समय का सचमुच मूल्य पहचानते हैं वे अपना समय व्यय जाता देखकर तनिक भी अप्रसन्न होते, पर वही फिर समय का मूल्यांकन न करके जान बूझकर समय व्यय बिता रहे हैं कितना न अन्तर है इसमें?

ये केवल सुस्त लोग हैं जो कहते हैं कि हमारे पास समय नहीं है कैसा भी मनुष्य अगर चाहे तो समय बचाकर अपने लिये समय पैदा कर सकता है।

समय न होना सिर्फ सुस्त लोगों के बहाने हैं।

एक प्रसिद्ध लेखक अर्नोल्ड बेनट' ने समय' बचाने के लिये अपनी एक किताब How to live 24 hours a day' में एक पूर्णतया सुन्दर सलाह लिखते हैं व लिखते हैं कि कई व्यक्ति हैं जो हमेशा यह शिकायत करते हैं कि उन्हें तनिक भी समय उन व्यक्तियों के लिये नहीं है वह रहे-वर्ग रहे। उनकी सलाह यह है कि अगर कोई भी सुबह सवेरे शीघ्र ही बिस्तार से उठने के नियम का पालन करे तो कितना समय बचा सकता है।

वास्तव में मनुष्य का कितना ही समय नींद में व्यय जाता है। कई लोग कहते हैं कि समय हमारे हाथों से उड़ता जा रहा है पर वास्तविकता दूसरी है ये लोग समय को जान बूझकर अपने हाथों से फिसल रहे हैं। –

समय का मूल्यांकन करने वालों के उदाहरण भी अनय हैं जो अपना एक मिनिट भी व्यय गवाना नहीं चाहते थे महात्मा गांधी पण्डित नेहरु और ऐसे कई महापुरुष अपने समय का मूल्यांकन करने में प्रसिद्ध थे।

मैं तुम्हें यही सलाह देना चाहता हूँ कि तुम घड़ी-देवता की आज्ञा में रहो। अपना एक एक मिनिट बचाओ फिर देखो तुम कैसे एक घंटा बचा सकते हो।

उपरोक्त लिखने से ऐसा न समझना कि मेरे लिखने का उद्देश्य यह है कि तुम सारा दिन काम मे चिपके रहो पर मेरे लिखने का स्पष्ट अर्थ यह है कि व्यर्थ सुस्ती मे समय न गवाओ।

प्रतिदिन प्रत्येक व्यक्ति के पास सबकुछ करने के लिये पर्याप्त समय है। अगर कोई भी मनुष्य एक समय मे एक ही काम करता है तो कितना ही समय बचा सकता है। पर अगर इसके विपरीत सभी काम एक ही समय करता रहेगा तो काम सन्तुष्टिदायक एक भी पूरा नही कर सकेगा और हर समय उसकी आपत्ति यही होती रहेगी कि, समय ही नही मिलता है वग रह वग रह।

एक अति व्यस्त व्यक्ति से जब पूछा गया कि इतना अधिक काम होने के बाद भी शाम को खुद के मनोरजन के लिय उसे कैसे समय मिल पाता है? उसका उत्तर यही था कि वह यह समय तब ही बचा पाता है जब हर कोई काम एक ही समय मे करता है वह जब एक काम समाप्त करके ही बाद मे फिर दूसरा काम हाथ मे लेता उसी दिन का काम दूसरे दिन पर न रखकर ऐसी तरह सीधे सादे तरीके से काम करने के कारण वह शाम को खुद के मनोरजन के लिए समय आराम से बचा पाता है। उसके स्थान पर अगर कोई दूसरा होता तो पीछा भी नही छूटता और सारे दिन यही समय न मिलने की 'हाय हाय' करता रहेगा।

हर किसी बात मे जल्दी करने से भी हम यही समझते रहते हैं कि काम जल्दी करते हैं पर ऐसा करने से काम सही नही होता है दूसरी तरफ समय व्यर्थ जाता है कोई भी काम ठण्डे मस्तिष्क से करने से हम कितना ही समय बचा सकते है।

मेरे उपरोक्त निर्देशन का तात्पर्य निम्नलिखित पक्तियों मे है जो पक्तिया लार्ड चेस्टर फील्ड ने अपने पुत्र को अधिक शिक्षा देने हेतु लिखी थीं।

"Know the true value of time, snatch, seize, and enjoy moments of it"

समय को पकडकर, छीनकर ही समय का पूरा पूरा मूल्याकन कर सही आनन्द लिया जा सकता है। तुम्हारा पिता

प्रसन्नता की साकार प्रतिमा बनो।

प्रिय पुत्र, (19)

उन्नीसवा निर्देशन मेरा तुम्हारे लिये यह है कि 'तुम प्रसन्नता की साकार प्रतिमा बनो।" जीवन में सफल और सुखी होने के लिये प्रसन्नचित्त बनकर रहना बहुत जरूरी है। प्रसन्नचित्त मनुष्य न केवल आसानी से सुखी व सफल हो सकते हैं बल्कि इसमें कोई भी सन्देह नहीं है कि वे दीर्घ आयु तक जीवन में आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

प्रत्येक बात को सदैव अच्छे विचार और प्रसन्न मुद्रा में ग्रहण करना चाहिये। प्रसन्नचित्त होना भी एक भाग्यशालीपन है और प्रसन्न व्यक्ति हर स्थान पर स्वागत प्राप्त करता है।

न जाने क्यो मुझे मुंह सूजे हुये गम्भीर लोग बिल्कुल ही अच्छे नही लगते पर न केवल मेरी यह स्थिति है अपितु सभी को ऐसा कहते सुना है कि उन्हें भी मुंह सूजे हुये गम्भीर सिलवटो वाले लोग पसन्द नहीं आते हैं। देखने में यही आता है कि ऐसे मुंह सूजे हुये सिलवटो वाले गम्भीर लोगो से सभी दूर भागते हैं और घबराकर दूर खिसकते हैं।

प्रसन्नचित्त होने से दूसरो को प्यार करना भी सीख सकते हैं और यह कुल शिक्षा कालेजो मे ग्रहण की गई शिक्षाओं से अधिक उपयोगी हो सकती है। भले किसी भी व्यक्ति को असंख्य कठिनाइयाँ व तकलीफें सामने हो पर अगर वह प्रसन्नचित है तो वह जीवन के उत्तरदायित्वो पर आसानी से विजय प्राप्त कर सकता है।

ऐसे व्यक्ति को कहीं भी सिफारशी पत्र (अनुनामा पत्र) ले जाने की आवश्यकता नहीं है वहाँ उसकी अनुशंसा उसका चेहरा यानि शक्ल और उसका व्यवहार ही उसका अधिक परिचय दे सकेगा।

इस जीवन को कभी भी रंगीन चश्मा पहनकर न देखो, जिस रंग का चश्मा पहनकर देखने की कोशिश करोगे सभी वस्तुयें तुम्हें इसी रंग की दिखने में आयेंगी।

प्रसन्न मुद्रा का गुण तुम्हें अंग्रेजों से भी सीखना चाहिये । तुम देख सकोगे कि वे सन्व प्रसन्नचित रहकर अपना जावन यतीत करते हैं । जापानी और दूसरे देशवासी भी अधिकतर हसमुख व मिलनसार हैं पर हम भारतीय उनके बिल्कुल विपरीत हैं अभी कई लोग अपने जीवन मे पूरी तरह हसना भी नही सीख सकें हैं अगर कभी हसेंगे भी तो उनका हसना भी अपूर्ण ही दृष्टिपात होगा या विवशता हागी । ऐसे लोगो पर तरस खान के सिवाय रह नही सकत व बेचारे यह महसूस नहीं कर सके हैं कि उनके जीवन म प्रसन्नता क्या रग ला सकती है ।

हमारे यहाँ जब कोई हसमुख यक्ति आता है तो हम कितना मनमोहित या मन्त्रमुग्ध होत हैं सारे काम काज छोडकर उसकी आव भगत करते हैं क्योकि दूसरे की प्रसन्न मुद्रा ही हमको ऐसा करने के लिये प्रेरित करती है, विवश करती है और आकर्षण पदा करती है ।

जिस व्यक्ति के मुख मण्डल पर मुस्कान है और उसका यवहार मन मोहक होता है ।

व्यापारी और दूसरे धन्धे करने वाले व्यक्तियों की अगर (शक्लो) चेहरों का ग़ठकर निरीक्षण करा तो आसानी स देख सकोगे कि उनकी तस्वीरें (चित्रण) बिल्कुल गम्भीर व सूखी दिखायी देगी । क्योकि वे बेचार रात-दिन धन कमाने की योजनाएँ बनाते रहत हैं इसलिये व प्रसन्नचित बनने से स्वय का अपने आप वचित कर रह हैं ।

कितना अच्छा हो अगर बचपन म ही लेकर हर एक को यह शिक्षा दी जाये कि कसी भा परिस्थितियो मे हो सन्व प्रसन्नचित रहना चाहिय तो मैं समझता हू कि पूरी दुनिया की सभ्यता म आह ! कितनी शाति आ जाये !

याद रखो तुम अगर अपना चेहरा गम्भीर व सुस्त रखोगे तो विश्वास करो कि एसा चहरा तुम्हारे मित्रो को कभी भी अच्छा नही लगेगा और वे तुम्हारे लिये कुछ भी आकाक्षा नहीं रखेंगे इस तरह चेहरा बनाकर रखने से स्वाभाविक रूप तुम पर जो भी काम काज होगे, वे भी भारी और बोझ वाल प्रतात होगे तुम अपना जीवन अपमानित सा महसूस करते रहोगे ।

बडो अच्छी और ठहाके की हँसी तुम्हारी चिंताओ परेशानियां, भ्रान्तिया या जो भी तुम्हारे मन पर उलझनें होगी उनसे तुम्हे मुक्त करेंगी।

अगर कोई भी किसी को तग व परेशान करता है तो वह व्यक्ति जिसमे किसी प्रकार की प्रसन्न मुद्रा नही है या जो उचित व सुन्दर मजाक नही कर सकता। अभी थोडी ही आयु मे बडे होंगे या थोडा भी धन गाठ मे हो जायेगा तो स्वय को गम्भीर रखने का प्रयास करते हैं। ऐसा करने से हम अपना बडप्पन व बुद्धिमता समझते हैं।

मेरे लिखने का आशय पूर्णतया ऐसा नहीं है कि हम गभीर नहीं बनना चाहिये पर प्रश्न यह है कि अपने जीवन को अकारण सिर्फ गम्भीर नही बनाना चाहिये। जीवन मे हर किसी बात को गम्भीर रूप मे लेने से परिणाम यही निकलता है जो मुह पर शीघ्र ही सिकुडन व सिलवटें पड जाती हैं। प्रसन्नचित्तता के लिये चार्लस डिकनस ने तो इस तरह कहा है, Cheer fulness and Content are great Beautifiers and are famous preservers of youth ful looks यानि प्रसन्नचितता व आत्म सन्तोष मनुष्य की सुन्दरता व शोभा बढाने वाले और युवावस्था की झलक को बनाये रखते हैं।

उपरोक्त कहावत कैसी ठीक लग रही है देखा गया है कि जो हमेशा मुँह फुलाकर या मुँह पर सिलवटें डालकर रहते हैं और अकारण गभीर हैं वे जल्दी बुड्ढे नजर आयेंगे और शीघ्र ही उनके मुँह पर सिलवटें पड जाती है और दूसरी तरफ हँस मुख आदमी हमेशा ताजे, स्वस्थ और युवा दिखने मे आयेंगे।

हमारे स्वभाव का हमारे स्वास्थ्य से अधिक सम्बन्ध है क्योंकि हमारी चित्तवृति, भावनायें, और विचारधारा का रक्त-सचरण पर प्रभाव पडता है। एक डाक्टर ने अभी कुछ समय पहले किसी समाचार पत्र मे इस प्रकार लिखा था कि अगर स्वस्थ रहना है तो जाकर प्रति दिन प्रसन्नचित लोगो की सगत में व्यतीत करो, प्रसन्नचितता भी एक बलवर्धक औषधि है।

तुमने यह भी देखा होगा कि किसी बीमार को शुभ समाचार सुनाने

से उसके स्वास्थ्य मे कितना अंतर आया होगा, यह सब दर्शाता है कि हमारे विचार आकर्षणों का हम पर कितना प्रभाव पडता रहता है।

प्रकृति चाहती है कि मनुष्य प्रसन्नचित होकर रहे और चिन्ताओं का ढर न बनायें संग्रह न करे इसलिये मैं तुम्हे यही निर्देशन दूंगा कि तुम हर समय में प्रसन्नचित रहो फिर भले ही तुम्हारे सिर म पीडा हो या दाढ म पीडा हो दर्द हो।

दूसरों की तरफ प्रसन्नचित्त व स्वस्थ बनकर रहना और दिखना भी हमारा एक कर्तव्य है जिस कर्तव्य का हमें अवश्य ही पालन करना चाहिये सभी लोग प्रसन्नचित व स्वस्थ रहना चाहते हैं पर बिल्कुल थोडे सौभाग्यशाली हैं जो प्रसन्नचित्त व स्वस्थ बनकर रह सकते हैं।

प्रसन्नचित्त बनकर जीवन आनन्द समय व्यतीत करना भी एक कला है जो कला सिर्फ थोडे व्यक्ति जानते हैं। प्रयास करने से और जीवन के रहस्य समझने पर आसानी से इसे प्राप्त किया जा सकता है।

नित्य रात को बिस्तर पर जाने से पहले आने वाले दिन को उपयोगी बनाने के लिये स्वयं को अपनी ओर से बिल्कुल तैयार रखो अपनी चित्तवृति को प्रसन्न रखने के लिये हर समय प्रयास करो, ऐसा करने से तुम अपने पूरे दिन की थकावट को दूर कर सकोगे।

हर दिन के अन्त में तुम्हे गाना, बजाना दोस्तो मे या दूसरे किसी रूप मे या परिवार के साथ आनन्द व प्रसन्नता मे सम्मिलित होकर व्यतीत करना चाहिये, नहीं तो फिर बाद मे यह जीवन किस लिये ? या जीवन ही क्या ?

अगर कहीं भी भगवान न चाहे तुम्हारे विरुद्ध मजाक किया जाये तो भी आपत्ति नही घबराने की बात नहीं है तुम भी जाकर बैठ जाओ उनके साथ उनके किये गये मजाक में स्वयं को, शामिल करलो, ऐसा करने से मजाक का कडवापन निकल जायेगा। बस जो कोई तुम पर हसे, उसके बदले या

इसके विपरीत सब सामूहिक रूप से हँसकर ध्यान द लेंगे। आपत्ति नहीं हैं अगर कभी कभी तुम पर भी बठकर हँसी मजाक करें, पर विश्वास करो कि हँसमुख होने से वे तुम्हे कोई भी हानि पहुँचा नहीं सकेगें।

यह भी दिल पर हमेशा अंकित कर लो कि बुद्धिमान की बुद्धिमता की निशानी है निरंतर प्रसन्नचितता और प्रसन्न होकर रहना

तुम्हारा पिता

क्रोधित न हों।

प्रिय पुत्र, (20)

बीसवा निर्देशन तुम्हे है कि तुम क्रोधित न हों।" क्रोधी स्वभाव तुम्हारे सुख व सफलता के बिल्कुल आड आयेगा। कई लोग (गुस्से) क्रोधी स्वभाव होने के कारण अधिक दुखी हो रहे हैं उनके इसी स्वभाव होन के कारण ही प्रत्येक बात मे वे असफल रहे हैं।

कई अवसरो पर स्वभाव से क्रोध करने वालो को अपमानित होते देखा गया है क्योंकि व अपने गरम स्वभाव पर नियन्त्रण रख नही सकते हैं।

कोई भी प्रयत्न करने से अपने मस्तिष्क-विकार को नियन्त्रण म ला सकना है। स्वभाव को नियन्त्रण में लाना कोई असम्भव नहीं है। प्रारम्भ में शायद कठिनाई हो, पर बाद में आसान हो जायेगा।

जान है कि मनुष्य का चिडचिडा स्वभाव क्यों होता है जांच कर देखा गया है कि मनुष्य का चिडचिडापन वाला स्वभाव तब होता है जब उसमें स्वार्थ अपमान, केवल बडाई, और अभिमान रहता है। अगर पूरी तरह जांच करके देखेंगे तो मनुष्य का स्वभाव कुछ बातों से बना है और अगर उन

तत्वा पर निय त्रण रखें तो आसानी से अपने स्वभाव पर भा नियन्त्रण रखा जा सकता है ।

जलन, ईर्ष्या, चिडचिडापन मस्तिष्क म एकदम स्थान कर लतो है ऐसे स्वभाव रखन वाले यक्ति दूसरो के विचार सहन नही कर सकत और वह हर समय यही चाहते रहने है जसा वे चाह वसा ही होना चाहिये ऐसा न होने की स्थिति म व एकदम क्रोध में आ जाते है ।

अधिकतर क्रोधी स्वभाव वाले व्यक्ति जबरदस्ती करने वाले स्वभाव क होन हैं वे दूसरो के विचारा का ध्यान कभी भी नही करते, कवल अपन विचार करते रहत हैं । दूसरा के अधिकार और परिस्थितियों को कभी भी महसूस कर ध्यान म नही लात ।

किसी व्यक्ति को भले यह इच्छा दिल म हो कि वह शक्ति म आकर धाक जमाने वाला बनकर साधारण व्यक्ति से ऊँचा दिखने मे या गणना म आये पर यह इसकी इच्छा कभी भी पूरी हो नही सकेगी जब तक कि उसन स्वय पर पूरा नियन्त्रण न किया है ।

वह व्यक्ति बुद्धिमानो की गणना मे आता है जो धैय (धीरज) धारण कर शान्ति म रहता हैं फिर चाह कसी भी चिढा देने वाली स्थितिया उनक सामन आ गयी हो ।

केवल वह व्यक्ति ही दूसरा का विश्वास प्राप्त कर सकता है जो स्वय पर और अपने सामने आई हुई स्थितिया को पूरी तरह नियन्त्रण म ला सकता है । जो यक्ति अपने मस्तिष्क पर नियन्त्रण नही रख सकता है उस पर क्या भरोसा कर सकेंगे ?

कई लाग बिल्कुल साधारण बातो पर बार बार क्रोधित हात हैं ऐसा करने से फिर जब वास्तविक (सचमुच) क्रोध करने का समय होता है तब उनके क्रोध का कोई भी महत्व नहीं होता है या नही दिया जाता है ।

जो लोग क्रोध करत हैं व बहादुरी म नही गिने जाते हैं क्रोध डर का

दूसरा रूप है जब हमारा शरीर तप तप कर लोहा हो जाता है यह दर्शाता है कि हम कितने छोटे हैं।

मैं भी कुछ समय पहले अधिक क्रोधी था अगर कोई काम अपनी मनमर्जी के प्रतिकूल होते देखता तो एक दम मस्तिष्क में गरमी चढ़ जाती थी और सब के साथ क्रोध करता रहता था, अन्त में जागृत हुआ और जाँच कर देखा कि मेरे क्रोधी स्वभाव होने के कारण मुझे कुछ भी लाभ पहुँचता दिखायी नहीं दिया पर इसके विपरीत हानि पहुँचती रही। जीवन में अनुभव प्राप्त करने के बाद मैं धीरे धीरे यह स्वभाव छोड़ता जा रहा हूँ जब भी कभी क्रोध आये तो चला जाता हूँ उस कोपभवन (शान्त) कमरे में जहाँ कोई दूसरा न हो, थोड़ा वहां रुकने से प्रतीक्षा करने से, मेरा क्रोध धीरे-धीरे शान्त हो जाता है।

एक प्रसिद्ध कहावत है जब तुम क्रोध में आकर कुछ बोलना चाहो तो "एक सौ तक गिनो" क्रोध के समय गिनती करना इसी लिये कहा जाता है क्योंकि गिनती करने में समय लगता है और समय लगने से मनुष्य फिर ठण्डा हो जाता है।

तुम जोश में आकर किसी दूसरे को कुछ कह डालते हो, इसके बाद इतने प्रसन्न होते हो कि तुमने अपने दिल का बोझ हल्का किया है पर प्रश्न है कि दूसरे को तुमने जोश में आकर कुछ कहा होगा इसका क्या हाल हुआ होगा? क्या उसने तुम्हारी इसी प्रसन्नता में अपनी प्रसन्नता समझी होगी? कभी नहीं कदाचित नहीं।

किसी व्यक्ति का कहना है कि कोई अगर जोश में मेरे पास मुट्ठा बन्द कर आये या घूसा दिखाये तो मैं शायद वापसी में दो मुट्ठियाँ बन्द कर घूसा दिखाकर उसे वापसी में जवाब दूँ। इसी बात में क्या अतिशयोक्ति हो सकता है।

अक्सर यह देखा गया है कि अधिकतर जब क्रोध किया गया है तो वापसी में भी हमें क्रोध मिलता है।

'जब तुम सही हो तो धैय (धीरज) छोडने का न तो कोई कारण है और न ही आवश्यकता है यदि तुम गलत हो तो धीरज छोडना उचित नही होगा।

यही एक कारण है कि कई लोग महात्मा गाँधी के विरुद्ध कुछ भी कहते थे इसके बाद भी उसे चिढ़ाकर क्रोध दिला नही सकते थे क्योंकि वह उपरोक्त कहावत का पूरा पयानुगम करते थे।

क्रोध करना एक छूत का रोग है सक्रामक रोग है जो शीघ्र ही फल जाता है।

सक्रामक रोग कसे फैलता है इसका एक उदाहरण निम्नलिखित है किसी घर मे एक कठोर स्वभाव की सेविका थी एक दिन उसी सेविका ने क्रोध म खाना पकाने वाले का कुछ कहा खाना पकान वाले का मस्तिष्क भी क्रोध से गरम हो गया उसने फिर इसी कारण अपनी गृह स्वामिन को किसी प्रश्न का उत्तर उल्टा दिया तब भोजन के समय गृह स्वामिन अपने गृहस्वामी के साथ बठी तो यही घूमकर चक्र खाना हुआ क्रोध एक से दूसरे क पास स सचारित क्रोध उसन अपने स्वामी पर छिडक दिया स्वामी (पति) तो बेचारा जस तसे पीछा छुडाकर अपने कार्यालय चला गया सुबह से ही गृह म क्रोध के वातावरण के कारण उसके मन मे भी उलझन आ गयी इसलिय कार्यालय म अापने स्वामी को रुखे (शुष्क) उत्तर देने लगा उसके कार्यालय स्वामी को भी आया क्रोध वह भी लगा अपमानित भाषा म बोलने, ऐसा करने स उसने भी सचारित क्रोध अपने आधीनस्थों पर उतारा यानि अपने आधीनस्थों को क्रोधवश अपमानित भाषा स सम्बोधित कर जब शाम को घर आया और क्रोध अग्नि तब सक्रामक रोग का भार वहन क लिये सम्बन्धित लोगों को यानि अपने परिवार क सदस्यो व सम्बन्धियों पर जाकर अन्त म उडेलकर फला दिया।

बचपन म शिक्षक भी जब हम अपशब्द बोल देते या तो हम मद मद्दे ऐसा ही समझत थ कि आपके शिक्षक महोदय भी घर से लडकर (परिवार के सदस्यों म लडकर) आये हैं।

क्रोधी स्वभाव पर कैसे नियन्त्रण किया जाये उसके लिये एक लेखक का लिखना है कि स्वय के साथ एक मास के लिये प्रण करना चाहिये कि क्रोध के समय एक शब्द भी मुख से नहीं निकालेंगे। ऐसी तरह करने से धीरे धीरे क्रोधी स्वभाव पर नियन्त्रण किया जा सकता है वाक शक्ति पर हमारा नियन्त्रण होना चाहिये न कि वाक शक्ति का हम पर, इसलिये मेरी तुम्हें शिक्षा है कि किसी भी स्थिति में क्रोध न करना, पर अगर क्रोध आये भी तो फिर क्रोध को नियन्त्रण मे रखना ऐसी तरह चुप करने से क्रोध का शमन हो जायेगा। ऐसे लोगो पर ईश्वर का आशीर्वाद व वरदान समझना चाहिये जिनका सीना ठण्डा है और जो गर्म मस्तिष्क रखना जानते ही नहीं।

तुम्हारा पिता

मृदु भाषण की कला सीखो।

प्रिय पुत्र, (21)

इक्कीसवी शिक्षा मेरी तुम्हें यह है कि तुम 'मृदु भाषण की कला सीखो' मृदु भाषा बोलने का कला यानि वार्तालाप की कला सीखना ही जीवन की सफलता व जीवन में सुख भोगने का द्वार है।

यदि तुम्हें स्पष्ट रूप मे अपने विचार प्रकट करने का ज्ञान है और तुम्हें अपनी बात को समझाने की पूरी व सही विधि ज्ञात है तो तुम ऐसा समझो कि तुम्हारे पास एक प्रभावशाली अस्त्र है, जिसकी सहायता से तुम हर स्थान पर सफलता प्राप्त कर सकोगे। केवल यहाँ तक ही नहीं पर इसके द्वारा समय-समय पर अनेक विवादास्पद स्थितियों पर भी सुगमता से विजय प्राप्त की जा सकती है।

मृदुल भाषी व प्रसन्नचित्त व्यक्ति को कहीं भी कभी अनुशंसा-पत्र यानि

"सिफारशी-पत्र ' को ले जाने की आवश्यकता नही। वह अपनी पहचान स्वय ही कर सकता है।

वार्तालाप करने की कला सीखना अति आवश्यक है पर आश्चय है कि ऐसी आवश्यक कला पर बिल्कुल ध्यान नही दिया जाता है विद्यालयो और महाविद्यालयो मे शिक्षक और प्रवक्ता और दूसरे भी कई विषय और भाषायें सिखाते हे पर योग्यता से कसे ' वार्तालाप किया जाये ये बातें वे बिल्कुल नहीं सिखाते।

व्यक्ति को अधिकतर नित्य यह देखा गया है कि व्यक्ति जो वार्तालाप करते हे उनको उन्हें पूरी तरह भिन्नता नही होती केवल यहा वहाँ से शब्द ज्ञात कर वार्तालाप कर रहे हैं। जो शब्दो का अध्ययन करने का प्रयास करते है बिल्कुल थोड़े ही ऐसे व्यक्ति हैं जो शब्द वे बोलत हैं वे कसे बन हैं और उसका सही-सही अर्थ क्या है। इसका उन्हें कोई ज्ञान है या नहीं ? कई ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होने वर्षों के वष कई दूसरा बाता पर अभ्यास व अध्ययन करने पर समय व ध्यान दिया है पर उन्होने अपने वार्तालाप की कला पर बिल्कुल ही ध्यान न देकर इस पर आँख बन्द कर ली है।

क्या यह तुम्हारा अपमान नही होगा अगर तुम किसी स्थान पर जाते हो जहाँ दूसरे योग्यता से वार्तालाप करते रहें और तुम मौन बैठ जाओ क्योंकि तुमने स्वय म वार्तालाप करन की योग्यता प्राप्त नहीं की है।

क्या तुम्हारे लिये यह अपूर्णतया असम्पन्नता का प्रतीक नही अगर किसी सभा या समारोह म तुम्हे बुलाया जाये कि तुम जाकर उन्हें अपने विचारो से अवगत कराओ और तुम वहाँ वार्तालाप का उचित ज्ञान न होने पर वार्तालाप न कर सको और गूंगे बनकर बैठ जाओ ?

उपरोक्त बातें व विचार ध्यान म रखकर मुझे विश्वास है कि तुम यह प्रतीत कर सकोगे कि वार्तालाप करने की कला ज्ञात करना उपयोगी, प्रभावी, व आवश्यक है। भले ही तुमने किसी और बात में योग्यता प्राप्त कर ली हो,

पर अगर तुम्हारे वार्तालाप म योग्यता नहीं, या ढग नही तो तुम्हारी दूसरी योग्यताए फिर किस काम की ?

कोई कसा भी पेशा, व्यापार करन वाला हो, पर यदि उसे वार्तालाप यानि अपन विचार प्रकट करन का ज्ञान न हो ता निश्चित रूप स दूसरी अनेक बातो म वह हानि पायेगा, और वह कभी भी लाभान्वित नही होगा।

यह एक विश्व-विख्यात वास्तविकता है कि व्यक्तियो की विजय का अधिक दायित्व उनके किये गये मृदुल व अच्छे किये गये वार्तालाप की योग्यता पर है।

कई व्यक्ति बडे-बडे पदा पर पहुँचे हैं उन्ह वे पद क्या मिले है ? वे पद व कभी भी प्राप्त नही कर सकत थे अगर उन्हें वार्तालाप करने का पूरा ज्ञान और योग्यता न होती तो।

सच पूछा तो जिन लागो मे वार्तालाप करन की कला है उनसे बात करने म एक विचित्र आनन्द है उसका बुद्धि से बात करने का ढग, मृदुल-स्वर जब कानों मे पहुँचता है तब हृदय बहुत प्रसन्न होता है। एस लोग दूसरो को मन्त्र मुग्ध कर शान्ति ला सकते हैं वार्तालाप करन की कला ही एक एसा गुण है जो सबको अपनी और आकर्षित कर सकता है।

वार्तालाप करने मे व्यक्ति को अपना मस्तिष्क और अनुभव काम मे लाना पडता है लोगो के वार्तालाप करने से एकदम ज्ञात हो जाता है कि वह कितना पढा लिखा है कितना सफर किया है उसने, कौन-कौन सी पुस्तकें पढी है उसने।

जो युवक यह इच्छा रखते हैं कि हम इस विश्व मे विजय प्राप्त करें कुछ उपयोगी बनें उनको चाहिए कि सबसे पहल 'वार्तालाप' की कला सीखें ताकि वे आसानी से और सुन्दर रूप से अपने मत व विचार प्रकट कर सकें ऐसा सीखने के बाद ही वे हर स्थान पर मान प्राप्त कर विजयी हो सकते हैं।

वार्तालाप करना बडा ही शिक्षा दने वाला है अच्छा व सुन्दर वार्तालाप

करने वाला स्वय म अच्छी विशेषता ला सकता है। वार्तालाप की कला सीखने वाले को प्रारम्भ में बोलन क ढग का अभ्यास करना चाहिये।

मृदुल वार्तालाप करन वाले को विशाल हृदय और स्वतत्र विचारवान होना जरूरी है पर यदि सकीण स्वभाव या अविस्तृत व अविकसित विचारो वाला है तो वे उसके सकीण विचार उसक वार्तालाप से ही प्रकट हो जायेंगे, और उन्ह सुनने वालों से पूरी सहानुभूति मिल नही सकगी।

देखा गया है कि कई लाग अपने वार्तालाप मे बिल्कुल झिझकते हैं और वे अपने वाक्यो को पूरी तरह मिला नहीं सकते हैं उनके वार्तालाप मे शब्दो का मिलन या मिलाप ऐसा बेजोड दिखने मे आता है जो उन पर आश्चय होता है और तरस भी आता है कि वे अभी तक यह सीख नही सके हैं कि कौन से शब्द किस रूप मे व ढग म बोले जायें ताकि उन शब्दो स पूरा अथ निकल सके।

मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि तुम अपन शब्द कोष से अपने शब्द ज्ञान की वृद्धि कर अपना शब्द भण्डार बढाने का प्रयास करो अपना कुछ समय शब्दो को सीखने म लगाओ क्याकि थोडे शब्द ज्ञात होने से तुम श्रेष्ठ वार्तालाप की कला मे कुशल हो नही सकोगे।

कई वार्तालाप करने वाले अरुचिवान समझे जाते हैं इसका कारण केवल यह है कि वे हर समय अपनी ही बातें करते रहते हैं इसलिये सुनन वाले श्रोता लोग तग आ जाते हैं, इसलिये अगर चाहा कि व्यक्ति तुम्हारी बातो से तग न हो तो तुम्ह ऐसा करने से दूर रहना पडेगा।

हमेशा बोलने से पहले यह ज्ञात कर लो कि तुम्ह क्या कहना है और यदि तुम्हारा हृदय उलझा हुआ है तो विश्वास करो कि तुम्हारे सुनने वाले भी उलझ जायेंगे और हृदय म कहगे कि यह ज्ञात नही क्या कह रहा है। अपने विचार सदव किसी विशेषता म ले आओ चाहे वे विचार कम और छोटे ही हो।

इस प्रकार स बातें करो जो लोग तुम्हारी बात का सार स्पष्ट तथा सीधा समझ सकें।

मुख्य य (जोर स) रूप से बोलना, श्रेष्ठता, शिष्टाचार व सभ्यता की निशानी नही हैं। कई लोगो को बिल्कुल जोर से बोलने की आदत है वास्तव मे इतना जोर से बोलन की कोई भी आवश्यकता नहीं है।

बोलना केवल इतना ही जोर स चाहिये ताकि दूसरा उसे पूर्णतया सुन व समझ सके।

कई लोग तो बिल्कुल निर तर गति स बोलते हैं ऐसी निरतर गति से बोलने वाला वाले भी स्वय तो समझे भी स्वय ऐसे लागो का बोलना न बालन क समान है।

बालन म हमेशा सीधा स्पष्ट व गभीर बनो। अपने लिये अधिक न बोलो और न किसी के विरुद्ध बोलो।

भल दूसरे लाग अपन लिय जितना चाहे उतना बालें, बोलने मे अपना बडप्पन न दिखाओ, यह नमूना व ढग यानि तरीका किसी को भी अच्छा नही लगगा। ऐसा करने से तुम्हारे सुनन वाले तुम्ह हलका यक्ति समझेंगे।

किसी के भी वार्तालाप के मध्य मे न कूद पडो, भले दूसरा अपनी बात पूरा कर ले जल्दी करने की आवश्यकता नही है। कई व्यक्ति बालते हैं जिनकी उन्ह कोई आवश्यकता नहा है पर क्योकि उन्ह केवल बोलने से प्रेम है। आवश्यकता से अधिक बोलना मस्तिष्क के दुबलता (निबलता) की निशानी है।

बालना मस्तिष्क के लिये व्यायाम होना चाहिये न कि वाणी के लिये केवल बोलने की श्रद्धा व मत से बोलना, मनुष्य की सफलता के आडे आयेगा।

कई व्यक्ति अपने बोलने के लिये प्रसिद्ध होते हैं उनके बोलने की विधि ऐसी होती है जैसे वे मनुष्यों से बात नहीं कर रहे हैं पर मनुष्यों के ऊपर हावी होकर बोल रहे हैं एसे व्यक्ति दूसरो की सदव निन्दा करने वाले वाद-विवादी और हस्तक्षेप करने वाले होते है।

मान्यता से केवल वे ही व्यापार बढा सकते हैं जो मृदुल श्रेष्ठतापूर्ण व सभ्यता और शिष्टाचार से बात करते हैं न वे लोग जो ऊचा बोलते हैं व्यापार में शायद कुछ ऊँचा बोलने वाले भी व्यापार कर सकते हो पर उनका व्यापार कभी भी सुदृढ व पक्की नींव पर खडा नही समझना चाहिये।

कोई भी अगर अपने वार्तालाप करने का ढग सुधारना चाहे तो सुधार सकता है अगर वह एसा प्रयास लेता रहेगा तो सिर्फ एक दिन में ही उसे ज्ञात हो सकता है कि उसकी वाणी से निकले शब्दों का लोगों पर क्या प्रभाव पडता है। मनुष्य बोलने या भाव व्यक्त करने के कारण ही लोगों में पसन्द या नापसन्द हो सकता है।

दुकानों के मालिक लोग चाहे भले अपने आधीनस्थो या कर्मचारियों को कितने ही ऊचे वेतन देते हो पर अगर उनके बोलने का ढग उनकी ओर ठीक नही है तो वे कभी भी उनके हृदयो को जीत नही सकेंगे।

तुम अपना बोलना वैज्ञानिक ढग से भी सुधार सकते हो, केवल अपने दैनिक जीवन में झाँककर देखो कि तुम्हारे बोलने के कारण साधारण व्यक्ति का तुम्हारे लिये क्या विचार है ऐसा करने से तुम अपने बोलने के दोष व कमियों को कसौटी पर परख सकते हो। पर अगर अपने दोषों व कमियो पर पर्दा डाल कर स्वय को स्वय ही क्षमा किया तो तुम इस बात में उन्नति कर नही सकोगे।

जो शब्द बोलो उनके पूर्ण रूप से उच्चारण करो, जिस शब्द के उच्चारण को तुम्हे भिन्नता नही हो तो मुख से उच्चारण करने से पहले निश्चित रूप से जान कर लो कि कैसे उसका उच्चारण करना चाहिये पूछकर सीखने में लज्जा व शर्म करने की क्या आवश्यकता है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि तुम इतनी वास्तविकताओं को जानने के बाद, वार्तालाप करने की कला सीखने का अपने मन व हृदय में दृढ संकल्प कर निश्चय करोगे और इसी कला को सीखने के बाद तुम देख सकोगे कि कैसे तुम्हें हर स्थान पर अधिक सम्मान व मान मिलता है।

तुम्हारा पिता

स्वस्थ व स्फूर्त बनो।

प्रिय पुत्र, (22)

बाइसवां निर्देशन मेरा तुम्हें यह है कि तुम "स्वस्थ व स्फूर्त बनो।" अच्छे स्वास्थ्य के बिना सफलता और सुख प्राप्त करना असम्भव है सभी निर्देशों में प्रमुख निर्देशन यही समझो।

स्वास्थ्य सम्बन्धी कई ही ऐसी तथ्य हीन बातें प्रकट होती रहती हैं यदा-कदा जो लिखते रहते हैं उन पर एक प्रकार की धुन या भूत सवार रहता है और ऐसे धुन के पक्के हर समय हमें यही सुनाते रहते हैं कि चाय काफी छोड़ो।

शारीरिक रूप से व्यक्ति तीस पतीस वर्ष की आयु में चोटी पर पहुंचता है उसके बाद धीरे-धीरे वह पिछड़ जाता है।

आश्चर्य है कि मनुष्य का पहला आधा जीवन शारीरिक है और बाद का आधा जीवन मस्तिष्क पर आधारित है, पैंतीस वर्ष की आयु के बाद मनुष्य का शरीर झुकता रहता है ठीक उसी समय जिस समय उसका मस्तिष्क बढ़ना शुरू कर देता है बिल्कुल थोड़े लोग हमें दिखायी देंगे जिनका शरीर हृष्ट पुष्ट हैं और उनका मस्तिष्क सम्पूर्ण स्वस्थ व ठीक अवस्था में है।

यह अति आवश्यक नही है कि मनुष्य अपना शरीर पैंतीस वष की आयु के बाद झुका हुआ रखे। कोई भी अपने शरीर की सुरक्षा करने से अपना स्वास्थ्य ठीक रख सकता है।

अधिक रोग विचार सम्बधित है जिससे शीघ्र मुक्ति पायी जा सकती है और वे केवल *हमारी असावधानी व अज्ञानता का दण्ड है स्वय पर पूरा* नियन्त्रण रखने के कारण यह सब हमे भोगना पडता है।

व्यापारी दुनियाँ म रोग ग्रस्त हो जाने के कारण कितनी व्यथ हानि पहुँचती हैं।

रुग्ण यक्ति ायापार को भी रुग्ण (अस्वस्थ) बना देते हैं अस्वस्थ होने पर असस्थ यक्ति काम पर नही आते हैं। यह सब हानि रुग्ण हाने के कारण होती हैं।

रोग पूणतया प्राकृतिक नही है यदि तुम अपने शरीर को पूरा स्वस्थ रहने का अवसर दोगे तो तुम्ह अस्वस्थ हा जाने के लिये कोई भी साधारण कारण नहा। विश्व म कवल तीन प्रतिशत बुढापे के कारण मरते हैं शेष दूसरे तो स्वास्थ्य के दूसरे नियम पूरी तरह न पालन करने के कारण अपने स्वास्थ्य को अपने हाथों से नष्ट करते हैं और दूसरे श दो मे ऐसा कहें कि वे एक तरह आत्म-हत्या कर रहे हैं।

सभी याधियों से मुक्त होने के लिये यह अति आवश्यक है अपने शरीर के अन्दर जितने भी कल-पुर्जे हैं उसका पूण ज्ञान रखना चाहिये।

मनुष्य के शरीर में 208 हड्डिया हैं और चार सो से अधिक मांस पशियाँ हैं सबसे बडी हड्डी जाँघ का है और छोटी सी छोटी कान की पापडी की हड्डी है।

व्यक्ति का कपाल देखन से ही पता लग सकेगा कि कसे सावधानी व सूझ-बूझ स यक्ति की ठीक व ठोस विधि से रचना की गयी हैं।

इसा ईश्वरीय सौगात वरदान व आशीर्वाद रूपी स्वास्थ्य का हम पूरा पूरा लाभ लेना चाहिये।

व्यक्ति की जो माँस पेशिया हैं उसे जितना अधिक काम मे लायगें उतना ही अधिक वे दृढ होती हैं औसतन व्यक्ति क माँस पेशियो की तौल तीस किलो है।

प्रत्यक साधारण व्यक्ति की शक्ति घोडे की शक्ति का सातवा भाग है, और सात व्यक्तियो की शक्ति एक घाडे की शक्ति के (समान) बराबर है। व्यक्ति की बाह बिल्कुल दुबल हैं यदि इसका प्रमाण चाहते हो तो किसी रस्सा को पकडकर ऊपर चढने का प्रयास करो बहुत थोडे व्यक्ति अपनी बाह निर तर प्रयत्न करने स 19 मिनिट मे अधिक पकड सकेंगें। इसलिय प्रयत्न कर सीधी बाहों मे काम नही करना चाहिय। ऐसा करन मे अधिक थकावट होगा।

प्रत्यक व्यक्ति क लिये रक्त का उसके ही शरीर म सही ढग से दौडना अति आवश्यक है अगर व्यक्ति बठा हुआ है ता उसके रक्त का घुमाव व सचरण या चक्कर बिल्कुल साधारण सा होता है। और पदल चलता है ता रक्त घुमाव चक्कर अधिक हाता है, दौडने म तो बिल्कुल माँस पशियो स अधिक। पट्ठो या माँस पेशिया से अगर निरतर गति स काम लिया जाय तो रक्त सचरण अधिक होता है इसी स हो प्रमाणित है कि व्यक्ति के लिये काम करना कितना आवश्यक है। जो व्यक्ति किसी प्रकार का काम नही करता ह या खेलकूद म भाग नही लेता है वह अधमर क समान है।

जो व्यक्ति सोच विचार नही करता है उसका मस्तिष्क मन्द व सुस्त पड जाता है एस व्यक्ति का रक्त सचरण शरीर के दूसरे भागा म तो हाता है पर गरदन स ऊपर नहीं जाता है। व्यक्ति के लिये रक्त ही उसके मस्तिष्क और शरीर क बनने म सहयाग दता है प्रकृति की कवल यही औषधि है मेरी समझ म तो विश्व म यही एक हा सबसे बडा आश्चय है।

हम म से कई साफ व शुद्ध हवा नहीं लेते हैं जिसका परिणाम यह

निकलता है कि अनेक व्यक्ति क्षय रोग से पीडित हो जाते हैं जो व्यक्ति चुप होकर बैठता है वह केवल दसवा भाग ही अपने फेफडो से काम लेता है जो व्यक्ति व द कमरे म रहता है वह स्वय से निकली हुई विशाक्त (वायु) हवा म फिर साँस लेता है पूरा शरीर है रक्त का एक कारखाना, और फेफडो का काम है रक्त को शुद्ध व साफ करना ।

उपरोक्त बातो को अच्छी तरह पढने से तुम्हें अपने शरीर के रहस्य का ज्ञान हो जायेगा । और यह याद रखना कि हम यदि शरीर को पूरे नियम व विधि स चलायेंगे तो लम्बी आयु आनन्द से जी सकेंगे और साथ साथ जीवन का सच्चा आन द प्राप्त कर सकेंगे ।

शरीर से अधिक काम लेकर उसे थकाकर और सुस्त बनाकर, यही दानो बातें व्यक्ति के जीवन को कम करने वाली हैं इस दोनो बातो से मुक्त हान का प्रयास करेंगे तो लम्बी आयु आन द से प्राप्त कर सकोगे ।

कोई भी यदि स्वस्थ व्यक्ति अनभिज्ञ नही है तो स्वास्थ्य के मुख्य नियमा का पालन कर वह लम्बी आयु आन द म जी सकता है ।

एक जो आवश्यक बात अपने शरीर सम्बन्धी समझनी चाहिय वह है हमारा शरीर एक शक्ति का तालाब है जिसका काय है शक्ति खच करना और शक्ति अर्जित करना । तुम अपने शरीर म जितनी शक्ति अर्जित कराग उतनी ही तुम उसमे से निकाल सकोगे व उपभोग कर सकोगे, इमस अधिक शक्ति इसमे से निकालना असम्भव है नित्य तुम्हारी शक्ति दैनिक काम करन से कम हाती है और फिर रात का आराम करने से यह शक्ति वापसी म तुम प्राप्त करते हो यह दर्शाता है कि व्यक्ति के लिये नीद करना कितना आवश्यक पहलू है ।

हर व्यक्ति क शरीर को चार वाता की आवश्यकता है भोजन, काम, शुद्ध हवा (वायु) और नीद । भोजन कसा खाना चाहिये इसके लिये लागा म मतभेद है मेरी समझ म भोजन वह खाना चाहिये जिसके लिये मनुष्य को अपने हृदय पर किसी प्रकार की रुकावट बाधा अडचन नही है मनुष्य क वल पुर्जे किसी भी भोजन स रक्त पैदा कर सकते हैं भोजन के लिय यह दो

वास्तविकताएँ अवश्य ही ध्यान में रखनी चाहिये कि भोजन को चबाकर (थूक Saliva)से मिलाकर बाद में निगलना चाहिये क्योंकि देर से पचने वाली वस्तु अगर पूरी तरह चबाकर खायी जाती है तो शीघ्र पच जाती है। हर व्यक्ति को धीरे धीरे खाना चाहिये भोजन करने के बाद कम से कम पन्द्रह बीस मिनिट आराम करना चाहिये, पेट में पूरी तरह चबाया हुआ भोजन निगलकर उसे काम करने के लिये पूरा समय देना चाहिये, ऐसा करने से तुम्हें कभी भी अपच की शिकायत नहीं होगी।

दूसरी वास्तविकता यह है कि कभी भी भोजन ऐसा नहीं करना चाहिये जो तुम्हारे अनुकूल नहीं आता या एक दूसरे से अनुकूल नहीं आता अर्थात दो वस्तुएं सम्मिलित कर या मिलाकर खाने से हानि होने की सम्भावना हो भोजन का सदैव जोड या मिलाप होना आवश्यक है ताकि भोजन को पचाने में पूर्णतया सरलता हो।

अच्छे से अच्छी वस्तु है पीने को दूध, जिससे ही मनुष्य ने अपने जीवन का शुभारम्भ किया है दूध परिपूर्ण है, यह वह भोजन है जिसमें सब प्रकार की बल व शक्ति विद्यमान है यदि कोई भी अपना स्वास्थ्य गिराता है तो मैं उसे यह ही सलाह दूंगा कि फिर से जाकर बालक बनो यानि कि फिर से दूध पीना प्रारम्भ करो।

काम व्यक्ति के लिये आवश्यक है मनुष्य को शक्ति केवल अन्दर रखना व एकत्र करना ही पर्याप्त नहीं है पर उसे शक्ति का उपयोग भी करते रहना है कुछ व्यक्ति सुस्त होकर जीवन व्यतीत करते हैं जिसका परिणाम यह निकलता है कि यदा कदा सर्वथा रुग्ण रहते है या रोगी जीवन व्यतीत करते हैं काम है शक्ति वर्धक व बलवर्धक, अर्थात काम है शक्ति को बढाने वाला टानिक Work is Tonic' अगर तुम्हें विवश होकर कभी मेज पर निरन्तर काम करना पड़ता है तब भी तुम्हें चाहिये कि घण्टा आधा घण्टा पैदल चला करो इसके अतिरिक्त प्रातःकाल नित्य व्यायाम करो जिससे तुम्हारे शरीर में रक्त पूरी तरह सचरण होता रहे।

शुद्ध व साफ वायु मनुष्य के लिये आवश्यक है एक वैज्ञानिक का कहना है

कि मनुष्य है "हवा का मच्छली" जिम तरह मच्छली पानी क विना रह नहीं सक्ती है उमी तरह मनुष्य भी वायु के विना जीवित नही रह मक्ता हर वप असख्य जोवन लीलाग्रा की समाप्ति क्षयरोग से होती हैं जिसका कारण सिफ यह है कि स्वच्छ व शुद्ध हवा पूरी तरह न लेकर पफड़ा का साफ करने के लिये फफडे हवा को अन्दर प्रवेश होने म सहायता करत ह। सवरे उठकर लम्बी साँस लो फिर जब कमरे स बाहर निक्लो तब भी तुम्ह एमा करना चाहिय जहा तक हा सके वहां साम लने का प्रयास करो।

नीन्द भी कई तरह की होती हैं अत्यल्प व्यक्ति ही नींद का पूरा लाभ लत हैं व्यापारी दुनियां म नीन्द पूरी न करने से कई हानियां होती हैं और मनुष्य रुग्ण होते रहते हैं पडत रहत हैं, प्रत्येक मनुष्य का आठ घन्टे नान्द अवश्य लेनी चाहिये प्रात शीघ्र उठने क लिये रात को सोने के लिये बिस्तर पर समय स शीघ्र ही जाना आवश्यक है फिर सवरे उठने क लिये काल सूचक यन्त्र घडी उठन के हिमाव स बनाकर रखने हैं भला जो मनुष्य नान्द पूरी तरह नही लेता है वह अपना पूरा दिन अच्छी तरह से कैसे व्यतीत कर सकेगा। फिर देखा गया है कि व्यक्ति केवल सिर दर्द की गोलिया मन्गैव खरीदत रहते हैं।

कही भी किसी व्यक्ति को अगर देर से सुलाकर और सुवह सवेरे शीघ्र उठाया जाता है वहाँ पूरी तरह काम होने की आशा नहीं रखनी चाहिये प्रत्येक को अपने सोन यानि नींद का पूरा लाभ लेना आवश्यक है। शयनकाल म बिस्तर पर जाने से पहले तुम्ह समारिक बातें अपने मस्तिष्क से निकाल देनी चाहिय रात्रि विश्राम यानि सोने के समय स्वय को बिस्तर पर इस तरह से फेंका जसे रेत की एक बोरी हा ऐसा करने स निश्चित रूप से प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त कर देखोगे कि तुम्ह नींद स कसा आन द आता है।

पट की सफाई एक आवश्यक प्रश्न है। पट हमे प्रकट रूप से (आ तरिक विकृति) दिखने म नही आता है पर गहरा और सदव अस्वच्छता स भरा हुआ। इसलिये इस पेट के विषय म वणन करना सभ्यता शिष्टाचार का प्रमाण नही समझा जाता है यही कारण है कि हम इस सम्बन्ध मे अनभिज्ञ

रह जाते हैं तुम्हे न केवल बाहरीय रूप से स्नान कर साफ और उज्जवल बनना है पर पेट साफ रखकर आंतरिक सफाइ भी करनी है,

अधिक फल खाना, पानी अधिक पाना अच्छा खाना व्यायाम करना यह सब बातें पट को स्वच्छ रखने मे सहयोग देते हैं।

अब पदन चलने की एक कला व ढग और विधि निकाली गयी हैं यदि तुम पदल चलना चाहते हो तो व्यायामिक विधि से पैदल चलन का प्रयास करो। एसा करने से तुम पैदल चलने का सच्चा लाभ लें सकोगे।

तुम्हारी आखे भी अधिक ध्यान ले पान की अधिकारी है वतमान समय मे हम आखो से अत्याधिक काय ल रहे हैं। किसी भी मन्द राशनी म काय नही करना चाहिये, लम्प की रोशनी या तो पीछे स आनी चाहिये या ऊपर से।

सदैव प्रसन्नचित और आशावादी बनकर रहो चिन्तन का सत्व स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव होता है, दृढ निश्चयी लम्बी आयु आनन्दमय होकर जी सकते हैं।

तुम्हारा पिता

——

सुरक्षक, मितव्ययी व सजावटी बनो।

प्रिय पुत्र, (23)

तेइसवी शिक्षा मेरी तुम्हें यह है कि तुम सुरक्षक, सजावटी व मितव्ययी बनो। सुरक्षता, सजावट व मितव्ययिता की आदत स्वयं में डालने से तुम कभी भी दुखी व असफल हो नहीं सकोगे। देखा गया है कि बुद्धि से काम न लेकर आजकल सुरक्षता सजावट व मितव्ययिता पर अत्यल्प ध्यान दिया जाता है परिणाम यह निकला है कि चारों तरफ दुख और अशान्ति बढ़ गई है।

प्रत्येक मनुष्य के सुख व सफलता का आधार उसकी आर्थिक अवस्था पर आधारित है अगर किसी की भी आर्थिक अवस्था ठीक नहीं है तो वह सुखी कैसे हो सकता ?

अगर कोई भी अपनी आर्थिक अवस्था सुधारना चाहे तो सबसे पहले उसे अपनी आय से बचत करने की कला सीखनी चाहिये अगर स्वयं इस बात पर ध्यान नहीं देता है तो वास्तव में उसका जीवन आनंद से व्यतीत नहीं होगा।

चाहे मनुष्य कितना ही धनवान हो पर तब भी उसे हमेशा कुछ न कुछ बचाते रहना चाहिये ताकि यह बचत धन वर्षा बरसते काम आ सके।

यह दुनिया हमेशा दो भागों में वितरित है। एक जिन्होंने व्यय किया है और दूसरा जिन्होंने बचाया है दूसरे शब्दों में यही कहना चाहिये कि एक अपव्ययी दूसरे मितव्ययी सुरक्षक।

दुनिया में इतने भवन, महल, मिलें, कारखानें, जहाज सभी उन्होंने ही बनाये हैं जिन्होंने मितव्ययी बनकर धन बचाया है।

सजावट व मितव्यय के बिना बचत हो सकती है क्या ? और बचत के बिना यह महल और बडी बडी गगनचुम्बी इमारतें (भवन) बन सकते थे क्या ? जिन्होंने अपव्ययी बनकर धन व्यय किया है वे फिर उन सुरक्षकों व मितव्ययिओं के दास बनकर रह रहे हैं। यह एक प्राकृतिक नियम है और ईश्वर की यह रचना व जोड प्रकृति सदैव यूं ही चलती रहेगी।

अगर धन तुम्हारे पास कभी भी धीरे से आय तो हृदय छोटा न करो। और फिर जब धन निरन्तर गति से आय तो अपना मस्तिष्क आकाश में न चढ़ा लेना, देखा-देखी में आकर या घमण्ड में चूर होकर अपव्ययी न बनना।

यह याद कर लो जैसे समय बीतता जायगा और बड़ी अवस्था होगी वैसे ही तुम्हें धन की अधिक आवश्यकता पड़ती रहेगी। यह भी एक निरंतर गति में एक कारण है जो तुम्हें अकारण भी अपने भविष्य के लिए कुछ न कुछ धन संग्रह करते रहना चाहिये।

कितने ही नामसमझ परिवारों का मुख नाम है विशेष रूप से जाते हैं जिन्होंने वास्तव में स्वयं को नष्ट कर लिया है क्योंकि उनका प्रारम्भ सौभाग्यवश ठीक हुआ था पर वे आने वाले समय अर्थात् भविष्य में दुख-दर्द कठिनाइयों का विचार न कर उदासीन होते रहे और फिर जब आवश्यकता का समय आया तब कुछ अगर बचाकर रखा गया होता तो उनके कठिनाई के समय काम आता।

इस प्रकार के विनाश के उदाहरण सहस्रों मिल सकेंगे। एक परिवार फिर जाते हैं ब्याज खोरों के आगे हाथ फैलाने कभी भी शीघ्र धनवान बनने का कुप्रयत्न न करो अकारण ही धन प्राप्त करने के लिए आवश्यकता से अधिक चिन्तित न होना। अधिक धन कमाने की आशा व लालसा बहुत कम लोग कर सकते हैं। सुरक्षता, मितव्ययिता व उचित सजावटता से कोई भी अपनी आजीविका आसानी से कमा सकता है।

प्रायः सदा यह सुना गया है कि बहुत कम धनवान विरले ही सच्चाई से धन प्राप्त करते हैं और यह भी वास्तविकता है कि सच्चाई के कारण दारिद्रय (दरिद्रता) सहज व अकस्मात् से आ जाती है।

वास्तव में दरिद्र (ग़रीब) वह नहीं है जिसके पास धन थोड़ा है पर दरिद्र (गरीब) वास्तव में वह है जिसे हर समय धन की अधिक आवश्यकता बना रहता है।

वास्तव की अनुकूलता मे किसी का भी इस दुनिया म अपना काम चला-कर गुजारा करने के निय अकारण ही कुछ अधिक नही चाहिए। इसलिये आजाविका के लिए अधिक चि ताग्रस्त होन का भा कोई कारण नहा।

ममयसार से समझदार लोग वका वाले समझे जाते हैं व भा अधिक सावधानी का पालन करन के बाद भी भूलें कर सकते हैं ता फिर तुम्हें तो और भी अधिक सावधान रहना चाहिय। बचपन मे हम सिखाया जाता था कि दो और दो चार होते हैं पर बाद म जीवन म यह देखा गया कि दो और दो बाईस या एक और एक ग्यारह और या इस तरह हिसाब कर अधिक हा सकते हैं।

हर वस्तु ठीक अपने स्थान पर रखन की स्वय मे आदत डालो जिन वस्तुओं स तुम्हारा काम निकल चुका है उनको यदि कुछ कष्ट उठाकर यथा स्थान रखोगे तो फिर तुम्ह इन्हीं वस्तुओं की आवश्यकता पडने पर ढूढने में आसानी होगी। ऐसा करने से तुम कितना ही समय बचा सकोगे।

छोटी छोटी वस्तुए जसे पिनें काम म लाये गये लिफाफे वगरह व्यय समझ कर फकने की आवश्यकता नहीं है। ऐसी छोटी छोटी वस्तुए तुम्हे समय समय पर उपयोगी प्रमाणित हो सकती है।

प्रकृति को चाहिये बहुत थोडा ही और देती है बहुत अधिक ही। हाँ पर भोग विलास अर्थात महाभोग आन द विलास, आन द मजे अवश्य महगे हो सकते हैं। धन के आय व्यय का ब्यौरा सदव पूरी तरह स्वय म रखने की आदत डालो ये लिखने का तात्पय यह नही है कि तुम्ह छोटी छोटी बातो के आकडे रखने चाहिये मेरे लिखने की इच्छा यह है कि तुम्ह स्पष्ट रूप से प्रतीत होना चाहिये आभास होना चाहिय कि धन आता है कहा स ? और फिर व्यय होकर जाता कहाँ और कम है ?

महात्मा गाधी भी अपनी आत्म कथा म लिखते हैं कि बचपन से लेकर उन्होंने आय व्यय का लेखा जोखा रखने की स्वय म आदत डाली थी। आत्म कथा म स्पष्ट उल्लेखित है कि इसी नियम का पालन करन के कारण

ही ग्राम लोगो का लाखो रुपया का व्यवहार उसके हाथो से बिना किसी भूल के नियमानुसार निकला और उसने पूरी आयु मे ऋण किसी से नही लिया था। सदव वचत कर मितव्ययिता से चलने के कारण उलटा कुछ न कुछ शेष बचत करते आ रहे थे उन्होने नवयुवको को सलाह दी थी कि अगर वे भी अपने धन का लेखा जोखा समय समय पर रखते आयेंगे ता उसके समान लाभ ले सकते हैं।

किसी भी आदमी को यदि यह मालूम नही, आभास नही कि उसका व्यय कितना है और आय कितना है तो वह व्यक्ति शीघ्र ही अपव्ययी हो जायेगा अपव्यय प्रारम्भ होता है, जब आखें बन्द की जाती है और यह मालूम नही रखा जाता है कि क्या-क्या किया जा रहा है। और फिर आखें कब खुलती हैं जब दिवाला घोषित हो जाता है। यदि तुम व्यय भी करना चाहो तो भले करो, पर यह सब अपनी आय से करो। हर वर्ष अपनी आय मे से कुछ न कुछ बचाना आवश्यक है। दूसरी एक मुख्य बात है कि कभी भी ऋण न लो, ऋण को सदैव रोग से ही तुलना की गई है कहावतनुसार कर्ज मर्ज के समान है इसमे अतिशयोक्ति नही है जसे "Who goes borrowing goes sorrowing' अर्थात् जो कोई ऋण लेता रहता है वह दुख भोगता रहता है।

एक अंग्रेज विद्वान का कथन है कि भूख कठोर परिश्रम अपमान अन्याय, अभिमान यह सब बातें मनुष्य के लिए बुरी है, खराब है पर सबसे अधिक खराब बात है ऋण।

दूसरी कहावत इस रीत है— "Rather go to bed supperless than rise in bebt' अर्थात् बिस्तर पर रात्रि भोजन के बिना भले जाइये, पर सुबह को उठकर स्वय को ऋण मे न देखना चाहिये। अर्थ यह है कि भूखे भी भलो, पर ऋण से दूर भागो।

कभी भी बड़ा ब्याज लेने का कुप्रयत्न न करो और न ही कभी बड़ा ब्याज देने का विचार करो जो तुम चुका न सको और डूब जाओ अर्थ यह है बड़ा ब्याज लेना है बड़ा Risk जोखिम लेना) बड़ा ब्याज लेना, लेनदार के लिये देनदार के लिए दोनो के लिए ठीक नही है। इसके सिवाय अपना पूरा

धन एक ही स्थान पर एकत्र कर सुरक्षा की दृष्टि से नही रखो, भले ही तुम्हें सब की ओर से ऐसा परामर्श मिला हो। ऐसा करने से भगवान न चाह अगर कुछ नीचे ऊपर हो जाये तो तुम्हारी सब आशायें सब सपनें पानी म मिल जायेंगे।

महात्मा गांधी जस महापुरुष इतना व्यस्त रहन क बाद भी ऐसी वस्तुओ जिनें व काम म आए हुये लिफाफे को न फेंककर सुरक्षित रखत थ फिर जब आवश्यक्ता पडती थी, तब इन्ही इक्ट्ठी की वस्तुओ को उपयोग म लाते थे।

सुरक्षक, सुसजावटी व मितव्ययी बनने के सिवाय बहुत कम व्यक्ति धनवान हो सकते हैं पर फिर सुरक्षक सुसजावटी व मितव्ययी बनने स बिल्कुल कम लोग दरिद्र हो सकते हैं।

छोटे छोटे व्ययो (खर्चों) पर कभी भी आँख बन्द नही करनी चाहिय पर ध्यान मे रखो विचार म रखो कि छोटा (छेद) छिद्र भी बडे जहाज का डुबाकर नष्ट कर सकता है।

उस किसी को भी धनवान नही समझना चाहिए, जिसका व्यय उसका आय से अधिक है और वह व्यक्ति दरिद्र नहीं हैं जिसका व्यय आय से कम है।

मितव्ययी उसे नहीं समझना चाहिए जो थोडा व्यय करता है पर उस समझना चाहिए जो बुद्धि से व्यय करता है।

व्यक्ति का वही समय अधकारमय समझना चाहिए जिस समय वह बिना किसी परिश्रम के धन प्राप्त करने का विचार व योजना हृदय व मन म बनाता है। परिश्रम से धन कमाने मे अधिक आनन्द है कई लोग हैं जब धन उनके पास रहता हैं तब वे उसकी पूरी सुरक्षा नही करते पर आख तब खुलती है जब धन की समाप्ति के लक्षण नजर आने लगते है अब क्या होत जब चिडिया चुग गयी खेत। फिर भी ऐसी बात नही, धन के हाथ मे निकलने के बाद आख खोलना और दुख करने से कुछ अधिक लाभ नहीं होने का है।

कंजूस होने से शर्मिन्दा या लज्जाशील हो सकते हो पर सुरक्षता व मित-व्ययिता करने में कभी शर्म है ?

आशा है कि तुम मेरे इस लिखन की हार्दिक इच्छा, भावना, उद्देश्य के आत्म-प्रबोध को समझ गये होगे और करू आशा कि तुम अपने जीवन में सम्व मित व्ययिता और सुरक्षता से व्यवहार चलाते रहोगे।

तुम्हारा पिता

आलोचना सुनने से न डरो।

(24)

प्रिय पुत्र,

चाइसवा निर्देशन मेरा तुम्हारे लिये यह है कि तुम "आलोचना सुनने से न डरो।' आलोचना क्या है ? आलोचना और कुछ नही जो हमारी कमियां दोष हैं उनका और हमारा ध्यान आकर्षण करा हम सावधान करने का एक संकेत भर है वास्तव में आलोचना से काफी कुछ सीखा जा सकता है बुद्धिमान व्यक्ति दूसरों की आलोचना करने से गुण ग्रहण धारण' कर दूसरी बातों पर दृढ होकर बढ़ता है।

यह याद कर लो कि विश्व में लोग सदैव कई बातों पर आलोचना करते रहते हैं उदाहरणार्थ आज तुम पर आलोचना कर ली फिर अगर कल कोई दूसरी नई बात मिली तो उसी नई बात पर आलोचना करने लगेंगे, कहने का अर्थ यह है कि आम लोगों को सदैव आलोचना करने के लिये नये नये विषय चाहिये। यह एक मनोशक्ति है जो तुम्हें जानकर और समझकर मस्तिष्क में केन्द्रित कर छोडनी चाहिये इसी लिये यदि कभी भी अपने ऊपर आलोचना होते देखो तो घबराना नहीं। हृदय में समझो, कि लोग अपने

वस मे आकर ऐसा करते हैं लागो की निन्दा और आलोचना का कभी भी हृदय म डर नही रखना ।

आलोचना से सीखने की बात इसीलिये कहता हू कि अक्सर देखा गया है कि जो लाग आलोचना करते रहते हैं वे कुछ सीमा तक सही होने हैं और वह लोगा के केन्द्र बिन्दु स हमे परिचित करात हैं । इसीलिये आलोचना होने पर स्वय को कभी भी निवल करक नही छोडना चाहिये अर्थात अपने उद्देश्य व लक्ष्य के (आडे) सामने नही आना चाहिये । कितनी भी कठोर व गभीर आलोचना होते हुए भी सिर ऊँचा कर चलते रहना चाहिय ।

जीवन मे कठिन स कठिन पाठ सीखना है ता वह है आलोचना होन के बाद अपना सीना ठन्डा रखना । हालाकि यह पाठ सीखना पूर्णतया कठिन है पर सीखना व सहन करना असम्भव नही है । इच्छा-शक्ति को दृढ करन से यह पाठ सरलता से धीरे धीरे सीख सकते हैं ।

मैंने कई योग्य व्यक्ति देखें हैं जो जीवन म कुछ भी सफलता प्राप्त कर नही सक हैं इसका कारण एक केवल यह भी है कि वे केवल लागा की आम मत आम राय व आम विचारो को प्रकट करन से डरते हैं उनक हृदयो पर सदव यही विचार रहता है कि लोग क्या कहेंगे ?' यह भूत उनके सिर पर हमेशा सवार होता है ।

प्रसिद्ध लेखक बरनार्ड शाह ने अपने कार्यालय मे निम्नलिखित कहावत लिखकर टाग दी थी —They say what they say ? Let them say" अर्थात वे कहते हैं क्या कहत है ? भले उन्हे कहने दें

हम भी अगर अपने जीवन म आम विचार या लोक राय से न डरकर उपरोक्त कहावत के अनुसार अपने हृदय में यह लिख लें कि 'भले उनको कहने दें' तो कितनी बातों म आग कदम (डग या पग) बढा सकेंगें ।

यूरोप के एक विद्वान गेटे (Goethe) ने आलोचना के लिये इस तरह कहा है ' Never answer your critics, do better your-selves and

go forward' अर्थात आलोचना करने वालों को कोई भी उत्तर न दो, अपना काम श्रेष्ठ विधि से करते रहो और आगे बढते चले चलो।

निन्दा व आलोचना से अकारण ही डरने की क्या आवश्यकता है बदनामी कीचड के समान है जो अच्छी वस्तुओं को भी नष्ट कर देती है। इसी बदनामी के कीचड से मोची से लेकर राजा तक मुक्त नहीं हो सके हैं इसी कीचड ने कितनी ही पवित्र-पावन आत्माओं को भी मला गन्दा कर दिया है इसलिये इस हिसाब से यदि इसी कीचड रूपी बदनामी का थोड़ा सा छींटा भी तुम्हारे जीवन में आकर लग जाय तो अकारण ही डरने की क्या आवश्यकता है ?

कभी भी तुम पर अगर आलोचना हो तुम अपने लिये एक प्रकार का गव मान या कृपा व लाभ ही समझो, क्योंकि आलोचना उन्हीं लोगों पर कभी भी नहीं की जाती हैं जो घरों में या यहां वहां किसी छिपे कोने में चुपचाप मौन रहते हैं आलोचना केवल ऐसे लोगों पर होती हैं जो इस विश्व में सिर ऊँचा कर स्वयं को प्रकट करना चाहते हैं या प्रगट हो चुके हैं। स्वयं पर आलोचना होते देख तुम्हें ऐसा समझने का हर कारण है कि तुम गिनती में आ चुके हो चर्चा का विषय बन चुके हो।

सूक्ष्मता से जाँचकर देखोगे कि जो व्यक्ति इस विश्व में सफल हुये हैं या जो सफल होना चाहते हैं उन पर सदव आलोचना होती रहती है। विश्व के प्रसिद्ध नेताओं के उदाहरण देखोगे तो आसानी से प्रतीत हो सकेगा कि व आलोचना से कभी भी मुक्त नहीं रहे हैं और यह आम तौर कहा जाता है कि नेतृत्व में प्रवीणता व सहन शक्ति का पुरस्कार व मूल्य है आलोचना-और बदनामी पर हम व्यर्थ किसी पर आलोचना नहीं करनी है।

विश्व में जैसे अधिक व्यक्ति करते हैं उसी नमूने में अकारण ही करने व चलने की आवश्यकता नहीं है। जीवन में कभी-कभी आधिक्य का समर्थन या अनुमोदन करने के विपरीत अपने रूप से चलने का प्रयास करो फिर चाहे लोग आम तरह तुम पर शोर व मजाक करते रहें क्योंकि आम तौर सदैव ऐसा होता रहता है या ऐसा किया जाता है। आधिक्य व्यक्तियों के विचारों कोलाहल रुकावटों अड़चनों बाधाओं व परेशानियों पर अधिक ध्यान देना व्यर्थ है।

सिर ऊँचा कर सीधा रास्ता ढूंढकर अपनी इच्छाओं और मस्तिष्क का अभ्यास करते रहना चाहिये फिर चाहे आम लोग क्या कुछ कहते हो।

कई लोग जब उन पर थोडी भी आलोचना होती है तो घबरा जाते हैं। और अपने कार्यों मे उलझ कर असमजस म पड जाते है रुक जाते है और केवल यही आलोचना उन्हें मायूस कर देती है। ऐसे समय पर सदव अपना चमडा सख्त कठोर व मोटी रखनी चाहिये और हृदय का विशाल रखना चाहिय।

कुछ समय पहले की बात है एक मेरा मित्र मेरे पास आया चेहरे पर मायूसीपन झलक रहा था उससे प्रतीत हुआ कि उस पर किसी समाचार पत्र के सपादक ने बहुत कुछ आलोचना लिखी थी।

उसने मेरे से निम्नलिखित वार्तालाप कर राय मागी व प्रश्न किये — सपादक को शत या चलेंज भेजू ? क्षमा की चाहना रखूं ? मानहानि या (Deformation) का केस (दावा) ठोक दूं ? पर मैंने उसे यही सलाह दी कि कोई भी कदम न उठाओ जिन लोगो ने यह समाचार पत्र पढा होगा उनमे से आधे लोगो ने शायद यह विषय देखा भी न हो जिन्होने यह विषय अगर देखा भी हो तो उनमे से कईयो ने उसे पढा भी न हो पर जिन्होने यह पढा भी हो पर हो सकता है समझा भी न हो, पर अधिक उसे यह भी बताया कि जिन लोगों ने यह विषय अगर समझा भी हो तो शायद विश्वास भी न किया हो यदि अत्यल्प व्यक्तियो ने विश्वास भी किया हो तो उनकी बातें अकारण सोच और विचार म लाना ही क्यों चाहिय ?

मेरे उपरोक्त विधि से समझाने पर मेरा मित्र जो सचमुच उसी सपादक से लडने के लिये तैयार होकर आया था वह शान्त होने लगा और गभीर होकर मौन (चुपचाप) बैठ गया।

आलोचना एक कुत्ते के समान है अगर कुत्ता देखता है कि तुम उससे डर रहे हो तो वह तुम्हारे पीछे अधिक पडेगा, और तुम्हें सताने का कुप्रयास करेगा इसी तरह आलोचना से यदि डरते रहोगे तो वह रात दिन तुम्हें

सताती रहेगी, कुत्ते को छोड दो भौंकने के लिये। और भूल जाओ फिर देखो कि कैसे कुत्ता सताना बन्द कर देता है।

आलोचना को बुद्धिमत्ता व (दूरदर्शिता) दूरदृष्टि से देखो यही आलोचना तुम्हारे लिये बाद में सहायक सिद्ध होगी व आशीर्वाद व वरदान प्रमाणित होगी।

हम आलोचना से इसलिये डरते है कि ऐसा न हो कि यह सच्ची हो जाय और जितना यह हम सच समझ रहे हैं उतना ही हम अधिक अकारण भी हृदय में लज्जित हो रहे हैं पर तुम्हें यह सब फिर अलग दृष्टि से देखना चाहिये।

क्योंकि आलोचना में अधिकतर कुछ न कुछ सच्चाई का अंश सदैव विद्यमान रहता है इसलिये कुल व्यक्ति को इसी आलोचना से गुण ग्रहण करना चाहिये।

तुम यदि अपने व्यक्तित्व को बढाने मे ही व्यस्त और ग्रस्त रहोंगे तो तुम्हें समय ही नही मिलेगा इन छोटी छोटी बातो पर चिढ जाने का।

हर समझदार मनुष्य को यह ज्ञात है कि वह सम्पूर्ण नहीं और उसमे अवश्य ही दोष भी होंगे इसलिये कोई भी आलोचना होती हैं तो उसे यह अवसर मिलता है कि उसमे जो दोष हैं उनकी वह जाँच करे इसलिये इसी विचार से आलोचना का सदैव स्वागत होना चाहिये। यह सीखना आवश्यक है कि जीवन में हम, मोटी कठोर चमडी कैसे बनाकर रखे।

यह सभी हल्कापन व कमी हैं कि थोडी बहुत ऐसी न अच्छी लगने वाली आलोचना पर चिढ जायें। और ऐसा कठोर बनें जो किसी बाहरीय आलो-चना पर ध्यान ही न देना चाहिये। समझना चाहिये कि जो कुछ हम कर रहे हैं वह सब ठीक है, दूसरे किसी को कुछ भी कहने का अधिकार नहीं। —

उपरोक्त रूप मे कठोर न होने से, और कठोर व मोटी दृढ चमडी रखने से तुम आलोचना से बहुत अधिक प्राप्त कर सकते हो। क्या हुआ यदि

आलोचना करने वाला तुम्हारा कोई दुश्मन है और तुम पर आलोचना कर अपना हलकापन दिखला रहा है ? आलोचना स्वयं को सुधारने का मार्गदर्शन समझो फिर चाहे तुम्हारे विरोधियों का अपना कोई उद्देश्य हो इच्छा हो, दुश्मन की आलोचना मित्र की आलोचना से अधिक उपयोगी है।

तुम्हारे विरोधियों की भले आलोचना करने में बिल्कुल सही उद्देश्य न हो भले यह कुप्रयास भी करते हों कि तुम्हें इस तरह हानि पहुँचे पर अगर ऐसा करने से तुम्हें स्वयं को सुधारने का मार्ग दर्शायें तो समझो कि तुम पर बड़ी कृपा कर रहे हैं जब इसी आलोचना करने से तुम्हारा हृदय टूट जाता है तब समझो कि तुम्हें संकट व खतरे में पहुँचाते हैं। अर्थ यह है कि आलोचना से डरकर या हतोत्साह (उत्साहरहित) व निराश निरुत्साह होकर विरोधियों से अवश्य तुम्हें विमुख नहीं होना चाहिये और हर संकट व खतरे का सामना करने के लिये स्वयं को दृढ़ बनाना चाहिये। उस दिन एक स्थान पर ऐसा लिखा हुआ देखा था— Use Criticism as a stepladder" अर्थात् आलोचना स्वयं के लिये एक बढ़ता हुआ पग (डग) या कदम समझकर काम में लाओ और ऐसे कदमों या सीढ़ी को जीवन की सफलता स्वीकार करो।

इसीलिये मैं चाहता हूँ कि तुम आलोचना के बाद सदैव अपने सुधारने में कदम बढ़ाओ। जितनी अधिक कठोर आलोचना उतना ही स्वयं को अधिक उत्साहित उल्लासित बनाओ जितना अधिक दुख होता है उतना अधिक स्वयं को बचाओ, सुख भविष्य में मिलेगा।

अधिकांश व्यक्ति अस्वस्थ हो रहे हैं क्योंकि वे हर समय यह इच्छा पाल रहे हैं कि जो कुछ वे कर रहे हैं उसकी वाह वाह हो और उससे भी अधिक यह कहा जाय कि उन्होंने कितना अच्छा काम किया है। अत्यल्प व्यक्ति हैं जो आलोचना बुरा माने सहन कर लेते हों उनके मित्रों को इसलिये उनकी दुर्बलताओं (निर्बलताओं) का ज्ञान रहता है इसलिये उन्हें यह साहस नहीं रहता है कि उन्हें सच्च बताया जाये। वे बेचारे विवशता से मौन रहना अधिक पसन्द करते हैं।

मुझे आशा है कि इतना लिखने के बाद अपनी चमड़ी मोटी दृढ़ व कठोर रखने का प्रयास करोगे।

तुम्हारा पिता

अधिक सुशील, शिष्ट, रीतिवान व सभ्य बनने का प्रयास करो।

(25)

प्रिय पुत्र

पचीसवां निर्देशन मेरा तुम्हें यह है कि तुम अधिक सुशील शिष्ट व सभ्य बनने का प्रयास करो जीवन में सफल और सुखी व प्रसन्न होने के लिये ढंग ग्रहण करना बहुत आवश्यक है। ढंग एक बात है और चतुरता दूसरा बात है। वास्तव में जीवन में चतुरता से अधिक ढंग उपयोगी है।

सुशील, शिष्ट व सभ्य मनुष्य हर स्थान पर मान पाता है इसके विपरीत असुशील, अशिष्ट व असभ्य व्यक्ति का हर स्थान पर अपमान होगा और वह ठोकरें खाता रहता हैं। असभ्य व असुशील व अशिष्ट व्यक्ति हर स्थान पर अप्रिय हैं व सबका अप्रसन्न करते रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों से हर कोई दूर न हीं घृणा करते हैं वे घृणा के पात्र होते हैं इसमें कोई सन्देह नहीं।

कभी भी दूसरों को सुखी रखने में सुस्ती न करो, आलस न करो आलसी न बनो, अगर तुम दुखी हो तो ऐसा अकारण नहीं होना चाहिये कि तुम दूसरों को अपने बेढंगपन असुशीलता अशिष्टता, अरीतिपन व असभ्यता से व्यवहार कर दुखी करो सभी से झुककर व मानवता पूर्वक व्यवहार करो।

एक प्रसिद्ध स्त्री का यह कहना है 'Civility costs nothing but buys every thing' अर्थात सुशील सभ्य व शिष्ट विधि से व्यवहार करने में अपनाने में तुम्हारा कुछ भी (खर्चा) व्यय नहीं होता है पर ऐसा करने से तुम सब कुछ बिना कुछ व्यय किये प्राप्त कर सकते हो।

उपरोक्त कहावत बिलकुल सत्य है और थोड़ा विचार करने से आभास कर सकोगे कि जो हम सुशीलता शिष्टता व सभ्यता पूर्वक व रीति अनुसार बनने से प्राप्त कर सकेंगे वह कितना भी धन व्यय करने से प्राप्त कर नहीं सकेंगे किसी भी व्यक्ति का पहले हृदय जीतना चाहिये फिर उनसे अधिक प्राप्त करना बड़ी बात नहीं है।

ऐसा अकारण नहीं समझना चाहिये कि ढग व रीति ग्रहण करने से हम सचाई या निडरता के आड़े आते हैं एसा समझना भूल है। केवल विधि व रीति का अन्तर है केवल कहने और व्यवहार करने की विधि ढग व रीति चाहिये।

विधिवान शब्द और काम सदव प्रभावशाली है, सीधा स्पष्ट सच सामायिक तौर बडी श्रेणी का हो सकता है पर थोडी परिस्थितियो म प्रभावशील हो सकता है।

सीधा साफ स्पष्ट सच तीखा व तेज व कडवा लगता है। और दूसरे के हृदय को बुरा मानने का अवसर देता है। इसी सच को भी विधिवान रीति व विधि से कम तीखा व कडवा कर सकते हैं अच्छी विधि यह है कि दुनिया को अधिक प्रसन्न रखें जिससे प्रत्येक दुनिया म प्रसन्नता से जीवन व्यतीत कर सकें ढग व विधि दुनिया म हम हँसी खुशी जीवन व्यतीत करने म सहायता करती है।

अगर परिस्थितिवश तुम्हें किसी पर आलोचना करनी है तो विधि यह है कि उनके गुणो विशेषताओ व खूबियो का पहले वर्णन करो उसके बाद ही उस पर कुछ आलोचना करना उचित है। आलोचना करने से जो हानि पहुँचती हैं उसकी शिक्षा अच्छी तरह मैं अपने पिछले पत्रो म लिख चुका हू।

किसी बडी आयु वाले व्यक्ति से मिलो तो ढग यह है कि उसे 'बुड्ढा या डोकरा' कह कर न बुलाओ उसे बुजुर्ग कहकर बुलाओ और समझो क्योंकि मनुष्य स्वभावानुसार कोई भी स्वय को बुड्ढा समझने या मानने के लिये तयार नहीं है फिर क्यो तुम उसे बुड्ढा कहकर अप्रसन्न करने का प्रयास करो।

कहीं भी अगर कोई व्यक्ति दृष्टिगोचर आये जो बुद्धि म तुम से कम है तब भी तुम्हे कोई अधिकार नहीं कि तुम उसे कम समझ या मानकर ऐसा जमा व्यवहार करो, बुद्धिमान बनने म कोई बडाबुरी नहीं है, जब बुद्धि

पूरे नमूने ढग रीति व विधि से व्यवहार म लाते है तो तब ही व्यक्ति बुद्धिमान है। लोगो के स्वभाव का अध्ययन पुस्तको के अभ्यास से अधिक कठिन है। अनुभव स देखा गया है कि तरीकेवान बनने से कितनी ही दुखदायक घटनाओ के घटित होने से बचा गया होगा वसे एसे बडप्पन व्यवहार अपनाने से कितनी ही शरारतों व बुराईयो के जाले जल सकते है।

किसी को भी कुछ समझना या कहना हो तो उस पृथक रूप म ले जाकर निजी रूप मे समझाओ ऐसा करने स उस पर भी प्रभाव अच्छा पड़ेगा, और तुम्हारे लिये मान भी रहेगा। शेष सबके सामने या आलोचना करना बुद्धिमना नही है। विशेष अगर किसी की प्रशसा करनी हो तो भल सब के सामने उसका गुणगान व यशोगान करो। क्योंकि किसी की भी सब के सामने प्रशसा अर्थात् गुणगान व यशागान करना ही है उसे बडे स बडा पुरस्कार देना। अत्वस्य के सामने अच्छी लगने वाली सुगंधित बातें करना दूसरा की बातों मे हस्तक्षप न करना वगरह। जीवन की ढगवान रीति व विधि पूवक बातें जीवन के अनुभवा से प्राप्त हाती हैं वास्तव मे कल्याण इसी विधि व ढग म है पर इसी विधि व ढग को स्वय म उत्पन्न करना चाहिये।

एक युवक की बात कहते हैं कि वह पिता के साथ उसक मित्र के यहाँ भोज में गया, जब भोज समाप्त हुआ तब पिता के मित्र ने गलती या भूल से उसकी टोपी उठाकर हाथ म ली, नवयुवक घबरा गया कि अब वह क्या करे अगर वहे वा कहता है कि स्वय उसने टोपी उठाई है तो अवश्य ही दूसरे को लज्जा आयगी कि उसने किया क्या है। अन्त म जाकर उसने नम्रता से कहा कि स्वय (युवक) ने त्रुटि (गलती व भूल) से उसकी टोपी उठाई है इस तरह अपनी भूल मानकर व दिखाकर ढग अपनाना या ग्रहण करने म पूरे किस्से का मजे से निभाकर छोडा निभाकर दिया किया।

प्रयास करके जितना हो सके दूसरो को प्रसन्न रखने की अभिलाषा रखो उनके उद्देश्य व चाहनाएँ, तमनाए व अभिलाषायें ठीक ढग व बुद्धि म पूरी करो। कभी भी उन्हें 'न' करने म डर न ग्रहण करो। कोई भी किसी को हाँ सरलता स कह सकता है। हालांकि सब लोग माननीय ढग स हाँ"

नहीं कह सकते हैं किसी को भी न कहना बिल्कुल कठिन काम है। व्यक्ति अशोभनीय ढंग से 'न" कहने से ध्वस्त हो गये होंगे।

जीवन में अगर कभी भी तुम्हें किसी के लिए, किसी बात के लिए इन्कार करने का कुछ कारण हो तो उसे किसी ढंगवाद रीतिवान तरीके से इन्कार करो ताकि ऐसा न हो कि उनकी शत्रुता, इन्कार कर मोल ले लो।

किसी दूसरे को प्रसन्न रखने में ढंग का बहुत ही आवश्यकता है। को भी तुम प्रसन्न रख नहीं सकोगे अगर तुम्हें ढंग या ऐसा सही व्यवहार रास्ता नहीं है। ऐसा वरदान या आशीर्वाद अगर तुम्हें प्रारम्भ यानि बचपन से न होगा तो बड़ी आयु में तुम्हें अधिक ही तकलीफ व कठिनता मिल जायगी।

कई लोगों ने अपनी सफलता ऐसे ही ढंगवाद तरीके से व्यवहार अपना से प्राप्त की है। और फिर दूसरी तरफ कितनी शुभ भावनाओं और विचारों के होने के बाद भी अपने लिए कितने शत्रु बनाये होंगे, क्योंकि उनका व्यवहार कई समयों पर ढंग से न होगा।

सिर्फ ढंग न होने के कारण उनकी शुभ भावनायें शुभ आकांक्षा इच्छाएँ पानी में मिल जाती हैं।

दूसरों को प्रसन्न रखने में अधिक प्रसन्नता है प्रयास करके प्रयोग करके देखो विश्वास है कि मेरे इस लिखने में कोई अतिशयोक्ति दिखाई नहीं देगी।

किसी से काम लेने में भी ढंग चाहिये आदेश दे देना और आदेश मानकर पालन करना" पूरी दुनिया का नियम है। पर आदेश देने में समझदारी आवश्यक है ताकि जिस पर आदेश चलाया जाता है उस पर अच्छा प्रभाव पड़े, और वह यह आदेश प्रसन्नता से स्वीकार करे और इसी काम को करने में उसे गर्व व प्रसन्नता हो।

एक बहुत ही बुद्धिमान मनुष्य का स्वभाव था जो कभी भी किसी को सीधे रूप से आदेश नहीं देता था, अर्थात् किसी को भी सीधी तरह ऐसा

कहता था कि 'ऐसा करो" या 'वैसा करो' इसके विपरीत उन्हें कहना था कि 'इस तरह कार्य करने से ठीक होगा'। मुझे व्यक्तिगत रूप से जानकारी है कि इस रूप में सम्बन्धित दूसरे व्यक्ति प्रसन्नता से उनके आदेशों का पालन करते थे और सदैव प्रसन्न ही रहते थे और वे उन सौंपे हुए कार्यों को बिल्कुल हुक्म या आदेश समझकर नहीं मानते थे। उन्ही उपरोक्त महोदय का यह भी स्वभाव था जो कभी भी अपने आधीनस्थों को शुष्क सम्बोधन से 'इधर आओ' कहकर नहीं बुलाते थे इसके विपरीत उन्हें उनके नाम से युक्त सम्बोधित कर कहते थे कि समय बचा कर यहाँ आ सकोगे? ऐसा व्यवहार अपनाने से उनका मान व श्रद्धा सम्बन्धित व्यक्तियों में बिल्कुल अधिक बढ़ रहा थी। सब व्यक्ति उसे बहुत ही अधिक प्यार करते थे।

उपरोक्त ढंग ग्रहण करने या अपनाने पर कितना ही लिख चुका हूँ, और अधिक लिखने की आवश्यकता दिखने में नहीं आती है। अन्त में केवल तुम्हें यह कहना है कि यह दुनिया एक नाटयशाला है सबको या हर किसी को उसमें अपनी अपनी भूमिका निर्वाहित करना है। देखना है कि सफलता प्राप्त करने में कौन किस ढंग से अपनी भूमिका (निर्वाहित करके) अभिनीत कर समाप्त करता है।

तुम्हें क्या किसी नाटक में किसी का बढ़िया चरित्र निभाने या निर्वाहित (अभिनीत) करने पर अवश्य ही घृणा उत्पन्न हुई होगी फिर क्यों न हम भी अपने दैनिक जीवन के नाटक में ढंगदार व ढंगवान अधिक सुशील, अधिक सभ्य अधिक शिष्ट, अधिक रीतिवान बनकर (अदा।अभिनीत निर्वाहित) या निभाकर अधिक सुखी व अधिक सफल बनें।

तुम्हारा पिता

किसी भी अच्छे काम का मूल्याकन करने में विलम्ब न करो ।

प्रिय पुत्र (26)

छब्बीसवाँ निर्देशन मेरा तुम्हे यह है कि 'किसी भी अच्छे काम का मूल्याकन करने मे विलम्ब न करो ।'

इस विचित्र विश्व मे देखा गया है कि प्रशसा हमेशा कम होती है कृपा बहुत कम ही मानी जाती है शेष आलोचनाए निन्दा दूसरो के दोषो व कमियो को खुले रूप मे अधिकतर प्रकट किया जाता है किसी भी अच्छे काम का जितना पूर्णतया मूल्याकन कर आदर कर प्रशसा होनी चाहिये उतनी होती नही ।

कोई भी मनुष्य जब कोई किसी पर कृपा करता है तब हम अपने हृदय मे अधिक ही प्रसन्न होते हैं पर उसका धन्यवाद मानना अपनी रुचि दिखाना यह गुण तो हम जसे भूल गये हैं सीखे ही नही हैं । यह पत्र दो मिनिटो के लिए अलग एक ओर रख केवल थोडा याद करके देखो कि किसी का भी तुमने दो शब्द प्रशसा के कहे थे, और उसका उस दूसरे पर कसा प्रभाव पडा था ? निश्चित रूप से उन पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा होगा, और उसके हृदय मे प्रसन्नता उत्पन्न हुई होगी । इसीसे प्रकट है कि किसी को भी दो शब्द प्रशसा के कहना ही उस पर कितना अच्छा प्रभाव डालता है ।

अग्रेजी मे एक कहावत हैं कि— True Praise roots and spreads" अर्थात् सच्ची प्रशसा की जड फलती है ।' दूसरी कहावत इस रीत है— "*We should not be niggardly in our praise*" अर्थात् ' हम किसी की भी प्रशसा करने मे कजूसी नही करनी चाहिये ।

देखा गया है कि हम मे से कितने ही किसी की भी सच्चे हृदय से प्रशसा करने मे सचमुच कजूस हैं दूसरो की प्रशसा उनके मुख से जसे निकलती ही नही, मालूम नही क्यो ?

हर एक के जीवन के फुटपाथ में दूसरों के प्रशंसा का काफी स्थान रिक्त है कई अवसर हमें दैनिक जीवन में दूसरों की प्रशंसा करने के मिलते है पर हम इन अवसरों का भी लाभ नहीं लेते हैं घर में बाजार में, क्रय करते समय, कार्यालयों में, बसों में, अर्थ कि हर स्थान पर हम दो शब्द अपनी सच्ची रुचि व चाहना के और प्रशंसा के बोल सकते हैं दुख है जो यह बात कईयों के विचारों में आती ही नहीं हैं, इसके विपरीत हर स्थान पर झगड़े, और झुनझुनाहट व लड़ाइयाँ व शीत लड़ाइयाँ लगी हुई है।

अर्थ यह है कि चरखा ही उलटा चल रहा है ऐसा करने से हम स्वयं को ही क्लेश पहुँचाते रहते हैं और दूसरों को भी दुखी करते रहते हैं। कितना अन्तर ! प्रथम रूप लेने में हम स्वयं को भी प्रसन्न करते हैं और दूसरों को भी प्रसन्न करते है केवल समझने का अंतर है।

उदाहरणार्थ जब किसी बस ट्राम या रेल में चढ़ते हो टिकिट कण्डक्टर तुम्हें टिकिट देता है तब तुम्हें उसे धन्यवाद' कहना चाहिए। इसी रूप में यदि कोई तुम्हारे लिए दरवाजा खोलता है या तुम्हें बैठने के लिए स्थान देता है तो तुम्हारा कर्तव्य हो जाता है उसे धन्यवाद या ऐसा कुछ कह कर उनकी कृपा मानना। कभी भी यदि क्रय करने के लिए जाओ तो जो विक्रेता तुम्हें माल दिखाता है उसे भी दो शब्द धन्यवाद के अवश्य कहो, क्योंकि उस विचारे ने भी तुम्हें माल चुनने में सहायता की होगी।

तुम्हारे कार्यालय में भी यदि तुम्हारे आधीनस्थ कोई काम अच्छे रूप में पूरे करते है तो तुम्हारे लिये अति आवश्यक है कि इस काम में तुम अपनी रुचि दिखाओ। दो शब्द प्रशंसा के अवश्य कहो, ऐसा करने से उस दूसरे काम करने वाले का मनोबल बढ़ेगा और पहले से भी अधिक काम करने का प्रयास करेंगे। और हर समय यह ही समझते रहेंगे कि उनके कार्यों का सम्मान और उनका मूल्यांकन किया जा रहा है।

एक बुद्धिमान व्यक्ति का कहना इस रीत है 'The way to develop the best that is in a man is by appreciation and encouragement' अर्थात 'किसी मनुष्य को यदि उसमें कुछ गुणग्राहकता है और उसको बढ़ाना हो तो उसकी प्रशंसा करो और उत्साह दिलाओ।

धन स्वास्थ्य चरित्र को बचाकर स्वय सादा जीवन व उच्च विचार पर अमल कर जीवन उज्जवल बनाओ, पूरे शिक्षा-सागर का निचोड

(27)

प्रिय पुत्र

सताइसवा व अतिम निर्देशन मेरा तुम्हारे लिय यह है कि धन की रक्षा करना जीवन के लिये आवश्यक है, स्वास्थ्य आपका अच्छा तब ही बना रह सकेगा अगर आपका धन उचित रूप स स्वास्थ्य पर व्यय होगा अगर एक ओर आपका धन भोग विलास म व्यय होता है तो न तो धन की रक्षा हो सकती है और न ही स्वास्थ्य की हो सकेगी। चरित्र का महत्व तो जीवन म धन स्वास्थ्य से भी अधिक माना जाता है इस पर अधिक प्रकाश आगे डालू गा।

सादा रहकर उच्च विचार रखना Simple living and higher thinking वास्तव मे सादगी की अपनी ही महिमा है साधारण बनना कठिन है हर व्यक्ति असाधारण बनना चाहता है और प्रत्येक व्यक्ति भी असाधारण पर ध्यान देता है पर मेरी अपनी राय और विचार है कि जो मजा आन द मस्ती साधारण बनने मे है वह असाधारण बनने मे नही है।

असाधारण बनना असम्भव हो, एसी बात नहीं है कठिन कुछ भी नही अगर कुछ कठिन काम हो सकता है तो वह है सही मायने म मनुष्य बनकर व्यवहार करना। असाधारण बनने के लिये भी प्रयास करोगे तो बन जाओग पर सुख की प्राप्ति इसम भी होगी इसम स देह है।

जीवन मजेदार व आनन्दमय व्यतीत हो इसके लिय साधारण ज्ञान पर्याप्त है? ज्ञान की कोई सीमा नही है असाधारण ज्ञान तो हानि पहुचा सकता है। एक अंग्रेजी कहावतनुसार A little knowledge is a dangerous thing

अर्थात नीम हकीम खतरे जान नीम मुल्ला खतरे ईमान' इसलिये व्यापक ज्ञान होना आवश्यक है एसे व्यक्ति भी होते जो जानकार होते हुए भी असफल है उनमें कुछ त्रुटियां हो सकती है।

मेरा 'ज्ञान' से अर्थ कुछ दूसरा भी है दुर्ज्ञान। दुर्ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी जीवन में कार्य प्रयोग नहीं है जो लोगों ने समझा भी नहीं है सोचा भी नहीं है। अगर समझा भी है तो उल्टा ही कभी-कभी ज्ञान जब दुर्ज्ञान का रूप ले लेता है सीमा से बाहर हो जाता है और यह सीमा से बाहर की जानकारी कभी-कभी अधिक हानि ही पहुंचाता है अगर मैं यह कहूं कि 'Sometimes more knowledge is a dangerous thing' यह मेरे अपने विचार हैं जो मैं लिख रहा हूं यह आश्चर्यजनक कहावत शायद किसी ने नहीं सुनी होगी पर एसे उदाहरण है कि व्यक्तियों ने उपन्यासों फिल्मों फिल्मी पत्रिकाओं व एसे अश्लील साहित्य अपराध साहित्य सत्य कथा मनोहर कहानियों से Systematically knowledge कुव्यवस्थित ज्ञान प्राप्त कर अपना जीवन ध्वस्त किया है (वास्तव में पाठक चाहे तो गुण ग्रहण कर अच्छे Sense विचार में लेकर लाभान्वित हो सकते है धोखे से बच सकते हैं सावधान रह सकते है अर्थ यह कि सावधानी की शिक्षा ले सकते है। पर अक्सर ऐसा होता नहीं है सावधानी की शिक्षा न लेकर इसके विपरीत ऐसा आचरण कर कुछ व्यक्ति अपराधी बनकर जेलों में सड रहे है एसा साहित्य निसंदेह पाठकों का सर्वनाश कर देता ऐसे दुर्ज्ञान की पराकाष्ठा पर पहुँचकर पाठकों ने अपराधी प्रेरणा से स्वयं का और दूसरों का जीवन नष्ट किया है।

अब स्वास्थ्य, धन, व चरित्र पर प्रकाश डालता हूं। धन का महत्व जीवन में, समाज में है पर धन अर्जित करने मे अगर तुम्हें स्वास्थ्य खोना पड़े तो यह सौदा महंगा है मैं ऐसी राय न दूंगा।

ईश्वर की हस्ती को मानो ईमानदार बनो, अच्छे आज्ञा पालक बनो, अपने कार्य के प्रति, राष्ट्र के प्रति निष्ठावान बनो, बड़ो का आदर करो—मां बाप शिक्षक की आज्ञा का पालन करो उनका आदर करो, बहादुर बनो मृदुल भाषी बन सबका आदर करो, नम्रता से बात करो, झूठ न बोलो, स्वयं में श्रेष्ठता उत्पन्न करो, प्रसन्नचित्त बनो और ऐसे व्यक्तियों से मित्रता कर

उनके सगत म बठो, दोस्ती निभाना भी सीखो, मितव्ययी बना, अच्छे सत्कारी बना। स्वस्थ रहने का प्रयास करो।

याद रखो, जीवन के लिये धन अति आवश्यक अग है पर इस ठीक साधनो से कमाकर उसका सही उपयोग करो स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखो धन हाथ का मल है स्वास्थ्य खोकर धन वृद्धि करन म काइ बुद्धिमता व औचित्य नही है। पर चरित्र तो धन और स्वास्थ्य म भी अधिक महत्व रखता है कहावत प्रसिद्ध है। If wealth is lost nothing is lost If health is lost, some thing is lost If character is lost everything is lost अर्थात धन का खो जाना कुछ भी इतना चिन्ताजनक नही है पर स्वास्थ्य क खो जाने पर थोडा चिन्तित होना पडेगा पर अगर चरित्र खो दिया तो समझ लो कि सब कुछ खो चुके हो। स्वस्थ रहने स धन तो कमा सकत हो पर जब और जहा चरित्र खो जाता है वहा सब कुछ चला जाता है अर्थात चरित्र धन व स्वास्थ्य से कही अधिक महत्व रखता है।

चरित्र वह धन है जिसके पास है वह दरिद्र हो नही सकता है स्वास्थ्य क खो जान स व्यक्ति काम करन के योग्य नही रह जाता है पर अगर धनवान् स्वस्थ भी है पर उसमे अच्छे चरित्र का अभाव है तो वह अधूरा धनवान है चरित्रवान व अच्छे आचरण रखने वाला हर किसी के घर आ जा सकता है हर स्थान पर उसका स्वागत होता है स्वास्थ्य ठीक न होना भी व्यक्ति के लिय तो बोझ है ही पर राष्ट्र के लिये भी बोझ है ऐसा व्यक्ति न तो जीवन का आनन्द ले सकता है ऐसा धनवान व अस्वस्थ व्यक्ति जिसके पास वैभव है पर चरित्र के बिना सब बेकार है स्वास्थ्य व चरित्र क बिना धनवान् व्यक्ति दरिद्र है।

चरित्र न समाप्त होने वाला धन है इसे न कोई चोर चुराकर ले जा सकता है चरित्र व्यक्ति का निर्माण करता है ऐसे भी कई भाग्यशाली धनवान् है जो सम्पूर्णतया स्वस्थ व अच्छे आचरण वाले है एस लोग बिल्कुल कम है।

चरित्र वह कोषागार है जो कभी भी समाप्त होकर नही घटता। अगर

ऐसे कोषागार से एक पैसा भी व्यर्थ व्यय हो जाये तो पूरा कोषागार शून्य हो सकता है। अर्थात् एक बार भी थोड़ा सा चरित्र पर साधारण दाग या धब्बा लग जाये तो यह कलंक आसानी से नहीं धुलता, और कभी कभी तो पीढ़ी दर पीढ़ी इसका प्रभाव रहता है। प्रायश्चित करने के बाद भी मुक्ति वास्तव में नहीं है यह सिद्ध करता है कि धन स्वास्थ्य से कहीं अधिक चरित्र का महत्व है।

चरित्र बल वह बल है जिसके आगे दूसरे सारे बल कुछ भी नहीं है धन व स्वास्थ्य का बल चरित्र बल के आगे नत-मस्तक होता है। चरित्र बल धन बल व स्वास्थ्य बल से कहीं अधिक प्रभावशाली व प्रभावशील अस्त्र है ऐसा पूर्णतया माना जाता है।

अब समझ रहा हू कि काफी लिख चुका हू इच्छा नहीं है कि कुछ अधिक लिखकर अकारण ही तुम्हे थकाऊँ यह पत्र मेरे लिखे हुये पत्रों के सिलसिले की अन्तिम कड़ी व अन्तिम निर्देशन है, समझता हू कि मनुष्य को सुख व सफलता प्राप्त करने के लिये जो मुख्य बातें आवश्यक है उनकी मैंने तुम्हें अच्छी तरह शिक्षा दी है और कोई दूसरा अवसर मिला और तुम्हारी इच्छा हुई तो तुम्हे दूसरे विषयों पर अधिक समझाऊंगा मेरे सब पत्र पढ़कर तुम शायद समझोगे कि तुम्हारा काम पूरा हो गया पर ऐसा समझना भूल होगी वास्तव में तुम्हारा काम प्रारम्भ ही इसके बाद समझना चाहिये।

मेरी तुम्हें यह सलाह है कि तुम यह सब पत्र एक बार फिर से पढो। यह पत्र केवल एक बार पढ़ने से सम्भव है कि शायद कुछ आवश्यक वास्तविकताए नजर अन्दाज भी कर गये हों पर विश्वास है कि दूसरी बार पढने से तुम्हें पहले से कही अधिक कुछ अधिक बातें ध्यान में आयेंगी।

मुझे आश्चर्य नहीं होगा यदि तुम किन पत्रों में मुझ से सहमत न होकर विरोध में रहो, यह स्वयं मुझे बतायेगा और दर्शायेगा कि तुमने इन पत्रों का अच्छा अध्ययन किया है और एक एक बात को अच्छी तरह नापने तोलने का प्रयास किया है। इन पत्रों में मैंने इन बातों की चर्चा की है। जो साधारणतया अध्ययन व अभ्यास नहीं करते हैं यदि तुमने इस आत्मविश्वास या

भ्रा म प्रबाध व मतभेदा का अभ्यास किया और उसका सच्चा अर्थ समझा तो विश्वास है कि इस विश्व में केवल हाथ टटोलते नही रह गे।

पत्रो को केवल पढने से कुछ भी परिणाम या वापसी मिलने वाली नही है पत्रा को पढकर उन निर्देशा को पूरी तरह प्रयोग (अमल) करने म ही सच्चा लाभ है मेरी हार्दिक इच्छा है कि आज से लेकर मेरी लिखी हुई कुछ वास्तविकताए तुम अपने दैनिक जीवन म आजमाओ फिर देखो तो तुम्हारे जीवन मे कुछ परिवतन आता है या नही ' पर शत यह है कि इसम कोई आना उलघन न हो दी हुई मेरी शिक्षाओ का।

दूसरी बात जो तुम्हे ध्यान म रखनी चाहिये वह है कि अगर तुम्हें अधिक सीखना और शिक्षा ग्रहण करने की चाहना है तो सदव स्वय से अधिक किसी चतुर व कुशल व्यक्ति का सग करो। जिससे तुम काफी शिक्षा ग्रहण कर सकोग उदाहरणाथ किसी को अगर टेनिस या दूसरा कोई खेल सीखना है तो उस अवश्य ही स्वय से अधिक खिलाडी से खेल सीखना पडेगा। ऐसा कोई चतुर व्यक्ति जो जगप्रसिद्ध हो हर स्थान मान प्राप्त किया हुआ हो तो उसे जाँचने का प्रयास करो देखो तो उसमे कितने गुण विशेषताएँ व खूबिया हैं जिसके कारण उसने मान प्राप्त किया है और आज जनता म प्यारा बना है इसी तरह अभ्यास करने से तुम बहुत कुछ शिक्षा प्राप्त कर सकते हो और जो भी तुम्हारे सम्पक मे आते हैं उन सबसे कुछ न कुछ सीखने का प्रयास करो बुद्धिमान इसी तरह ही सीखते और शिक्षा ग्रहण करते रहते हैं एमरसन न इस तरह कहा है कि— Every man I meet is my superior in some way In that I learn of him" यानि जो आदमी मुझे मिलता है वह मुझसे किसी न किसी रूप में बडा ही है और मैं उससे शिक्षा ग्रहण करता हू।

हमेशा उच्च विचार रखो जो ख्याल या विचार तुम अपने हृदय पर लाओगे उसका प्रभाव तुम्हारे जीवन पर पडगा अगर सफलता चाहते हो तो असफलता के विचार हृदय में न लाओ एक दूसरे को सत्य समझने का प्रयास करो। सदव किसी से कुछ उलझन या व्याकुलता या घबराहट पदा हो जाये तो दूसरे की अवस्था में स्वय को डाल लो ऐसा करने स शीघ्र ही दूसरे की स्थिति

और कठिनाइयों तकलीफों का आभास कर सकेंगे और ऐसा आभास करने के बाद फिर झगड़ा ही कैसा और किस लिये और क्या ? कभी भी किसे अपना पक्ष सुनने के बिना दोषी न मानना बताना, बताना यह याद कर लो कि हर किसी बात का दो पहलू होते हैं न्याय यही मांगता है उसकी पुकार है तकाजा है कि बचाव पक्ष को अवश्य सुनो सुनना चाहिये भी, इसके बाद ही अपना मत, विचार या निर्णय सम्मिलित करना चाहिये। एक पक्ष को सुन-कर निर्णय करने से कितनी अनियमितताएँ व अन्याय हुए हैं।

कभी भी अपनी भूल स्वीकार करने मे देर न करो शर्म न करो, अपनी भूल स्वीकार करना यह दर्शाता है कि तुम कल से आज अधिक सयाने हो बुद्धिमान हो अपनी गलती मानना स्वयं को अधिक शक्ति देना है, शर्म से गलती स्वीकार न करना है ऊपर से दूसरी गलती करना।

स्वयं पर निर्भर रहना सीखो, आत्म निर्भर बनो दूसरों पर निर्भर रहना और दूसरों की मदद या सहायता प्राप्त करने के लिए लालसा कर आस लगाकर बैठना उचित नहीं हैं जो तुम कर सकते हो वह तुम करो अपनी आवश्यकता इतनी ही रखो ताकि कभी भी तुम्हें दूसरे किसी पर निर्भर रहना न पड़े। इसी में ही है सच्चे सुख का रहस्य।

स्वयं पर नियन्त्रण करना अत्यावश्यक है जो स्वयं पर नियन्त्रण नहीं रख सकता उसे कई विकारों का कारण बनना पड़ेगा, सभी विकारों और कठिनाइयों व तकलीफों का उपचार है स्वयं पर नियन्त्रण करना।

पक्षपात व स्वार्थपन भी अनेक खराबियों का मूल कारण है, बुराइयों की जड़ है पक्षपात। अच्छा तो यह है कि बाहर निकल कर सभी को प्यार और सहानुभूति दिखलायें स्वार्थी बनकर स्वयं के लिए काम करना है आफत पैदा करना तुम्हारे स्वार्थी बन जाने से दूसरे भी तुम्हारे साथ आपसी में स्वार्थी बनने का प्रयास करेंगे स्वार्थी बनने से तुम दुनिया के कई मौज-मस्तियाँ आनन्द खुशियों से वंचित रह जाओगे स्वयं को यदि दुखी करना हो और दूसरों को भी दुखी रखना हो तो आसान से आसान रास्ता यह है कि स्वार्थी बनें।

कितने ही मनुष्य ऐसा करने से स्वयं को अपने आप दुखी कर रहे हैं। तुमसे कुछ भूल न हो जाये इसके लिए तुम्हें सावधान रहना चाहिये पर आव-श्यकता से अधिक भूल हो जाने पर अधिक डरना ठीक नहीं है इसलिए यह

याद कर लो कि जो आदमी गलती नहीं करता है यह मान लो, समझ लो, वह कुछ भी नहीं करता है। गलतियाँ सिर्फ उन लोगों से नहीं होती हैं जो कुछ भी न कर चुप शांत मौन होकर बैठे हैं। काम करने वालों से कभी-कभी गलती होती रहती है। अर्थ यह है कि जीवन से डर या भय स्वयं बिल्कुल निकाल दो।

अन्त में यह ही आस है कि मेरे सभी पत्र हर तरह उपयोगी प्रमाणित (सिद्ध) हों और तुम्हारे जीवन में सुख और सफलता प्राप्त करने में ये शिक्षा का सागर मार्ग दर्शक बनकर तुम्हें सुमार्ग दिखाये।

तुम्हारा पिता

याद रखने जैसी बातें

दरिद्र वास्तव में वह नहीं है जिसके पास धन नहीं है पर दरिद्र वास्तव में वह है जिसे सदैव धन की आवश्यकता बनी रहती है।

मुस्कराने वाले सबको अच्छे लगते हैं। स्थान-स्थान पर उनका स्वागत होता है। मुस्कराहट एक ईश्वरीय वरदान है जो केवल मनुष्यों को ईश्वरीय देन के रूप में प्राप्त है।

चिन्ता मनुष्य के हृदय व मस्तिष्क की स्वतन्त्र शक्ति को नष्ट कर देती है।

सफलता प्राप्त करना आसान व साधारण बात नहीं है हर सफलता परिश्रम से मिलती है।

यदि अपना जीवन सुखी व सफल बनाना चाहते हो तो भय व चिन्ता से स्वयं को सदैव मुक्त करना होगा।

यदि अपना जीवन सुखी व सफल बनाना चाहते हो तो तुम्हें भी अच्छी पुस्तकों की सहायता लेनी पड़ेगी पुस्तकों द्वारा शिक्षा प्राप्त करने का सबसे सस्ता और सरल सफल साधन इसके अतिरिक्त नहीं।

हृदय की सकीर्णता दूर करने के लिए शिक्षा-सागर पढ़ना अति आवश्यक है ऐसे सागर की बूँदें (शिक्षाएं) मनुष्य को सचमुच मनुष्य बना देंगी ऐसी कामना के साथ। प्रतापदास मयरमल म पनानी